रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का हुलिया मुबारक
और
आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सुन्नतें

इसमें हुज़ूर (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) के खाने, पीने, सोने, जागने कपड़ा पहनने, कंघा करने, तेल लगाने, नाख़ून काटने, इस्तिंजा करने, जूता पहनने, अंगूठी पहनने, मस्जिद और घर में दाख़िल होने, बाज़ार जाने, गुफ़्तगू करने, वुज़ू, गुस्ल, अज़ान, नमाज़, दुआ, रमज़ान, ईदैन, सफ़र, सलाम, निकाह, मय्यित और उससे मुतअ़ल्लिक़ सुन्नतों से लेकर आप (सल्ल०) के अख़लाक़ व आ़दात का तफ़्सील से ज़िक्र है।

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
(सदर- जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

प्रकाशक
जमअ़ीयत पयामे अम्न
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ-20 (यू०पी०) इण्डिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम-	रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें
लेखक-	मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
संस्करण-	छठा संस्करण
पुस्तक संख्या	3000
वर्ष	2018
मूल्य	80 रु०
प्रकाशक-	जमअ़ीयत पयामे अम्न, नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ-२० (यू०पी०) इण्डिया
Book Name	Rasoolullah ka Huliya Mubarak Aur Aap (Saw) ki Sunnatey
Writer	Mufti Mohd-Sarwar Farooqui Nadwi
S. No.	3000
Publisher.	Jamiat Payam-e-Amn, Nadwa Road, Daliganj, Lucknow, U.P. (INDIA)
Mobile–	0091– 9919042879, 9984490150
E–Mail–	jpa_lko@yahoo.com, ataullah2012@gmail.com

मिलने के पते

1. जामिया दारे अरक़म मुहम्मदपुर गौंती, फ़तेहपुर
2. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मुहम्मद अ़ली बिल्डिंग भिंडी बाज़ार, मुम्बई. 400003
3. मुहम्मद असलम काज़मी, मुहल्ला दीवान निकट तय्यिब मस्जिद देवबन्द- 9760849186
4. मकतबः अल् फ़ुरक़ान, नज़ीराबाद (लखनऊ)
5. आसिफ़ किताब घर, मीना मार्केट जामा मस्जिद रोड, शाह मारूफ़ गोरखपुर, यू०पी०-9415857727
6. सुब्हानिया बुक डिपो, नया मुहल्ला जबलपुर मध्य प्रदेश- 9424708020

विषय सूची

विषय — पृष्ठ सं०

सन्देश.......... 5
प्रस्तावना.......... 6

भाग एक
हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का हुलिया मुबारक

हुज़ूर (सल्ल०) का हुलिया-मुबारक.......... 8
आप (सल्ल०) की मुहरे नुबूवत.......... 11
आप (सल्ल०) का लिबास.......... 11
आप (सल्ल०) का मोज़ः.......... 12
आप (सल्ल०) की चादर.......... 12
आप (सल्ल०) का बिस्तर.......... 13
आप (सल्ल०) की अंगूठी.......... 13
आप (सल्ल०) के खुशबू का इस्तिमाल.......... 14
आप (सल्ल०) की सफ़ाई.......... 15
आप (सल्ल०) का मज़ाक़.......... 16
आप (सल्ल०) के अख़लाक़.......... 17

भाग दो
हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा.......... 22
आप (सल्ल०) के खाना खाने से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 22
आप (सल्ल०) के खाना खाने का तरीक़ा और नसीहतें.......... 25
आप (सल्ल०) के पीने से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 30
आप (सल्ल०) के पानी पीने का तरीक़ा और नसीहतें.......... 31
आप (सल्ल०) के कपड़ा पहनने से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 33
आप (सल्ल०) के लिबास से सम्बन्धित तरीक़ा 36
आप (सल्ल०) के अमामा बांधने से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 38
आप (सल्ल०) के अमामा बांधने का तरीक़ा.......... 38
आप (सल्ल०) के जूता पहनने से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 39
आप (सल्ल०) का जूता पहनने का तरीक़ा.......... 40
आप (सल्ल०) का अँगूठी पहनने का तरीक़ा.......... 40
आप (सल्ल०) के ख़ुशबू लगानेका तरीक़ा.......... 41

आप (सल्ल०) के सोने और जागने से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 41
आप (सल्ल०) के सोने और जागने का तरीक़ा और नसीह़तें.......... 41
आप (सल्ल०) का कंघा और तेल लगाने से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 45
आप (सल्ल०) के कंघा और तेल लगाने का तरीक़ा.......... 46
आप (सल्ल०) के नाख़ून और दाढ़ी कटवाने से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 47
आप (सल्ल०) के नाख़ून काटने का तरीक़ा.......... 48
आप (सल्ल०) के सफ़र से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 49
आप (सल्ल०) के सफ़र करने का तरीक़ा.......... 49
आप (सल्ल०) के क़ज़ाए ह़ाजत (इस्तिन्जा) से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 51
आप (सल्ल०) के बैतुल ख़ला जाने का तरीक़ा और हुक्म.......... 53
गुस्ल करने का सुन्नत तरीक़ा.......... 55
आप (सल्ल०) के चलने का तरीक़ा.......... 56
आप (सल्ल०) के सलाम करने का तरीक़ा.......... 57
आप (सल्ल०) के मुआ़नका व मुसाफ़ह करने का तरीक़ा 58
आप (सल्ल०) के गुफ़्तुगू से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 59
आप (सल्ल०) के गुफ़्तगू करने का तरीक़ा.......... 61
आप (सल्ल०) का बच्चों के साथ मुहब्बत करने से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 62
आप (सल्ल०) का बच्चों से प्यार करने का तरीक़ा.......... 63
आप (सल्ल०) की मजलिस से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 64
आप (सल्ल०) की मजलिस का तरीक़ा.......... 65
आप (सल्ल०) का किसी के घर इजाज़त लेकर जाने से सम्बन्धित ह़दीसें और नसीह़तें 66
आप (सल्ल०) का घर से जाने का तरीक़ा.......... 68
आप (सल्ल०) का मरीज़ की अ़यादत करने से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 69
आप (सल्ल०) का मरीज़ की अ़यादत करने का तरीक़ा.......... 71
आप (सल्ल०) का लोगों से मुह़ब्बत करने से सम्बन्धित ह़दीसें.......... 71
आप (सल्ल०) का लोगों से मुह़ब्बत करने का तरीक़ा.......... 74

भाग तीन
हज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के ज़िन्दग़ी गुज़ारने के शरअ़ी आदाब क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में

ज़िन्दगी गुज़ारने के शरअ़ी आदाब क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में.......... 77
खाना खाने के शरअ़ी आदाब.......... 77
पानी पीने के शरअ़ी आदाब.......... 79
मेहमानी के शरअ़ी आदाब.......... 80
जागने के शरअ़ी आदाब.......... 82
सोने के शरअ़ी आदाब.......... 83
छींकने और जमाई के शरअ़ी आदाब.......... 84

विषय पृष्ठ सं०

लिबास पहनने के शरअ़ी आदाब	85
कुर्ता पहनने के शरअ़ी आदाब	86
पायजामा पहनने के शरअ़ी आदाब	86
जूता पहनने के शरअ़ी आदाब	86
बालों के शरअ़ी आदाब	87
नाख़ून काटने के शरअ़ी आदाब	87
अँगूठी पहनने के शरअ़ी आदाब	88
मस्जिद में दाख़िल होने के शरअ़ी आदाब	88
बैतुलख़ला (लैट्रीन) जाने के शरअ़ी आदाब	89
पेशाब करने के शरअ़ी आदाब	90
घर में जाने और बाहर निकलने के शरअ़ी आदाब	91
बाज़ार जाने के शरअ़ी आदाब	91
दाढ़ी, मूँछ और बालों के शरअ़ी आदाब	92
बच्चा पैदा होने के बाद के शरअ़ी आदाब	92
क़ब्रस्तान जाने के शरअ़ी आदाब	93
मुर्दे को नहलाने के शरअ़ी आदाब	93
कफ़न और कफ़नाने के शरअ़ी आदाब	94
औ़रत मय्यत के पाँच कपड़े	94
दफ़नाने के शरअ़ी आदाब	95
मौत और उसके बाद के शरअ़ी आदाब	95
नहाने के शरअ़ी आदाब	97
वुज़ू और उसके बाद के शरअ़ी आदाब	97
मिस्वाक के शरअ़ी आदाब	98
अज़ान और मुअ़ज़्ज़िन के शरअ़ी आदाब	99
नमाज़ में क़ियाम के शरअ़ी आदाब	100
औ़रतों की नमाज़	101
नमाज़ में रुकूअ़ के शरअ़ी आदाब	101
सज्दे के शरअ़ी आदाब	102
औ़रतों के लिए	102
कअ़दे के शरअ़ी आदाब	102
नमाज़ में वह आदाब जो सबके लिए यकसां हैं	103
दुआ़ में हाथ उठाने के शरअ़ी आदाब	104
नमाज़े जुमा के शरअ़ी आदाब	104
रमज़ान के शरअ़ी आदाब	105
ईदुल फ़ित्र के शरअ़ी आदाब	106
ईदुल अज़्हा के शरअ़ी आदाब	107
ईद के मसायल	107

विषय पृष्ठ सं०

ईद की नमाज़ का तरीक़ा	108
सफ़र के शरअ़ी आदाब	108
एक आ़म ग़लती	110
सलाम के शरअ़ी आदाब	111
निकाह के शरअ़ी आदाब	112
आप (सल्ल०) की कुछ प्यारी बातें	113

भाग चार
सुन्नत के ख़िलाफ़ आ़माल का ज़िक्र

मस्जिद में सुन्नत के ख़िलाफ़ दाख़िल होना	120
वुज़ू में ख़िलाफ़े सुन्नत	120
क़ियाम में ख़िलाफ़े सुन्नत	120
रुकूअ़ में ख़िलाफ़े सुन्नत	121
क़ौमा में ख़िलाफ़े सुन्नत	121
सज्दः में ख़िलाफ़े सुन्नत	121
जल्से में ख़िलाफ़े सुन्नत	121
क़ाइदा अख़ीरा में ख़िलाफ़े सुन्नत	122
दुआ़ में ख़िलाफ़े सुन्नत	122
नमाज़े जुमा में ख़िलाफ़े सुन्नत	122
ईदुल फ़ित्र में ख़िलाफ़े सुन्नत	123
घर में दाख़िल होने में ख़िलाफ़े सुन्नत	123
खाना खाने में ख़िलाफ़े सुन्नत	123
पानी पीने में ख़िलाफ़े सुन्नत	124
कपड़ा पहनने में ख़िलाफ़े सुन्नत	124
लिबास में ख़िलाफ़े सुन्नत	125
हजामत में ख़िलाफ़े सुन्नत	125
पाख़ाना करने में ख़िलाफ़े सुन्नत	125
बाज़ार में ख़िलाफ़े सुन्नत	126
क़ब्रस्तान जाने में ख़िलाफ़े सुन्नत	126
कफ़न और कफ़नाने में ख़िलाफ़े सुन्नत	126
निकाह़ में ख़िलाफ़े सुन्नत	127
पेशाब में ख़िलाफ़े सुन्नत	127

भाग पाँच
मख़सूस दुआ़एँ

सोने और सोकर उठने, बैतुल ख़ला जाने और निकलने, घर में दाख़िल होने आदि से मुताल्लिक़ मख़सूस दुआ़एँ	129-143

सन्देश
हज़रत मौलाना अ़ब्दुल क़ादिर नदवी मद्‌दज़िल्लहुल आ़ली के क़लम से

उस्ताद ह़दीस, दारुल उ़लूम नदवतुल उ़लमा, लखनऊ यू० पी०

आक़ाए नामदार हज़रत मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि (सल्ल०) को अल्लाह तआ़ला ने तमाम इंसानों की ज़िन्दगी के हर शोबे (क्षेत्र) में रहबरी व रहनुमाई के लिए मबऊस फ़रमाया और आप (सल्ल०) की कामिल पैरवी के साथ, आप (सल्ल०) की तअ़ज़ीम व तौक़ीर और मुह़ब्बत को ईमान की शर्त बताया और इस मुह़ब्बत को जिसका तअ़ल्लुक़ दिल से है आख़िरत में तरक्क़ी का सबब बनाया और यह इर्शाद फरमाया कि आदमी का हश्र उसी के साथ होगा जिससे वह मुह़ब्बत करता होगा।

हुज़ूर (सल्ल०) से मुह़ब्बत पर तफ़्सीर व ह़दीस और सलफ़े सालिह़ीन के बेशुमार क़ौल मिलते हैं जिस पर बहुत से लोगों ने क़लम उठाया है, उन में से हमारे एक अज़ीज़ मौलवी हिफ़्ज़ुरह़मान गुजराती ने भी इस पर अच्छा रिसाला तैयार किया है, जो क़ाबिले तारीफ़ और फायदह उठाने के लायक़ है।

इसी प्रकार हिन्दी ज़बान जानने वालों की ज़रुरत को हमारे अज़ीज मुह़तरम **'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी फतेहपूरी'** ने पूरा किया जो मुस्तनद किताबों से हुज़ूर (सल्ल०) की ज़िन्दगी के क़ीमती मोतियों को चुन कर पेश किया है। जिसमें ख़ास तौर से हुज़ूर (सल्ल०) का हुलिया-मुबारक और आप (सल्ल०) के खाने,पीने,सोने,जागने कपड़ा पहननें, गोया ज़िन्दगी में हर वक्त काम आने वाले आदाब का ज़िक्र किया है। जो एक क़ाबिले क़द्र इज़ाफा और रसूल (सल्ल०) के चाहने वालों के लिए क़ीमती तोहफ़ा है।

अल्लाह तआ़ला अज़ीज़े गिरामी की इस कोशिश को क़बूल फरमाए और उनके लिए इस खिदमत को मज़ीद तरक़्क़ी का सबब बनाये। आमीन!

७ रजबुल मुरज्जब १४१८ हि०

अब्दुल क़ादिर नदवी मज़ाहिरी पटनी
उस्ताद दारुल उलूम नदवतुल उलमा लखन ऊ

प्रस्तावना

क़ुर्आन मजीद में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अगर किसी को अल्लाह तआ़ला से मुह़ब्बत का दावा हो तो उसे चाहिये कि हज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के इत्तिबअ़ की कसौटी पर आज़मा कर देख ले, मालूम हो जायेगा। जो शख्स अपने दावा में जितना सच्चा होगा उतना ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की इत्तिबा का ज़्यादा एहतिमाम करने वाला होगा और जितना अपने दावा में कमज़ोर होगा उतना ही आप (सल्ल०) की इताअ़त में सुस्ती और कमज़ोरी करेगा।

'तबरानी' की एक रिवायत है, जिसमें कहा गया है कि "तुममें से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसको उस की, अपनी ज़ात से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं।"

आप (सल्ल०) की पाकीज़ा ज़िन्दगी तमाम इन्सानियत के लिए नमूना है इसलिए आप (सल्ल०) की ज़ाते-गिरामी और अ़मल से वाक़िफ़ होना ज़रुरी है, और आप (सल्ल०) से मुह़ब्बत ईमान की अ़लामत है। जिससे मुह़ब्बत होती है उस की हर अदा भाती है और उसका चेहरा गोया हर वक़्त सामने होता है, आप (सल्ल०) का हुलिया-मुबारक जिसपर तमाम दुनिया की मुह़ब्बते न्यौछावर हों, उनसे सच्ची मुह़ब्बत पैदा करने का ज़रिया एक आप (सल्ल०) के हुलिया-मुबारक का जानना भी है। इसलिए इस किताब में आप (सल्ल०) का हुलिया मुबारक अहादीस की रोशनी में पेश किया गया है, ताकि इसके ज़रिए आप (सल्ल०) से सच्ची मुह़ब्बत पैदा हो और अ़मल करना आसान हो।

इस तरह इस किताब में सबसे पहले भाग एक में आप (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और भाग दो में आप (सल्ल०) के खाने, पीने, सोने, कपड़ा और जूता पहनने, और लोगों के साथ मज़ाक करने का पूरा तरीक़ा और उससे सम्बन्धित ह़दीसों का ज़िक्र करते हुए भाग तीन में आप की सुन्नतों को अहादीस की रौशनी में शरअ़ी आदाब के नाम से और भाग चार में सुन्नत के ख़िलाफ़ आ़माल को भी ख़िलाफ़े सुन्नत के नाम से ज़िक्र किया गया है, ताकि अ़मल करना आसान हो। अल्लाह तआ़ला क़ुबूल फ़रमाकर अ़मल की तौफ़ीक़ अता फरमाए।

आख़िर में हम 'फ़ैसल अलाना' भाई के शुक्रगुज़ार हैं, जिन्होंने हम को इस को तैयार करवाने में मदद फ़रमाई। अल्लाह तआ़ला अपनी शान के मुताबिक़ उन्हें अ़ज्र अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाए।

5 मार्च 1998

मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी 'नदवी'
दारुलउ़लूम नदवतुल उलमा लखनऊ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ
أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ
لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ۝٢١

दर हक़ीक़त तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल में एक बेहतरीन नमूना है उस शख़्स के लिए, जो अल्लाह और आख़िरत का उम्मीदवार हो और वह अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करे।

भाग-एक
हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का हुलिया मुबारक

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का हुलिया मुबारक

● इब्राहीम बिन मुहम्मद जो हज़रत अ़ली (रज़ि०) की औलाद(पोते) में से हैं, वह फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) न ज़्यादा लम्बे थे, न ज़्यादा पस्ता क़द, बल्कि दर्मियानी क़द लोगों में थे, हुज़ूर (सल्ल०) के बाल मुबारक बिल्कुल सीधे न थे बल्कि थोड़ी सी पेचीदगी लिए हुए थे। न आप (सल्ल०) मोटे बदन के थे न गोल चेहरे के अल्बत्ता थोड़ी सी गोलाई आप (सल्ल०) के चेहरे मुबारक में थी।

आप का रंग सफ़ेद सुर्ख़ी मायल था, आप (सल्ल०) की मुबारक आंखें निहायत स्याह (काली) थीं और पलकें दराज़, बदन के जोड़ों के मिलने की हड्डियां मोटी थीं (जैसे कुहनियां और घुटने) और ऐसे ही दोनों मोढ़ों के दर्मियान की जगह भी मोटी और गोश्त से भरी हुई थी, आप (सल्ल०) के बदन मुबारक पर ज़्यादा बाल नहीं थे (अर्थात बाज़ आदमियों के बदन पर बाल ज़्यादा हो जाते हैं) हुज़ूर (सल्ल०) के बदन मुबारक पर ख़ास-ख़ास हिस्सों के अ़लावह, जैसे बाज़ू पिंडुलियां वग़ैरह, और कहीं बाल नहीं थे। आप (सल्ल०) के सीने मुबारक से नाफ़ तक बालों की एक लकीर थी। आप (सल्ल०) के हाथ और क़दम गोश्त से भरे हुए थे जब आप चलते तो क़दमों को क़ूव्वत से उठाते गोया पस्ती की तरफ़ चल रहे हैं। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

जब आप (सल्ल०) किसी की तरफ तवज्जुह फ़रमाते तो पूरे बदन मुबारक के साथ तवज्जुह फ़रमाते। आप (सल्ल०) के दोनों मुबारक शानों के दर्मियान मुहरे नुबूवत थी, आप (सल्ल०) ख़ातिमुन्नबीईन थे, आप (सल्ल०) सबसे ज़्यादा सखी दिल वाले थे, और सबसे ज़्यादा सच्ची ज़बान वाले, सबसे ज़्यादा नर्म तबीअ़त वाले, और सबसे ज़्यादा शरीफ़ घराने वाले थे। आप (सल्ल०) को जो शख्स अचानक देखता मरअूब हो जाता था पहली चीज़ तो आप का जमाल व खूबसूरती का रोअ़ब होता, इसके साथ जब कमालात का इज़ाफ़ा होता तो फिर रोअ़ब का क्या पूछना, इसके अ़लावह हुज़ूर (सल्ल०) को जो मख़सूस चीज़ें

दी गयीं थी उन में से रोअ़ब भी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अ़ता किया गया था, अल्बत्ता जो शख़्स पहचान कर मेल जोल करता, वह आप (सल्ल०) के अख़्लाक़े करीमा व औसाफ़े जमीला से मुतास्सिर हो कर, आप (सल्ल०) को मह़बूब बना लेता था। आप (सल्ल०) का हुलिया बयान करने वाला सिर्फ़ यह कह सकता है, कि मैंने हुज़ूर (सल्ल०) जैसा जमाल व कमाल, न हुज़ूर (सल्ल०) से पहले देखा, न बाद में देखा। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं,'' आप (सल्ल०) का रंग निहायत खुला हुआ था आप का पसीना मोती मालूम होता था, मैंने दीबा और ह़रीर भी आप की खाल (जिल्द) से अधिक नर्म नहीं देखा, और मुश्क व अंबर में भी आपके बदन से ज़्यादा खुशबू न थी।'' **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

● ह़ज़रत ह़सन (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने अपने मामू हिन्द बिन अबी हाला से हुज़ूर (सल्ल०) का हुलिया मुबारक दर्याफ़्त किया, वह हुज़ूर (सल्ल०) का हुलिया मुबारक बहुत वज़ाह़त से बयान किया करते थे। (ह़ज़रत ह़सन (रज़ि०) की उ़म्र हुज़ूर (सल्ल०) के विसाल के वक़्त सात साल की थी। इसलिए हुज़ूर (सल्ल०) के औसाफ़ अपनी कम उम्री की वजह से पूरी तरह याद नहीं थे)। मामूजान ने हुज़ूर (सल्ल०) के हुलिया शरीफ़ के बारे में यह फ़रमाया, "आप खुद अपनी ज़ात व सिफ़ात के एतिबार से भी शानदार थे और दूसरों की नज़रों में भी बड़े दर्जे वाले थे, आप (सल्ल०) का चेहरा मुबारक माहे बदर की तरह चमकता था। आप (सल्ल०) का क़द मुबारक बिल्कुल मुतवस्सित क़द वाले आदमी से कुछ लम्बा था, लेकिन ज़्यादा लम्बे क़द वाले से कम था। सर मुबारक एतिदाल के साथ था, बाल मुबारक कुछ बल खाए हुए थे, अक्सर बालों में अपने आप मांग निकल आती, तो मांग रहने देते वरना आप खुद मांग निकालने का एहतिमाम न फ़रमाते थे। जिस ज़माने में आप (सल्ल०) के बाल मुबारक ज़्यादा होते थे तो कान की लौ तक आ जाते थे, आप (सल्ल०) का रंग मुबारक बड़ा चमकदार था और पेशानी मुबारक कुशादा। आप (सल्ल०) के बाल गुंजान थे, आप की नाक मुबारक बुलन्दी को लिये हुए थी और उस पर एक चमक और नूर था। शुरु में देखने वाला बड़ी नाक वाला समझता लेकिन बाद में मालूम होता कि हुस्न और चमक की वजह से बुलन्द मालूम

होती वरना बहुत ज़्यादा बुलन्द नहीं।" **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● आप की दाढ़ी मुबारक मज़बूत और गुंजान बालों की थी। आँख मुबारक की पुतली काली थी और रुख़्सार मुबारक हमूवार हल्के गोश्तदार थे। आप का मुँह मुबारक एतिदाल के साथ था। आप के दांत मुबारक बारीक आबदार थे, और उन में से सामने के दांतों में ज़रा-ज़रा सी सांस थी। सीने से नाफ़ तक बालों की एक बारीक लकीर थी। आप की गर्दन मुबारक ऐसी ख़ूबसूरत और बारीक थी जैसे मूर्ति की गर्दन साफ़ तराशी हुई होती है, और रंग में चांदी जैसी साफ़ और ख़ूबसूरत थी। आप के सब आज़ा बड़े मोअ़तदिल (संतुलित) और गोश्त भरे हुए थे। पेट और सीना मुबारक हमवार था लेकिन सीना फ़राक़ और चौड़ा था। आप (सल्ल०) के दोनों मोढ़ों के दर्मियान कुछ फ़ासला था, जोड़ों की हड्डियां मज़बूत थीं। कपड़ा उतारने की ह़ालत में आप (सल्ल०) का बदन मुबारक रौशन और चमकदार नज़र आता था। नाफ़ और सीने के दर्मियान एक लकीर की तरह बालों की बारीक सी धारी थी, उस लकीर के अ़लावा दोनों छातियों और पेट मुबारक बालों से खाली थे, मगर दोनों बाज़ुओं और कंधों और सीने मुबारक के ऊपरी ह़िस्सा पर बाल थे। आप की कलाइयाँ मोटी थीं और हथेलियाँ चौड़ी। हथेलियाँ और दोनों क़दम गोश्त से भरे हुए थे। हाथ पांव की उंगलियाँ एतिदाल के साथ लम्बी थीं। आप के तलूवे कुछ गहरे थे और क़दम हमूवार थे, कि पानी उनके साफ़ सुथरा होने की वजह से उन पर ठहरता नहीं था फ़ौरन ढल जाता था। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि "हुज़ूर (सल्ल०) खुले ज़ेहन के थे, आप की आंखों की सफ़ेदी में सुर्ख़ डोरे पड़े हुए थे, एड़ी मुबारक पर बहुत कम गोश्त था।" **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) नक़्ल फ़रमाते हैं कि मैं एक बार चांदनी रात में हुज़ूर (सल्ल०) को देख रहा था, हुज़ूर (सल्ल०) उस वक़्त सुर्ख़ जोड़ा पहने हुए थे, मैं कभी चांद को देखता था और कभी आप को। आख़िर मैंने यही फ़ैसला किया कि हुज़ूर (सल्ल०) चांद से कहीं ज़्यादा ह़सीन व जमील और रौशन हैं।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुहरे नुबूवत

● आप (सल्ल०) के शानों के बीच में कबूतर के अण्डे के बराबर ख़त्मे नुबूवत थी यह देखने में सुर्ख उभरा हुआ गोश्त था। **(मुस्लिम शरीफ़)**

● हज़रत जाबिर बिन समुरः (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर (सल्ल०) के दोनों शानों के बीच में ख़ातम को देखा, जो कबूतर के अण्डे के बराबर सुर्ख़ गद्‌दा था। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● हज़रत अबी नज़रा औफ़ी (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) से मुहरे नुबूव्वत को पूछा तो उन्होंने बताया कि आप (सल्ल०) की पुश्त मुबारक पर एक गोश्त का उभरा हुआ टुकड़ा था। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

ओ़ल्बा बिन अहमर (रज़ि०) कहते हैं कि मुझसे अम्र बिन अख़्तब ने यह क़िस्सा बयान किया कि एक बार हुज़ूर (सल्ल०) ने मुझसे कमर मलने के लिए इर्शाद फ़रमाया। मैंने हुज़ूर (सल्ल०) की क़मर मलनी शुरु की तो अचानक मेरी उंगली मुहरे नुबूव्वत पर लग गई। ओ़ल्बा कहते हैं कि मैंने अम्र से पूछा कि मुहरे नुबूव्वत क्या चीज़ थी, उन्होंने जवाब दिया चंद बालों का मजमुआ था।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का लिबास

● हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) का बयान है कि हुज़ूर (सल्ल०) फ़रमाते थे कि सफ़ेद कपड़ों को अख़्तियार किया करो कि यह बेहतरीन लिबास है। सफ़ेद कपड़ा ही ज़िन्दगी की हालत में पहनना चाहिए और सफ़ेद कपड़े में मुर्दो को दफ़न करना चाहिए। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● हज़रत आ़इशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) सब कपड़ों में कुर्ते को ज़्यादह पसंद फ़रमाते थे। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● आप (सल्ल०) का आम लिबास चादर व क़मीज़ और तहबन्द थी, पायजामा कभी नहीं इस्तिमाल किया, लेकिन 'इमाम अहमद' और 'अस्ह़ाबे

सुनन-ए-अरबअ़' ने कहा है कि आप (सल्ल०) ने 'मिना' के बाज़ार में पायजामा ख़रीदा था, 'हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम' ने लिखा है इससे मालूम होता है कि आप (सल्ल०) ने इस्तिमाल भी फ़रमाया होगा। **(मिश्कात)**

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मोजः

● इब्ने बुरैदा (रज़ि०) कहते हैं कि नज्जाशी ने हुज़ूर (सल्ल०) के पास काले रंग के दो सादे मोज़े हदिये में भेजे थे। हुज़ूर (सल्ल०) ने उनको पहना और वुज़ू के बाद उन पर मसह भी फ़रमाया। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● आप (सल्ल०) को मोजः पहनने की आदत न थी, लेकिन नज्जाशी ने जो काले मोज़े भेजे थे आप (सल्ल०) ने इस्तिमाल फ़रमाया। **(तिर्मिज़ी)**

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नअ़लैन (जूता)

● हज़रत क़तादा (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने हज़रत अनस (रज़ि०) से दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर (सल्ल०) के नअ़लैन शरीफ़ कैसे थे तो उन्होंने फ़रमाया कि हर जूता में दो तस्में थे। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) के नअ़लैन शरीफ़ में दो तस्में थे। ऐसे ही हज़रत अबूबक्र और हज़रत उ़मर (रज़ि०) के जूता में भी दोहरा तस्मा था। एक तस्मे की शुरुआत हज़रत उ़स्माने ग़नी (रज़ि०) ने फ़रमाई है। **(तिर्मिज़ी)**

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की चादर

● हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) हज़रत उसामा पर सहारा लगाए हुए मकान से तशरीफ़ लाए। उस वक़्त हुज़ूर (सल्ल०) पर एक यमनी नक्शदार कपड़ा था जिसमें हुज़ूर (सल्ल०) लिपटे हुए थे। उसी तरह आप (सल्ल०) ने बाहर तशरीफ़ लाकर सहाबा को नमाज़ पढ़ाई। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● लिबास में सबसे ज़्यादा आप (सल्ल०) को धारीदार यमन की चादरें

पसंद थीं और कभी-कभी 'शामी उबा' जिसकी आस्तीनें इतनी तंग थीं कि वुज़ू करना चाहते तो चढ़ा न सकते और हाथ को आस्तीन से निकालना पड़ता।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का बिस्तर

● हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) के सोने और आराम फ़रमाने का बिस्तर चमड़े का होता था, जिस में खजूर के दरख़्त की छाल भरी हुई थी। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● आप (सल्ल०) का बिस्तर चमड़े का गद्दा होता था जिसमें रुई के बजाए खुजूर के पत्ते होते थे, चारपाई बान की बुनी होती थी जिससे अक्सर जिस्म पर निशान पड़ जाते थे। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अंगूठी

● हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इरादा फ़रमाया कि फ़ारस के बादशाह किस्रा के बादशाह और रूम के, क़ैसर के बादशाह और हब्शा के बादशाह नज्जाशी को ख़ुतूत लिखाएँ तो आप (सल्ल०) से अ़र्ज किया गया, कि यह बादशाह लोग मुहर के बिना ख़ुतूत को क़ुबूल नहीं करते तो आप (सल्ल०) ने मुहर बनवाई जो चांदी की अंगूठी थी। उसमें नक़्श था उसमें लिखा हुआ था 'मुहम्मद रसूलुल्लाह।' **(मुस्लिम शरीफ़)**

यही हदीस बुख़ारी शरीफ़ में इस तरह है कि मुहर में तीन लाइनें थीं एक लाइन में 'मुहम्मद' दूसरी लाइन में 'रसूल' और तीसरी लाइन में अल्लाह (अर्थात 'अल्लाह' ऊपर उसके नीचे 'रसूल', उसके नीचे 'मुहम्मद')

● हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि एक आदमी के हाथ में सोने की अगूंठी देखी तो आप (सल्ल०) ने उसके हाथ से निकाल कर फेंक दी और फ़रमाया, "तुम में से किसी-किसी का यह हाल है कि वह अपनी ख़्वाहिश से दोज़ख़ का अंगारा लेकर अपने हाथ में पहन लेता है।" फिर जब

रसूलुल्लाह (सल्ल०) वहां से तशरीफ़ ले गये तो किसी ने उन साहब से कहा (जिनके हाथ से सोने की अगूंठी निकाल कर फेंक दी थी) कि अपनी अंगूठी उठा लो और अपने काम में ले आओ। उन साहब ने कहा, "ख़ुदा की क़सम! जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इसको फेंक दिया है तो अब कभी मैं इसको नहीं उठाऊँगा।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

● हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) की अंगूठी चाँदी की थी और उस का नगीना हब्शी था। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● जब आप (सल्ल०) ने नज्जाशी और क़ैसरे रुम को ख़त लिखना चाहा तो लोगों ने कहा कि बादशाह लोग मुहर के बिना कोई तहरीर क़ुबूल नहीं करते, तो आप (सल्ल०) ने चाँदी की अंगूठी बनवाई जिसमें तीन सतरों में 'मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' लिखा हुआ था। बाज़ सहाबा कहते हैं, कि आप (सल्ल०) सिर्फ़ मुहर लगाने के लिए इस्तिमाल करते थे और दाहिने हाथ की उंगली में पहनते थे।

(अबूदाऊद-किताबुल् लिबास)

● हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) ने चांदी की अंगूठी बनवाई थी इस से ख़ुतूत आदि पर मुहर लगाते और पहनते नहीं थे।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खुशबू का इस्तिमाल

● हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया "जिसको ख़ुशबू दी जाए तो उसको चाहिए कि ले ले इसलिए कि इसमें बोझ कम है और ख़ुशबूदार चीज़ है।" **(सुनन अबी दाऊद)**

● आप (सल्ल०) को ख़ुशबू बहुत पसंद थी और हमेशा इस्तिमाल करते थे। सहाबा फ़रमाते हैं कि जिस गली कूचे से आप (सल्ल०) निकल जाते वह मुअ़त्तर हो जाती, अक्सर आप (सल्ल०) फ़रमाया करते कि मर्दो की ख़ुशबू ऐसी होनी चाहिए कि ख़ुशबू फैले और रंग नज़र न आये, और औ़रतों की ऐसी होनी चाहिए कि ख़ुशबू न फैले और रंग नज़र आए। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) के पास इत्रदान था

उसमें से ख़ुश्बू इस्तेमाल फ़रमाते थे। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● हज़रत शमामा (रज़ि०) कहते हैं कि हज़रत अनस (रज़ि०) ख़ुशबू को रद्द नहीं करते थे और हुज़ूर (सल्ल०) भी ख़ुश्बू को रद्द नहीं फ़रमाते थे। हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि०) कहते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन चीज़ नहीं लौटानी चाहिए, तकिया, ख़ुशबू और दूध। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सफाई

● एक बार एक शख़्स को गंदे कपड़े पहने देखा तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि इससे इतना नहीं होता कि कपड़े धो लिया करे।

(अबूदाऊद-किताबुल्लिबास)

● एक बार एक शख़्स खराब कपड़े पहने हुए हाज़िर हुआ तो उस से आप (सल्ल०) ने पूछा तुम कुछ इस्तिताअ़त रखते हो, बोला हां, तो आपने फ़रमाया, "अल्लाह ने नेअ़मत दी है, तो उसका सूरत से भी इज़हार होना चाहिए।"

(अबूदाऊद-किताबुल्लिबास)

● अ़रब के बद्दू मस्जिद में आते तो दीवारों पर या सामने ज़मीन पर थूक देते, आप (सल्ल०) बहुत नापसंद फरमाते, और दीवारों पर थूक के धब्बों को खुद छड़ी की नोक से खुरच कर साफ़ कर देते, एक बार दीवार पर थूक का धब्बा देखा तो इस ज़ोर से गुस्सा हुए कि चेहरा मुबारक सुर्ख़ हो गया यह देख कर एक अन्सारी ने धब्बे को मिटाया और उस जगह ख़ुशबू लाकर मल दिया, इस पर आप (सल्ल०) बहुत खुश हुए और उसकी तारीफ़ की। **(नसई-किताबुल् मसाजिद)**

● ''इसी तरह आप (सल्ल०) सफ़ाई के बाद कभी-कभी मजलिस में काफ़ूर सुलगाते।'' **(नसई)**

● एक बार आप (सल्ल०) ने एक शख़्स के बाल बिखरे हुए देखे तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "इससे इतना नहीं हो सकता कि बालों को दुरुस्त कर ले।'' **(अबूदाऊद)**

● इसीलिए ''मस्जिदे नबवी में जुमा के दिन ख़ुशबू की अंगेठियां जलाई जाती थीं।'' **(बुख़ारी)**

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मज़ाक

● हज़रत अबूहुरैरह (रज़ि०) से रिवायत है कि कुछ सहाबा ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अ़र्ज़ किया "या रसूलल्लाह! आप हम से मज़ाक़ करते हैं?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया "मैं (मज़ाक़ में भी) हक़ ही कहता हूँ।" **(तिर्मिज़ी)**

● हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) ने उनको एक बार मज़ाक़ में 'या ज़लउज़नैन' फ़रमाया (ऐ दो कानों वाले)। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) हमारे साथ मेल जोल और मज़ाक़ फ़रमाते थे, मेरा एक छोटा भाई था, हुज़ूर (सल्ल०) उस से फ़रमाते, "या उमैर, 'मा फ़अ़लन नुग़ैर' अरे अबू उमैर वह नुग़ैर कहां चली गई।" (नुग़ैर एक चिड़िया का नाम है वह मर गई तो यह रंजीदा बैठे थे इस पर आप ने फ़रमाया)। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि किसी शख़्स ने हुज़ूर (सल्ल०) से दरख़्वास्त की कि कोई सवारी का जानवर मुझे अ़ता फ़रमा दीजिए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "एक ऊँटनी का बच्चा तुम को देंगे।" सायल ने अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर (सल्ल०) मैं बच्चा क्या करुँगा (मुझे तो सवारी के लिए चाहिए) हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हर एक ऊँट किसी ऊँटनी का बच्चा होता है। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● हज़रत हसन (रज़ि०) कहते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) की ख़िदमत में एक बूढ़ी औ़रत हाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह! दुआ़ फ़रमा दीजिए अल्लाह तआ़ला मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे।" हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जन्नत में बूढ़ी औ़रत दाख़िल नहीं हो सकती," वह औ़रत रोती हुई लौटने लगीं तो हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया इस से कह दो कि जन्नत में बुढ़ापे की हालत में दाख़िल नहीं होगी बल्कि अल्लाह तआ़ला सब अहले जन्नत औ़रतों को, नौ उमर कुवाँरियाँ बना देंगे और अल्लाह इस क़ौल "इन्ना अन्शाना हुन्ना......" में इस का बयान है। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● हज़रत अनस (रज़ि) कहते हैं कि एक शख़्स जंगल के रहने वाले, जिनका नाम ज़ाहिर बिन हराम था। वह जब आप (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर

होते तो जंगल के हदिये सब्ज़ी आदि हुज़ूर (सल्ल०) की ख़िदमत में पेश किया करते और जब वह मदीना से वापस जाने का इरादा करते तो हुज़ूर (सल्ल०) खाने-पीने का शहरी कुछ सामान अ़ता करते। एक बार हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, “ज़ाहिर हमारा जंगल है और हम उसके शहर हैं।” हुज़ूर (सल्ल०) को उनसे ख़ुसूसी ताल्लुक़ था, ज़ाहिर कुछ बदशक्ल भी थे, एक बार किसी जगह खड़े हुए वह अपना कोई सामान बेच रहे थे कि हुज़ूर (सल्ल०) तशरीफ़ लाए और पीछे से उनकी कूली इस तरह भरी, कि वह हुज़ूर (सल्ल०) को देख न सके, उन्होंने कहा, “अरे कौन है मुझे छोड़ दो,” लेकिन कन्ख़ियों से देखकर हुज़ूर (सल्ल०) को पहचान लिया तो अपनी कमर को बहुत एहतिमाम से पीछे को करके हुज़ूर (सल्ल०) के सीने मुबारक से लगाने लगे। हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, “कौन शख़्स है, जो इस ग़ुलाम को ख़रीदे” ज़ाहिर ने अ़र्ज़ किया “हुज़ूर (सल्ल०) अगर आप (सल्ल०) मुझे बेच देंगे तो खोटा और कम क़ीमत पाएँगे।” हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, “नहीं, अल्लाह के नज़दीक तो तुम खोटे नहीं हो बल्कि तुम बहुत क़ीमती हो।” **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अख़्लाक़

● हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) जो नुबूवत से पहले और नुबूवत के बाद कुल २५ साल तक आप (सल्ल०) की ज़ौजियत में रहीं, क़ुर्आन मजीद के नुज़ूल के शुरु ज़माने में आप (सल्ल०) को इन अल्फ़ाज़ में तसल्ली देती थीं,‘ख़ुदा की क़सम ख़ुदा आप को कभी ग़मग़ीन न करेगा, आप सिलह रहीमी करते हैं, मक़रुज़ों का बार उठाते हैं, ग़रीबों की मदद करते हैं, मेहमानों की ज़ियाफ़त (मेहमान नवाज़ी) करते हैं, हक़ की हिमायत करते हैं, मुसीबतों में लोगों के काम आते हैं। **(बुख़ारी)**

● हज़रत आ़इशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं “हुज़ूर (सल्ल०) की आदत किसी को बुरा भला कहने की न थी, बुराई के बदले में बुराई नहीं करते थे बल्कि दरगुज़र कर देते और माफ़ फ़रमा देते थे।” **(तिर्मिज़ी शरीफ़)**

● आप (सल्ल०) को जब दो बातों में अख़्तियार दिया जाता तो उन में जो आसान होती उसको अख़्तियार करते, बशर्त कि वह गुनाह न हो। आप (सल्ल०) ने कभी किसी से अपने ज़ाती मामले में इन्तिक़ाम नहीं लिया, लेकिन जो

अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ करता खुद उससे इन्तिक़ाम लेते थे (अर्थात खुदा की तरफ से जो हुक्म होता सज़ा देने का हुक्म देते)।

आप (सल्ल०) ने नाम लेकर कभी किसी मुसलमान पर लानत नहीं की। आप (सल्ल०) ने कभी किसी ग़ुलाम, या लौंडी को, या किसी औ़रत को, या किसी जानवर को अपने हाथ से नहीं मारा। आप (सल्ल०) ने किसी की कोई दरख्वास्त रद्द नहीं की लेकिन यह कि वह नाजाइज़ हो। आप (सल्ल०) जब घर के अन्दर तशरीफ़ लाते तो हंसते और मुस्कुराते हुए आते। दोस्तों के दर्मियान पैर फैला कर नहीं बैठते थे, और बातें इतना ठहर-ठहर कर करते थे, कि कोई याद रखना चाहे तो याद कर ले और बात-बात पर शोर नहीं करते, कोई बुरा कलिमा मुंह से कभी नहीं निकालते, न किसी का ऐब तलाशते थे, कोई ऐसी बात जो आप को नापसंद होती तो उससे एराज़ (मुंह मोड़ लेते) फ़रमा लेते थे।

‘‘अपने नफ़्स से आप ने तीन चीज़ें बिलकुल दूर कर रखीं थीं- बहस व मुबाहिसा, ज़रुरत से ज़्यादह बात करना, और जो बात मतलब की न हो उसमें पड़ना’’ और दूसरों के बारे में भी तीन बातों से परहेज़ करते थे।

किसी को आप बुरा नहीं कहते थे, किसी की ऐ़बजोई नहीं करते थे, किसी के अन्दुरुनी टोह में नहीं पड़ते थे, वही बातें करते थे जिनसे कोई मुफ़ीद नतीजा निकल सकता था। कोई दूसरा बात करता तो जब तक वह बात पूरी न कर लेता, आप ख़ामोशी से पूरी बात सुनते, लोग जिन बातों पर हंसते आप (सल्ल०) भी मुस्कुरा देते, जिन पर लोग तअ़ज्जुब करते आप भी करते। दूसरों के मुंह से अपनी त़ारीफ़ सुनना पसंद नहीं करते थे लेकिन अगर कोई आप (सल्ल०) के एहसान व इनआ़म का शुक्रिया अदा करता तो आप (सल्ल०) क़ुबूल फ़रमाते।

(पूरी तफ़्सील शमाइले तिर्मिज़ी में मौजूद है।)

● किसी से मिलने के वक़्त पहले आप खुद सलाम व मुसाफ़ह करते, कोई शख्स झुक कर आपके कान में बात कहता तो उस वक़्त तक उसकी तरफ़ से रुख़ न फेरते जब तक वह खुद मुंह न हटा लेता और मुसाफ़ह में जब तक दूसरा खुद न हाथ छोड़ देता, आप न छोड़ते थे। **(अबूदाऊद व तिर्मिज़ी)**

● आप (सल्ल०) बच्चों को अपनी गोद लेते और उनसे खेला करते,

मरीज़ों की अ़यादत और मिज़ाज पुरसी के लिए शहर के दूर दराज़ मुहल्लों तक आप (सल्ल०) तशरीफ़ ले जाते, आप (सल्ल०) एहतिरामन किसी सहाबी का नाम न लेते बल्कि उसकी कुन्नियत से पुकारते।

● हुज़ूर (सल्ल०) के पास जब कोई ग़रीब आता या कोई बूढ़ी औ़रत आपसे बात करना चाहती तो सड़क के एक किनारे सुनने के लिए खड़े हो जाते या बैठ जाते। अगर कोई बीमार होता तो उसकी बीमारपुर्सी करते, किसी का जनाज़ा होता तो उसमें शरीक हो जाते। कोई भी आदमी दअ़वत करता तो उसको कुबूल करते। कोई जौ की रोटी खिलाता तो दअ़वत से इंकार न करते।

जब़ान मुबारक से बेकार बात न निकालते, सबकी दिलजोई करते और ऐसा बर्ताव करते जिससे कोई घबरा न जाए, ज़ालिमों से अपना बचाव भी करते मगर सब से अच्छे अख़्लाक़ के साथ मिलते। अगर बात करने वाले कई आदमी होते तो बारी-बारी सबकी तरफ़ मुँह करके करते। हर शख़्स की तरफ़ ऐसा बर्ताव करते कि हर शख़्स यही समझता कि मुझसे सबसे ज़्यादा आपको मुहब्बत है। अगर कोई बात करने बैठता तो जब तक वह न उठता आप भी न उठते। घर में काम अपने हाथ से करा देते, जैसे बकरी का दूध निकालते, अपने कपड़े साफ़ कर लेते, अपने हाथ से अपने काम करते, कितना ही बुरा आदमी आपके पास आता उससे अच्छी तरह मिलते। उसकी दिलशिकनी न करते न सख़्ती से बोलते न सख़्ती फ़रमाते, बुराई का बदला भलाई से देते। अपने हाथ से किसी इंसान को तो क्या किसी जानवर को भी नहीं मारा, मगर शरीअ़त के अनुसार सज़ा दी। अगर कोई आप पर ज़्यादती करता तो बदला न लेते हर वक़्त मुस्कुराते रहते, हालांकि आख़िरत की फ़िक्र रहती थी, किसी का ऐब बयान न करते न किसी चीज़ के देने में तकल्लुफ़ करते। ज़बान मुबारक से वही बात कहते जिसमें सवाब मिले।

(इब्ने साद, शमाइले तिर्मिज़ी)

● जब आप ग़मग़ीन होते तो दाढ़ी मुबारक को हाथ में ले लेते और दाढ़ी मुबारक को देखते।

एक रिवायत में है कि ग़म के वक़्त अक्सर आप दाढ़ी मुबारक पर हाथ ले जाया करते थे।

● जब आपको किसी के बारे में बुरी बात मालूम होती तो फ़रमाते, "लोगों को क्या हो गया है कि वह ऐसा-ऐसा करते हैं।" **(तिर्मिज़ी)**

● जब जाड़े का मौसम आता तो जुमा की रात को अंदर सोना शुरु फ़रमाते, और गर्मी का मौसम आता तो जुमा की रात को बाहर सोना शुरु फ़रमाते। जब नया कपड़ा पहनते तो अल्लाह तआ़ला की ह़म्द करते। **(इब्ने असाकिर)**

यह थी मुह़म्मदुर्रसूलल्लाह (सल्ल०) के पाकीज़ह ज़िन्दगी की एक झलक जिसे अपने अन्दर उतार कर एक इन्सान पाकीज़ह इन्सान बन सकता है। अब आगे आप (सल्ल०) के रात दिन में जो ज़रुरतें आम तौर से पेश आतीं हैं उनके आदाब का ज़िक्र किया जाता है, जिससे सुन्नत पर अ़मल करना आसान हो जाएगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ

اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿٢١﴾

हक़ीक़त में तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल में एक बेहतरीन नमूना है उस शख़्स के लिए, जो अल्लाह और आख़िरत का उम्मीदवार हो और वह अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करे।

भाग-दो

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

हज़रत मुहम्मद के ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा अहादीस की रौशनी में

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को दुनिया में चन्द दिनों के लिए ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए भेजा है ताकि 'वह' इम्तिहान ले, कि बन्दा अपने पैदा करने वाले मालिक की बातों को मानकर, 'जिसने' इसके साथ तमाम दुनिया के एहसानात किए 'उसका' शुक्र अदा करके ज़िन्दगी गुज़ारता है या अपने पैदा करने वाले, अपने मुहसिन की नाशुक्री करके ज़िन्दगी गुज़ारता है।

इसके लिए अल्लाह ने बेहतरीन इन्तिज़ाम भी फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ज़िन्दगी के हर शोबे में रहनुमाई देकर ही नहीं भेजा, बल्कि आप (सल्ल०) की पूरी ज़िन्दगी के एक-एक लम्हात को महफ़ूज़ भी रखवाया ताकि क़ियामत तक के तमाम इन्सानों को पाकीज़ह ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए मुकम्मल रहनुमाई हासिल हो, जिसकी तफ़्सीलात इस तरह हैं।

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के खाना खाने से सम्बन्धित हदीसें

- हज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि०) फ़रमाते हैं, "हुज़ूर (सल्ल०) अपनी उंगलियाँ तीन मर्तबा चाट लिया करते थे।" **(शमाइले तिर्मिज़ी)**
- हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं, "हुज़ूर (सल्ल०) जब खाना खाते तो अपनी तीनों उंगलियों को चाट लिया करते थे।" **(शमाइले तिर्मिज़ी)**
- हज़रत अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि०) कहते हैं हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मैं टेक लगाकर खाना नहीं खाता।" **(शमाइले तिर्मिज़ी)**
- हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०)

के पास खजूरें लाईं गईं तो हुज़ूर (सल्ल०) उस में से खा रहे थे और उस वक़्त भूख की वजह से अपने सहारे से नहीं बैठे थे बल्कि उकड़ू बैठकर किसी चीज़ पर सहारा लगाए हुए थे। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

- हज़रत आ़इशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं, "हुज़ूर (सल्ल०) के घर वालों ने लगातार दो दिन तक कभी जौ की रोटी से पेट भर कर खाना नहीं खाया।" **(शमाइले तिर्मिज़ी)**
- सहल बिन साद (रज़ि०) से किसी ने पूछा कि हुज़ूर (सल्ल०) ने कभी सफ़ेद मैदा की रोटी भी खाई है उन्होंने जवाब दिया कि हुज़ूर (सल्ल०) के सामने आख़िर उम्र तक कभी मैदा आया भी नहीं होगा। फिर सवाल करने वाले ने पूछा कि हुज़ूर (सल्ल०) के ज़माने में तुम लोगों के यहां छलनियां थीं उन्होंने जवाब दिया, नहीं थी। फिर सायल ने पूछा कि जौ की रोटी को कैसे पकाते थे सहल (रज़ि०) ने फ़रमाया, "उसके आटे में फूक मार लिया करते थे। जो मोटे-मोटे तिनके होते थे वह उड़ जाते थे बाक़ी गूंद लेते थे।" **(शमाइले तिर्मिज़ी)**
- हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं, "हुज़ूर (सल्ल०) ने कभी मेज़ पर खाना नहीं खाया, न छोटी प्यालियों में, न आपके लिए कभी चपाती पकाई गई।" यूनुस (रज़ि०) कहते हैं मैंने क़तादा (रज़ि०) से पूछा, "फिर खाना किस चीज़ पर रखकर खाते थे," उन्होंने जवाब दिया, "यही चमड़े के दस्तरख़्वान पर।" **(शमाइले तिर्मिज़ी)**
- हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि०) से रिवायात है कि मैंने तौरात में पढ़ा था कि खाने के बाद हाथ मुँह धोना बरकत की चीज़ है तो मैंने यह बात रसूलुल्लाह (सल्ल०) से ज़िक्र की। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "खाने से पहले और उसके बाद हाथ और मुँह का धोना बरकत है।" **(जामेअ़ तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)**
- हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) मस्जिद में थे, किसी शख़्स ने आप की ख़िदमत में रोटी और गोश्त पेश किया, आप (सल्ल०) ने मस्जिद ही में उसे खा लिया और हमने भी आप के साथ खाया और आप के साथ हम भी नमाज़ के लिए खड़े हो गये और इससे ज़्यादा हमने कुछ नहीं किया कि अपने हाथ कंकरियों से साफ़ कर लिए। **(सुनन इब्ने माजा)**

● ह़ज़रत उ़मर बिन अबी सल्मा (रज़ि०) से रिवाया है कि मैं (बचपन में) रसूलुल्लाह (सल्ल०) की गोद में परवरिश पा रहा था, मेरा हाथ प्लेट में हर तरफ़ चलता था तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुझे नसीह़त फ़रमाई, "बिस्मिल्लाह पढ़ा करो और अपने दाहिने हाथ से और अपने सामने ही से खाया करो।"

(सहीह़ बुख़ारी व मुस्लिम)

● ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) ने फ़रमाया कि रसूलुल्ललाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम में से कोई न बायें हाथ से खाये न उससे पिये, क्योंकि शैतान बायें हाथ से खाता और पीता है।" **(मुस्लिम शरीफ़)**

● ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायात है कि जब खाना सामने रख दिया जाए तो अपने जूते उतार दिया करो इससे तुम्हारे पांव को ज़्यादा राह़त मिलेगी।

(मुस्नद दारमी)

● ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब किसी के खाने पीने के बर्तन में मक्खी गिर जाए तो उसको गोता देकर निकाल दो क्योंकि उसके दो बाजुओं में से एक में बीमारी होती है और दूसरे में शिफ़ा देने वाला माद्दा होता है और वह अपने इस बाज़ू से जिसमें बीमारी वाली चीज़ होती है बचाव करती है तो खाने वाले को चाहिए कि मक्खी को गोता देकर निकाल दे।" **(सुनन अबी दाऊद)**

● ह़ज़रत क़तादा (रज़ि०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़ादिम ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत किया है वह बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कभी ख़्वान (चौकी या नीचे क़िस्म की मेज़ जैसी उस ज़माने में मुश्रिकीन खाने के लिए इस्तेमाल करते थे) पर खाना नहीं खाया और न छोटी प्याली में खाया और न कभी आपके लिए चपाती पकाई गई। क़तादा से पूछा गया तो फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) और आपके सह़ाबा किस चीज़ पर खाना खाया करते थे तो उन्होंने कहा कि दस्तरख़्वान पर। **(सही़ बुख़ारी)**

● ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायात है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सोने और चांदी के बर्तन में खाने से मना फ़रमाया है। **(सुनन नसई)**

● ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायात है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने

कभी किसी खाने में ऐ़ब नहीं निकाला अगर पसंद हुआ तो खा लिया और पसंद न हुआ तो न खाया, छोड़ दिया। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

● ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को बची तर खजूरें खीरे के साथ खाते देखा।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

● ह़ज़रत आ़ईशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ख़रबूज़ा और बची तर खजूरें एक साथ खाते थे और फ़रमाते थे कि इन खजूरों की गर्मी का तोड़ इस ख़रबूज़ा की ठंडक से हो जाता है और ख़रबूज़ा की ठंडक का तोड़ खजूरों की गर्मी से हो जाता है। **(सुनन अबी दाऊद)**

● ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे के उस अ़मल से बड़ा ख़ुश होता है कि वह कुछ खाये और उस पर अल्लाह की ह़म्द और उसका शुक्र अदा करे, या कुछ पिये उसकी ह़म्द और शुक्र अदा करे।" **(मुस्लिम)**

● ह़ज़रत अबू सई़द ख़ुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब खाने से फ़ारिग़ होते तो यह दुआ़ पढ़ते-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ

"अ़ल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत़अमना वसाक़ाना वजअ़लाना मिनल्मुस्लिमीन।"

(तिर्मिज़ी, अबूदाऊद, इब्ने माजा)

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के खाना खाने का तरीक़ा और नसीह़तें

१. आप (सल्ल०) खाने से पहले दोनों हाथ धोते और सीधे हाथ से अपने सामने से खाना खाते। **(तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)**
२. दायें हाथ से खाना खाना इसी तरह किसी दूसरे को खाना देना या खाना लेना हो तब भी दायां हाथ इस्तेमाल करना। **(मुस्लिम)**
३. आप (सल्ल०) टेक लगाकर कभी खाना नहीं खाते, आप (सल्ल०) दोज़ानू बैठते या बदन के नीचे के हिस्से को ज़मीन पर टेक कर और दोज़ानू खड़े करके

बैठते या उकड़ू बैठते और इसी आख़री तरीक़े पर आप ज़्यादह बैठते थे। (अबूदाऊद)

४. इकट्ठे बैठकर खाना, खाने में जितने हाथ जमा होंगे उतनी ही बरकत ज़्यादा होगी। **(अबूदाऊद, मिश्कात)**

५. आप (सल्ल०) मेज़ कुर्सी पर बैठकर कभी खाना नहीं खाते बल्कि ज़मीन पर दस्तरख़्वान बिछाकर खाते थे। **(तिर्मिज़ी)**

६. जूते उतार कर खाना खाते। **(दारमी)**

७. आप (सल्ल०) अक्सर सिर्फ़ तीन उंगलियों से खाना खाते, यानी अंगूठे शहादत की उंगली और बीच की उंगली, और कभी-कभी बीच की उंगली के बराबर वाली उंगली भी इस्तेमाल कर लेते।

८. आप (सल्ल०) ज़मीन पर दस्तरख्वान बिछा कर खाना खाते थे।

६. 'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम' पढ़ कर खाते। **(अबूदाऊद)**

१०. छोटे-छोटे लुक़मे ख़ूब चबा कर खाते। **(तिर्मिज़ी)**

११. खाना अपनी ओर से शुरु करते बर्तन के बीच या दूसरे आदमियों के आगे हाथ न डालते। **(तिर्मिज़ी)**

१२. तेज़ गर्म खाना न खाते। **(मुस्नद अह़मद)**

१३. खाना खाने के दर्मियान कोई आ जाए तो उससे भी पूछ लें। **(इब्ने माजा)**

१४. खाने की मजलिस में जो शख़्स बड़ा हो उसे पहले शुरु कराना। **(मुस्लिम)**

१५. खाने में फूंक न मारना। **(तिर्मिज़ी)**

१६. खाना खाते हुए खाने की चीज़ या लुक़मा नीचे गिर जाए तो उसको उठा कर साफ़ कर के खा ले, शैतान के लिए न छोड़ें। **(इब्ने माजा)**

१७. आपका साथी खाना खा रहा हो, तो जहां तक हो सके उसका साथ दें ताकि वह पेट भर खा ले, मजबूरी हो तो उज़्र कर दें। **(इब्ने माजा)**

१८. खाने के बाद उंगलियां चाट लिया करते पहले बीच की उंगली चाटते उसके बाद शहादत की उंगली और फिर अंगूठा चाटते। **(तबरानी)**

१६. खाना अगर बरतन में ऊपर तक भरा होता तो आप (सल्ल०) ऊपर से खाना शुरु नहीं करते बल्कि अपने सामने नीचे की तरफ़ से शुरु करते और

फ़रमाते, "खाने में बरकत बीच में होती है।" **(तिर्मिज़ी)**

२०. छोटी-छोटी प्यालियों में आप खाना नापसन्द फ़रमाते। **(तिर्मिज़ी)**

२१. आप (सल्ल०) को हलुवा, शहद, सिरका, खजूर, ख़र्बूज़ः, ककड़ी और लौकी बहुत पसंद थी। **(तिर्मिज़ी)**

२२. आप (सल्ल०) को दस्त, गर्दन, और पीठ का गोश्त बहुत पसंद था। **(तिर्मिज़ी)**

२३. आप (सल्ल०) कभी-कभी ख़र्बूज़ः और खजूर, ककड़ी और खजूर, रोटी और खजूर या तिल और खजूर मिला कर खाते। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

२४. आप (सल्ल०) को अगर कोई खाना पसन्द न होता तो कभी उसकी बुराई न फ़रमाते बल्कि ख़ामोशी से उसको छोड़ देते। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

२५. आप (सल्ल०) ने छना हुआ आटा, या चपाती कभी नहीं खायी। **(तिर्मिज़ी)**

२६. खजूर या रोटी का टुकड़ा किसी पाक जगह पड़ा होता तो उसको पोछ कर खा लेते। **(इब्ने माजा)**

२७. बहुत गरम खाना जिसमें भाप निकलती होती, नहीं खाते बल्कि उसे ठंडा होने देते, गर्म खाने के लिए कभी फ़रमाते, "अल्लाह ने हमको आग नहीं खिलाई" है और कभी फ़रमाते, "गर्म खाने में बरकत नहीं होती।" **(अह़मद)**

२८. आप (सल्ल०) खाना या पानी बैठ कर ही खाते पीते मगर मेवा या फल खड़े-खड़े या चल फिर कर भी खा लिया करते। **(अबूदाऊद)**

२६. आप (सल्ल०) पके हुए गोश्त को कभी-कभी छुरी से काट कर नोश फ़रमाते। **(बुख़ारी)**

३०. खाने और पीने के बर्तन को ढक कर रखवाते अगर कोई चीज़ ढकने की नहीं होती तो एक छोटी सी लकड़ी बर्तन के मुंह पर रखवा देते। **(तिर्मिज़ी)**

३१. अगर आप (सल्ल०) किसी मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा होते, और किसी को कोई चीज़ खाने या पीने की देनी होती, तो दायीं ओर बैठने वाले को उसका ज़्यादा हक़दार समझते, और उसको देते, और अगर बांई ओर बैठने वाले को देना चाहते तो दायीं ओर वाले से इजाज़त ले लेते, चाहे बांई ओर का आदमी कितनी ही बड़ी हैसियत का होता। **(तिर्मिज़ी)**

३२. खाने या पीने की चीज़ में हुज़ूर (सल्ल०) फूंक नहीं मारते, और उसको बुरा जानते। **(तिर्मिज़ी)**

३३. हुज़ूर (सल्ल०) खुजूर खाते तो उल्टे हाथ से शहादत और बीच की उंगली से गुठली फेंकते, इस तरह कि इन दो उंगलियों की पुश्त पर गुठली रखते और फेंक देते। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

३४. आप (सल्ल०) कभी-कभी ककड़ी नमक लगा कर खाते थे। **(तिर्मिज़ी)**

३५. हुज़ूर (सल्ल०) जब कोई नया खाना देखते तो आप (सल्ल०) उसका नाम पहले पूछते, फिर हाथ बढ़ाते। **(तिर्मिज़ी)**

३६. मेहमान को खाना खिलाते तो बार-बार फ़रमाते और खाओ, और खाओ यहां तक कि मेहमान इन्कार करता, तब आप (सल्ल०) अपना इसरार ख़त्म फ़रमाते। **(तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)**

३७. किसी मजमा में खाना खाते तो सबसे आख़िर में आप (सल्ल०) ही खाने से उठते (क्योंकि कुछ लोग देर तक खाने के आदी होते हैं और ऐसे लोग जब दूसरों को खाने से उठता देखते हैं तो शर्म की वजह से खुद भी उठ जाते हैं, इस लिए ऐसे लोगों का लिहाज़ करते हुए हुज़ूर (सल्ल०) भी धीरे-धीरे खाते।) **(तिर्मिज़ी)**

३८. खाना अगर एक क़िस्म का आप (सल्ल०) के सामने होता तो आप (सल्ल०) सिर्फ़ अपने ही सामने से खाते और अगर कई क़िस्म का खाना होता,या एक ही बर्तन में कई क़िस्म का होता तो आप (सल्ल०) दूसरी तरफ़ भी हाथ बढ़ाते।

३९. पुरानी खजूर खाते तो पहले अन्दर से साफ़ कर लेते फिर खाते। **(तिर्मिज़ी)**

४०. खाने के बाद हाथ धोते और हाथ धोने के बाद हाथों में जो तरी होती उसको अपने चेहरे और सर मुबारक पर मल कर सुखा लेते। **(तिर्मिज़ी)**

४१. जब हुज़ूर (सल्ल०) मुर्ग़ी का गोश्त खाना चाहते तो कई दिन पहले हुक्म देते कि वह बाहर फिरने से (गन्दगी खाने से) रोक ली जाए फिर उसको ज़िबह करके पकवाते। **(तिर्मिज़ी)**

४२. आप (सल्ल०) को खिचड़ी,और गोश्त के शोरबे में डूबी हुई रोटी (सरीद)

बहुत पसंद थी इसी तरह मक्खन और खुजूर भी आप (सल्ल०) को बहुत पसंद था। **(तिर्मिज़ी)**

४३. दूध और खुजूर आप साथ-साथ खाते और फ़रमाते यह दोनों चीज़ें क्या खूब उम्दा हैं। **(तिर्मिज़ी)**

४४. जिस ख़ादिम ने खाना पकाया हो तो उसे खाने में शामिल करना या उसको खाने में से कुछ अलग से दे देना। **(मुस्लिम)**

४५. उस घर में ख़ैर और बरकत होगी जिस घर में खाने के बाद हाथ धोने और कुल्ली करने की आदत हो। **(इब्ने माजा)**

४६. जब उंगलियां चाटे तो पहले दर्मियानी बड़ी उंगली, फिर कलिमा वाली, फिर अगूंठा चाटे। **(तबरानी)**

४७. हाथों को चिकनाई लग गई हो तो उनको हाथों बाज़ुओं और क़दमों से पोछ सकते हैं। **(इब्ने माजा)**

४८. दस्तरख़्वान पहले उठा लिया जाए उसके बाद खाने वाले उठें। **(इब्ने माजा)**

४९. जो शख़्स प्याले में खाए फिर उसको मुकम्मल साफ़ करे तो प्याला उसके लिए दुआए मग़्फ़िरत करता है। **(अह़मद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, दारमी)**

५०. जब आप (सल्ल०) खाने में पहला लुक़्मा लेते तो फ़रमाते '**या वासिअ़ल मग़्फ़िरः**' और जब खाना पास आता तो फ़रमाते-

''**अल्लाहुम्मा बारिक लना फ़ी मा रज़क़्ना वक़िना अज़ाबन्नारि बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम**'' और जब खाना खा चुकते तो फ़रमाते-

اَلُحَمُدُ لِلّٰهِ الَّذِىُ اَطُعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الُمُسُلِمِيُنَ

"अल्ह़म्दु लिल्लाहिलज़ी अतअ़मना वसक़ाना वजअ़लना मिनल् मुस्लिमीन

"और जब दस्तरख़्वान उठ जाता तो आप (सल्ल०) फ़रमाते-

اَلُحَمُدُ لِلّٰهِ حَمدًا كَثِيُرًا طَيّبًا مُبارَكًا فِيُهِ غَيُرَ مُكِفّى وَلاَ مُوَدَّعِ وَلاَ مُسُتَغُنىً عَنُهُ رَبَّنَا۔

"अल्ह़म्दु लिल्लाह ह़म्दन कसीरन तय्यिबन मुबारकन फ़ीहि ग़ैर मुकिफ़्फ़ी वला मुवद्दअिंक्वला मुस्तग़न अ़न्हु रब्बना।"

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पीने से सम्बन्धित ह़दीसें

● ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम ऊँट की तरह एक सास में नहीं पिया करो बल्कि दो-दो या तीन-तीन सांस में पिया करो, और जब तुम पीने लगो तो 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर पिया करो और जब पी चुको और बर्तन मुँह से हटाओ तो अल्लाह की ह़म्द और उसका शुक्र अदा किया करो।" **(तिर्मिज़ी)**

● ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) पीने में तीन बार सांस लेते थे। **(सह़ीह़ बुख़ारी)**

● ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने पीने के बर्तन में सांस लेने या फूंक मारने से मना फ़रमाया है। **(सुनन अबी दाऊद, इब्ने माजा)**

● ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने खड़े-खड़े पीने से मना फ़रमाया है। **(सह़ीह़ मुस्लिम)**

● ह़ज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को पीने की चीज़ों में मीठी और ठंडी चीज़ पसंद थी। **(तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)**

● ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) ने ज़मज़म का पानी खड़े होने की ह़ालत में पिया। **(तिर्मिज़ी)**

● ह़ज़रत अ़म्र बिन शुऐब (रज़ि) अपने बाप और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर (सल्ल०) को खड़े और बैठे दोनों तरह पानी पीते देखा। **(तिर्मिज़ी)**

● क़बसः रज़ियल्लाहु अ़न्हा कहती हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) मेरे घर तशरीफ़ लाए वहां एक मश्कीज़ा (मशक़) लटक रहा था, हुज़ूर (सल्ल०) खड़े हुए मश्कीज़ा के मुँह से पानी नोश फ़रमाया। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास एक दूध का प्याला आया। आप (सल्ल०) के दाहिनीं ओर एक देहाती शख़्स था और बाईं ओर ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) थे। आप (सल्ल०) ने दूध पिया

फिर देहाती शख़्स को दिया और फ़रमाया कि दाहिनीं ओर से शुरु करना चाहिए फिर दाहिनीं ओर से (चाहे दाहिनीं ओर ऐसा शख़्स हो जो बाईं ओर से रुत्बे में कम हो।)

(मुस्लिम शरीफ़)

● ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) मदीना में तशरीफ़ लाए, उस वक़्त मैं दस बरस का था और आपने वफ़ात पाई उस वक़्त मैं बीस बरस का था और मेरी माँ मुझको आपकी ख़िदमत करने की रग़बत दिलाती, आप हमारे घर में आए हमने आपके लिए एक पली हुई बकरी का दूध दुहा और घर में एक कुआं था उसका पानी उस दूध में पिलाया, आप (सल्ल०) ने उसको पिया। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने कहा अब अबूबक्र को दीजिए वह आप के बाईं ओर बैठे थे। आप (सल्ल०) ने एक देहाती को दिया जो आप (सल्ल०) के दाहिनीं ओर बैठा था और फ़रमाया दाहिने से शुरु करना चाहिए फिर दाहिने से।

(मुस्लिम शरीफ़)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पीने का तरीक़ा और नसीह़तें

१. हुज़ूर (सल्ल०) पानी चूस कर बिना आवाज़ के पीते, गट-गट करके आवाज़ से कभी नहीं पीते।

२. आप (सल्ल०) को मीठे पानी का बहुत शौक़ था और दूर दराज़ से मीठा पानी पीने के लिए मंगवाया करते थे।

३. हुज़ूर (सल्ल०) की बीवी ह़ज़रत आइशा (रज़ि०) जिस बर्तन से और जिस जगह से पीतीं आप (सल्ल०) अपने लब मुबारक उसी जगह से लगाकर पीते।

४. आप (सल्ल०) को दूध बहुत पसन्द था, कभी सिर्फ़ दूध पीते और कभी ठण्डा पानी मिलाकर पीते।

५. आप (सल्ल०) जब पीने की चीज़ को किसी मजलिस में तक़सीम कराते तो हुक्म देते कि पहले उम्र में बड़े लोगों से दौर शुरु किया जाए।

६. जब मजलिस में किसी पीने की चीज़ का दौर चल रहा होता और बार-बार प्याला आ रहा होता तो दूसरा प्याला आने पर उसको आप (सल्ल०) उसी जगह से शुरु कराते जहां पहला दौर ख़त्म हुआ था।

७. आप (सल्ल०) अपने साथियों को जब कोई चीज़ पिलाते तो आप (सल्ल०) खुद आखिर में पीते, और फ़रमाते, "पिलाने वाला सबसे आख़िर में पीता है।"

८. आप (सल्ल०) आम लोगों की इस्तेमालगाहों जैसे नहरों, नदियों या तालाबों से पानी मंगा कर पीते।

६. आप (सल्ल०) अक्सर जौ का सत्तू इस्तिमाल करते थे।

१०. आप (सल्ल०) ने कांच, मिट्टी, तांबे, और लकड़ी के बर्तनों में भी पानी पिया है।

११. एक बार बादाम का सत्तू आपको पेश किया गया तो आप (सल्ल०) ने उसको पीने से इन्कार कर दिया और फ़रमाया, "कि यह उमरा की ग़िज़ा है।"

१२. आप (सल्ल०) शहद मिला हुआ दूध नहीं पीते थे और फ़रमाते, "दो सालन एक बर्तन में'-यानी यह इसराफ़ (फ़ुज़ूल खर्ची) कैसा।" **(तिर्मिज़ी)**

१३. आप (सल्ल०) बैठ कर तीन सांस में इस तरह पानी पीते कि हर बार बरतन से मुंह लगाते वक़्त बिस्मिल्लाह कहते और जब बर्तन को मुंह से हटाते तो 'अल्हम्दुलिल्लाह' फ़रमाते आख़िर में 'अल्हम्दुलिल्लाह' के साथ 'वशकुरु लिल्लाह' भी बढ़ा देते।

१४. दायें हाथ से पानी पियें क्योंकि बायें हाथ से शैतान पीता है। **(मुस्लिम)**

१५. पानी पीने से पहले 'बिस्मिल्लाह' और आख़िर में 'अल्हम्दुलिल्लाह' पढ़ें।
(अबूदाऊद, बुख़ारी)

१६. तीन सांस में पानी पीना और हर सांस में बर्तन से मुँह अलग कर लेना।
(मुस्लिम व तिर्मिज़ी)

१७. बैठ कर पीना। **(ज़ादुल मआद)**

१८. पीने की चीज़ में फूंक न मारना। **(अबूदाऊद)**

१६. कोई पीने वाली चीज़ खुद पीकर दूसरे को देना हो तो दायें जानिब वाले का हक़ होता है। **(तिर्मिज़ी)**

२०. जो शख़्स दूसरों को पिलाए वह खुद सबसे आख़िर में पिए। **(तिर्मिज़ी)**

२१. वुज़ू का बचा हुआ पानी खड़े होकर पीना। **(बुख़ारी, तिर्मिज़ी)**

२२. मश्क़ से (या जिस बर्तन से अचानक पानी आ जाने का डर हो) मुँह लगाकर न पियें। **(बुख़ारी)**

२३. चांदी और सोने के बर्तन में न खायें और न पियें। **(बुख़ारी)**

२४. बर्तन के टूटे हुए किनारे से न पीना। **(अबूदाऊद)**

२५. हर पीने की चीज़ पीकर यह दुआ पढ़ना।

اَللّٰهمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَاَطعِمْنَا خَيرًا مِّنْه

(शमाइले तिर्मिज़ी)

"अल्लाहुम्म बारिक लना फ़ीहि व अत्ञिमना ख़ैरमूमिन्हु"

२६. और दूध पीकर यह दुआ पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَزِدْنَا مِنْهُ

अल्लाहुम्मा बारिक लना फ़ीहि वज़िदना मिन्हु

(शमाइले तिर्मिज़ी)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कपड़ा पहनने से सम्बन्धित ह़दीसें

● ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने आदमी को बायें हाथ से खाने से मना फ़रमाया है, या केवल एक पैर में जूती पहन कर चलने से और इसी तरह एक चादर अपने ऊपर लपेट कर हर तरफ़ से बन्द हो जाने से, या एक कपड़े में लिपट कर इस तरह बैठे कि सतर खुला हो।
(मुस्लिम शरीफ़)

● ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो आदमी दुनिया में नुमाइश और शोहरत के कपड़े पहनेगा उसको अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन ज़िल्लत और रुसवाई के कपड़े पहनाए।"
(मुस्नद अहमद, सुनन अबीदाऊद, सुनन इब्नेमाजा)

● ह़ज़रत आ़ईशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि अस्मा बिन्ते अबी बक्र रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आईं, और वह बारीक कपड़े पहनें हुईं थी तो आप (सल्ल०) ने उनकी तरफ़ से मुँह फेर लिया और कहा, "ऐ अस्मा,

औरत जब बालिग़ हो जाए तो दुरुस्त नहीं कि उसके जिस्म का कोई हिस्सा नज़र आए सिवाए चेहरे और हाथों के।" **(सुनन अबी दाऊद)**

● हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो कोई अपना कपड़ा घमंड और फ़ख़्र के तौर पर ज़्यादा नीचा करेगा अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसकी ओर नज़र भी न उठाएगा।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

● हज़रत अबूसईद खुदरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सुना, फ़रमाते थे, "मोमिन बन्दे के लिए ईज़ार अर्थात तहबन्द बांधने का तरीक़ा यह है कि आधी पिंडुली से टख़्नों के दर्मियान तक हो तो यह भी गुनाह नहीं है, अर्थात जाइज़ है और जो इससे नीचे हो तो वह जहन्नम में है।" रावी कहते हैं कि यह बात आप ने तीन बार इर्शाद फ़रमाई- अल्लाह उस आदमी की ओर निगाह उठा के भी न देखेगा जो फ़ख़्र और घमंड में अपना ईज़ार (लूंगी, पायजामा या पैंट) घसीट कर चलेगा।

(सुनन अबी दाऊद व सुनन इब्ने माजा)

● हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन मर्दो पर लअ़नत फ़रमाई है जो औ़रतों वाला लिबास पहनें और उन औ़रतों पर लानत फ़रमाई है जो मर्दो वाला लिबास पहनें। **(सुनन अबी दाऊद)**

● अबुल अहवस कअ़बई अपने वालिद (रज़ि०) से रिवायत करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, और मैं बहुत मामूली और घटिया क़िस्म के कपड़े पहने हुए था तो आपने मुझसे फ़रमाया, "क्या तुम्हारे पास कुछ माल और दौलत है।" मैंने अ़र्ज़ किया, "जी हाँ।" आपने पूछा, "किस तरह का माल है" मैंने अ़र्ज किया, "मुझे अल्लाह ने हर क़िस्म का माल दे रखा है, ऊँट भी हैं, गाय बैल भी हैं, भेड़ बकरियाँ भी हैं, घोड़े भी हैं, गुलाम बांदियाँ भी हैं।" आप (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "जब अल्लाह ने तुमको माल और दौलत से नवाज़ा है, तो फिर अल्लाह के इनआ़म व एह़सान, और उसके फ़ज़्ल व करम का असर तुम्हारे ऊपर नज़र आना चाहिए।" **(मुस्नद अहमद, सुनन नसई)**

● हज़रत अम्र बिन शुऐब अपने वालिद शुऐब (रज़ि०) रिवायत करते

हैं, और वह अपने दादा हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स (रज़ि०) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "इजाज़त है ख़ूब खाओ, ख़ूब पियो, दूसरों पर सद्क़ा करो और कपड़े बनाकर पहनो लेकिन इस्राफ़ और नियत में फ़ख़्र व घमंड न हो।" **(मुस्नद अहमद, सुनन नसई, सुनन इब्ने माजा)**

● अता बिन यसार (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे, एक शख़्स मस्जिद में आया उसके सर और दाढ़ी के बाल बिल्कुल बिखरे हुए थे। आप (सल्ल०) ने अपने हाथ से उसको इशारा फ़रमाया जिसका मतलब यह था कि वह अपने सर और दाढ़ी के बालों को ठीक कराए, तो उसने ऐसा ही किया और फिर लौटकर आ गया इस पर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क्या यह उससे बेहतर नहीं है कि तुम में से कोई बिखरे हुए ऐसे हाल में आए कि गोया वह शैतान हो।" **(मुवत्ता इमाम मालिक)**

● हज़रत अबू दर्दा (रज़ि०) से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने हमको एक अच्छी हरी चादर निकाल कर दिखाई और एक मोटे कपड़े का तहबन्द और हमें बताया कि इन्हीं दोनों कपड़ों में हुज़ूर (सल्ल०) का विसाल हुआ था।

(सह़ीह़ बुख़ारी, मुस्लिम)

● हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि जब ख़्वारिज का ज़ुहूर हुआ तो मैं हज़रत अ़ली (रज़ि०) के पास आया। उन्होंने मुझसे फ़रमाया, "तुम इन लोगों (ख़्वारिज) के पास जाओ। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने बहुत ही अच्छे क़िस्म का एक यमनी जोड़ा पहना-इस वाक़िये के रावी अबू ज़मील कहते हैं कि इब्ने अ़ब्बास ख़ुद बहुत ह़सीन व जमील थे और आवाज़ भी ज़ोरदार थी-आगे इब्ने अ़ब्बास बयान फ़रमाते हैं कि जब मैं ख़्वारिज की जमाअ़त के पास पहुँचा तो उन्होंने मरहबा कहकर मेरा इस्तिक़बाल किया और साथ ही (एतिराज़ के तौर पर) कहा कि इतना अच्छा जोड़ा क्या है? (मतलब यह था कि इतना अच्छा जोड़ा सुन्नते नबवी और तक़्वे के ख़िलाफ़ है) (ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि तुम मेरे इस अच्छे लिबास पर क्या एतिराज़ करते हो। मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ह़सीन और बेहतर से बेहतर जोड़ा पहने हुए देखा है।

(सुनन अबी दाऊद)

● हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब कुर्ता पहनते तो दाहिनीं ओर से शुरु फ़रमाते। **(तिर्मिज़ी)**

● कभी-कभी आप (सल्ल०) ने निहायत क़ीमती और खुशनुमा लिबास भी पहना है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि०) जब हरुरिया के पास सफ़ीर बना कर भेजे गये तो यमन के निहायत क़ीमती कपड़े पहन कर गये, हरुरिया ने कहा, “क्यों इब्ने अब्बास, यह क्या लिबास है।” बोले, तुम इस पर एतिराज़ करते हो, मैंने तो हुज़ूर (सल्ल०) को बेहतर से बेहतर कपड़ों में देखा है।”

(अबू दाऊद-किताबुल्लिबास)

● नबी करीम (सल्ल०) ने एक बार सत्ताइस ऊँटनियों के बदले में एक जोड़ा ख़रीदा और पहना। **(ख़साइले नबवी)**

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का लिबास से सम्बन्धित तरीक़ा

१. हुज़ूर (सल्ल०) कुर्ते को पसंद फ़रमाते थे, आपके कुर्ते की आस्तीनें हाथों के पाहुँचों तक होती थीं, कुर्ते का गला सीने की तरफ़ होता था और इतना चौड़ा कि खुले होने पर एक सहाबी ने पुश्त की जानिब मुहरे नुबूव्वत को बरकत के लिए हाथ लगाया था। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

२. आप (सल्ल०) के कुर्ते की आस्तीन न ज्यादह तन्ग होती और न ज़्यादह कुशादह बल्कि दर्मियानी होतीं और आस्तीन हाथ के गट्टे तक रहती।

३. आप (सल्ल०) के सफ़र का कुर्ता वतन के कुर्ते से दामन और आस्तीन में कुछ छोटा होता था।

४. हुज़ूर (सल्ल०) के क़मीज़ का गिरेबान सीने पर होता था।

५. कभी-कभी आप (सल्ल०) अपने कुर्ते का गिरेबान खोल लिया करते और सीना मुबारक साफ़ नज़र आता और उसी हालत में नमाज़ पढ़ लेते।

६. जब आप (सल्ल०) क़मीज़ पहनते तो पहले दाहिना हाथ दाहिनी आस्तीन में डालते, फिर बांया बांई आस्तीन में।

७. आप (सल्ल०) ने पाइजामा नहीं पहना बल्कि हमेशा तहबन्द पहना है। अल्बत्ता

पाइजामा ख़रीदा है।

८. पायजामा को आपने पसंद फ़रमाया, लेकिन उम्र भर तहबन्द ही इस्तेमाल करते रहे। **(तिर्मिज़ी)**

९. आप (सल्ल०) तहबन्द हमेशा नाफ़ से नीचे बांधते जो आधी पिंडुली होता था।

१०. आप (सल्ल०) के तहबन्द का अगला हिस्सा पिछले हिस्से से नीचा होता था।

११. आप (सल्ल०) के ओढ़ने की चादर, चार गज़ लम्बी और दो गज़ एक बालिश्त चौड़ी होती थी।

१२. कभी-कभी आप (सल्ल०) चादर को सीधी बग़ल से निकाल कर उलटे कंधे पर डाल लेते।

१३. सफ़ेद लिबास आपको बहुत पसंद था। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

१४. जब लिबास पहनते यहां तक कि जूतियां भी पहनते तो पहले दाहिने तरफ़ से पहनना शुरु करते और जब लिबास या जूता उतारते तो बायें तरफ़ से उतारना शुरु करते। **(तिर्मिज़ी)**

१५. कपड़ा जब तक पेवन्द लगाने के लायक़ न हो जाता उसको रद्द न करते।

(तिर्मिज़ी)

१६. पायजामा, तहबन्द वग़ैरह टख़्नों से ऊपर होना चाहिए। **(तिर्मिज़ी)**

१७. आपका कुर्ता टख़्नों से ऊपर निस्फ़ पिंडली तक होता था। **(हाकिम)**

१८. आप (सल्ल०) नया लिबास जुमअः के दिन पहनते थे।

१९. आप (सल्ल०) को सफ़ेद लिबास बहुत पसंद था, लेकिन सब्ज़ भी पसंद था।

२०. आप (सल्ल०) दुआ पढ़ कर नया कपड़ा पहनते थे।

२१. आप (सल्ल०) ने पुराने कपड़े पेवन्द लगा कर भी पहने हैं।

२२. आपका लिबास चादर, लूंगी, कुर्ता, अमामा होता था, धारीदार चादर पसंद करते थे। अमामा के नीचे टोपी रखते थे, कभी सिर्फ़ टोपी पहनते किसी वक़्त सिर्फ़ अमामा ही बांध लेते। अमामा का शिमला कभी होता, कभी न होता। शिमला कमर की जानिब होता था, आपने कुबा भी पहनी है आपकी चादर मुबारक का तूल छः हाथ और अर्ज़ तीन हाथ एक बालिश्त था, और तहबन्द

का तूल चार हाथ एक बालिश था, और अर्ज़ दो हाथ एक बालिश्त था। तहबन्द पिंडुली तक होता था। चादर का रंग सुर्ख़ धारीदार सब्ज़ और स्याह रंग की ऊनी चादर बूटे वाली इस्तेमाल फ़रमाई है। शाह रूम ने पोस्तीन जिस पर रेशम की कढ़ाई थी, आपने उसको भी पहना। बाज़ रिवायात में पायजामा का ख़रीदना और पहनना भी आया है। सूती कपड़ा ज़्यादा इस्तेमाल फ़रमाते थे, आप (सल्ल०) ने क़ीमती कपड़ा भी इस्तेमाल फ़रमाया और आपका तकिया चमड़े का था जिसके अन्दर खजूर की छाल भरी हुई थी।

(शरह सफ़रुस्सआ़दत व नशरुत्तय्यिब)

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के अमामा बाँधने से सम्बन्धित ह़दीसें

● ह़ज़रत अम्र बिन हुरैस (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मिम्बर पर देखा उस वक़्त आप काले रंग का अमामा बांधे हुए थे और उसका किनारा आपके पीठ पर दोनों मोंढ़ों के दर्मियान लटका हुआ था।

(मुस्लिम)

● ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) सफ़ेद टोपी भी पहना करते थे। **(मोअ़जम कबीर, तबरानी)**

● आप (सल्ल०) के अमामः का शिमला कभी दाहिनी तरफ़ आगे होता था और कभी पीछे दोनों शानों के बीच में पड़ा रहता था और कभी-कभी पूरा लपेट लेते थे और उसका रंग काला होता था, इसी तरह अमामः के नीचे सर से चिपटी हुई टोपी या कपड़ा होता था, और फ़रमाते "हम में और मुश्रिकीन में यही फ़र्क है कि हम टोपियों पर अमामः बांधते हैं।" **(अबूदाऊद, किताबुल्लिबास)**

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का अमामा बाँधने का तरीक़ा

१. आप (सल्ल०) का अमामा तक़रीबन सात ग़ज़ लम्बा होता था।
२. आप (सल्ल०) अमामा में शिमला अर्थात नीचे कुछ कपड़ा छोड़ देते थे, जो तक़रीबन एक बालिश्त होता था।

३. आप (सल्ल०) के अमामों का शिमला दोनों शानों के दर्मियान की तरफ हुआ करता था जिसे कभी-कभी सर पर भी डालते थे।
४. अमामा के नीचे आप टोपी ज़रुर पहनते थे।
५. आप (सल्ल०) अक्सर सफ़ेद टोपी पहना करते थे, और कभी-कभी गाढ़ी टोपी भी पहनी है, जो सर से चिपटी हुई होती थी।
६. वतन में आप (सल्ल०) सर से चिपटी हुई टोपी ओढ़ा करते थे।
७. आप (सल्ल०) के सफ़र की टोपी उठी हुई बाड़दार होती थी जिस को कभी-कभी नमाज़ पढ़ते वक़्त अपने सामने सज्दः के लिए रख लिया करते थे।

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के जूता पहनने से सम्बन्धित ह़दीसें

● क़तादह (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर (सल्ल०) के नअ़लैन शरीफ़ कैसे थे, उन्होंने फ़रमाया कि हर एक जूता में दो-दो तस्में थे। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब जिहाद के एक सफ़र पर जा रहे थे। मैंने आपको सुना आप फ़रमा रहे थे, "लोगों जूतियां ज़्यादा ले लो क्योंकि आदमी जब तक पैर में जूता पहने रहता है वह सवार की तरह रहता है।" **(सह़ीह़ मुस्लिम)**

● ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब तुम में से कोई जूता पहने तो दाहिनें पैर में पहने और जब निकालने लगे तो पहले बायें पैर से निकाले, दाहिना पैर पहनने में पहले और निकालने में बाद में।" **(सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम)**

● ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जब कोई शख़्स तुम में से जूता पहने तो दायीं ओर से शुरु करे और जब निकाले तो बाईं ओर से। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● आप (सल्ल०) के नअ़लैन मुबारक इस तरह के थे, जिसे हमारे यहां चप्पल कहते हैं, यह केवल एक तला का होता था जिसमें तस्में लगे होते थे।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जूता पहनने का तरीक़ा

१. आप (सल्ल०) चप्पल की तरह या खड़ाऊं की तरह जूता पहनते थे।

२. जूता पहनते तो पहले सीधा पैर जूते में डालते फिर बांया पैर बांए जूते में और उतारते तो पहले बांया पैर जूते से निकालते फिर दाहिना पैर।

३. जूता कभी खड़े होकर पहनते कभी बैठकर।

४. आप (सल्ल०) जूता उठाते तो बांए हाथ के अंगूठे और उस के पास वाली उंगली से उठाते।

५. आप (सल्ल०) चप्पल में दो तस्में रखते, एक तस्मा अंगूठे और उसके बराबर वाली उंगली में रहता और दूसरा छिंगुलिया और उसके बराबर वाली उंगली में रहता।

६. आप (सल्ल०) का जूता एक बालिश्त दो अंगुल लम्बा और तल्वे के पास से सात अंगुल चौड़ा और दोनों तस्मों के दर्मियान नीचे से दो अंगुल फ़ासला होता था।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अँगूठी पहनने का तरीक़ा

१. आप (सल्ल०) चांदी की अंगूठी पहनते।

२. आप (सल्ल०) ने अंगूठी सीधे और उल्टे दोनों हाथों की छिंगुलियां में पहनी है।

३. अंगूठी का नगीना आप (सल्ल०) ने कभी चांदी का रखा और कभी हब्शी पत्थर का।

४. आप (सल्ल०) की अंगूठी का नगीना बजाए ऊपर के जानिब से हाथ के अंदर के हथेली की तरफ़ रखते।

५. आप (सल्ल०) के अंगूठी पर तीन सतरों में 'मुहम्मद' 'रसूलुल्लाह' खुदा हुआ था। 'मुहम्मद' नीचे की सतर में 'रसूल' उसके ऊपर की सतर में और 'अल्लाह' उसके ऊपर की सतर में।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ख़ुशबू लगाने का तरीक़ा

१. आप (सल्ल०) आख़िर रात में ख़ुशबू लगाया करते थे।

२. सोने से बेदार होते तो क़ज़ा-ए-हाजत से फ़ारिग़ होने के बाद वुज़ू करते और फिर ख़ुशबू मंगाकर लिबास पर लगाते।

३. ख़ुशबू अगर हदिया में पेश की जाती तो आप (सल्ल०) उसको ज़रुर क़ुबूल फ़रमाते और ख़ुशबू की चीज़ को वापस करने को नापसंद फ़रमाते।

४. रेहान की ख़ुशबू को बहुत पसंद फ़रमाते।

५. मेंहदी के फ़ूल को भी आप (सल्ल०) बहुत पसंद फ़रमाते।

६. इसी तरह ऊद की ख़ुशबू को तमाम ख़ुशबुओं से ज़्यादा महबूब रखते।

७. आप (सल्ल०) ख़ुशबू सर मुबारक पर भी लगा लेते।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सोने और जागने से सम्बन्धित ह़दीसें

● आप सुबह़ सवेरे बेदार होने के बाद दोनों हाथों से चेहरे और आंख को मलते ताकि नींद का ख़ुमार जाता रहे। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने लोगों को ऐसी छत पर सोने से मना फ़रमाया जिसमें मुंडेर न हो। **(तिर्मिज़ी)**

● ह़ज़रत अ़ली बिन शैबान (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी घर की ऐसी छत पर सोये जिस पर पर्दा और रुकावट की दीवार न हो तो उसकी ज़िम्मेदारी ख़त्म हो गई।

(सुनन अबी दाऊद)

● ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इस बात से मना फ़रमाया कि आदमी चित लेटने की ह़ालत में अपनी एक टांग उठाकर दूसरी टांग पर रखे। **(सह़ीह़ मुस्लिम)**

● ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक शख़्स को पेट के बल औंधा लेटा हुआ देखा तो आप ने फ़रमाया कि लेटने

का यह तरीक़ा अल्लाह को नापसंद है। **(तिर्मिज़ी)**

● हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह (सल्ल०) मेरे पास से गुज़रे मैं पेट के बल लेटा हुआ था तो आपने क़दम मुबारक से मुझे हिलाया और फ़रमाया, "ऐ जुन्दुब, यह दोज़ख़ियों के लेटने का तरीक़ा है।" **(सुनन इब्ने माजा)**

● हज़रत अबू क़तादह (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) का अ़मल और दस्तूर था कि जब आप रात में कहीं पड़ाव करते तो दाहिनीं करवट पर आराम फ़रमाते, और सुबह़ से कुछ पहले पड़ाव करते तो अपनी कलाई खड़ी कर लेते और सर मुबारक अपनी हथेली पर रखकर कुछ आराम कर लेते।

(शरहुसुन्नः)

● हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब बिस्तर पर रात को लेटते तो अपना हाथ रुख़्सार (गाल) मुबारक के नीचे रख लेते, और यह दुआ़ पढ़ते-

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيَا

"अल्लाहुम्म बिस्मिका अमूतु वअह़्या"

और फिर जब आप जागते तो यह दुआ़ पढ़ते-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ

"अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह़याना बअ़द मा अमातना व इलैहिन्नुशूर।"

(सह़ीह़ बुख़ारी)

● हज़रत उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब सोने का इरादा करते तो मिस्वाक़ अपने सिरहाने रख लेते, फिर जब बेदार होते तो सब से पहले मिस्वाक़ करते। **(मुस्नद अह़मद, मुस्तदरक ह़ाकिम)**

● हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) रात में सोते तो मिस्वाक़ ज़रुर करते। **(सुनन अबी दाऊद)**

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सोने और जागने का तरीक़ा और नसीह़तें

१. आप (सल्ल०) शुरु की रात में आराम फ़रमाते और आधी रात के बाद उठ जाते।

२. शुरु रात में जब गहरी नींद में होते तो दाहिने करवट इस तरह सोते कि दाहिने हाथ की हथेली दाहिने गाल के नीचे रख लेते और दुआ़ पढ़ते।

३. किसी शख़्स को पेट के बल औंधा लेटा हुआ या सोता हुआ देखते तो बहुत नाराज़ होते और पैर से छेड़ कर उसको उठा देते।

४. आप (सल्ल०) खजूर की छाल भरे चमड़े के गद्दे पर, या चटाई पर, या टाट पर या बान की बुनी हुई चारपाई पर, कभी सिर्फ़ चमड़े या स्याह कपड़े पर, और कभी ज़मीन पर आराम फ़रमाया करते थे।

५. जिस टाट पर आप (सल्ल०) आराम फ़रमाते उसको सिर्फ़ दो बार तह कर के बिछाने का हुक्म देते, आप (सल्ल०) सोने में ख़र्राटे लेते थे।

६. आप (सल्ल०) कभी चित लेटते और पैर पर पैर रख कर आराम फ़रमाते मगर इस तरह कि सतर न खुलता, अगर सतर खुलने का अन्देशा होता, तो ऐसे लेटने से आप (सल्ल०) मना फ़रमाते।

७. अ़िशा से पहले आप (सल्ल०) नहीं सोते थे।

८. अगर आप (सल्ल०) जनाबत की हालत में आराम करना चाहते तो पहले नापाक जगह को धो लेते, फिर सोते।

९. आप (सल्ल०) आम तौर पर वुज़ू करके सोते।

१०. अगर रात में आंख खुलती तो क़ज़ा-ए-ह़ाजत के बाद सिर्फ़ चेहरा और हाथ धो कर सो जाते।

११. सोने से पहले दूसरे कपड़े की तहबन्द बांधते और कुर्ता उतारने के बाद आराम करते।

१२. रात को आपके सरहाने एक सुर्मादानी रखी रहती, जिसे आप लगा कर सोते थे, और सुर्मादानी का रंग काला होता था।

१३. आप (सल्ल०) के पेशाब करने के लिए चारपाई के नीचे एक लकड़ी की हाजती रखी रहती जिसे आप (सल्ल०) कभी-कभी पेशाब के लिए इस्तिमाल फ़रमाते।

१४. आप (सल्ल०) सुर्मा लगाते तो दोनों आँख में तीन-तीन बार सलाई लगाते, और कभी हर आंख में दो-दो बार और आख़िरी एक सलाई दोनों आंखो में लगाते।

१५. आप (सल्ल०) सोते वक़्त अपने घर वालों से कुछ बातें किया करते थे, कभी घर के बारे में और कभी मुसलमानों के बारे में।

१६. आप (सल्ल०) हर रात को तकिया पर सर रख कर 'कुल हुवल्लाहु अह़द' 'कुल अऊज़ुबिरब्बिल्फ़लक़' और 'कुल अऊज़ुबिरब्बिन्नासि' एक-एक बार पढ़ कर दोनों हाथों की मुट्ठियों में फूंक लेते फिर उनको खोल कर पूरे बदन पर जहां तक हाथ जाता मल लेते, और हाथों को सर और चेहरे से नीचे की तरफ़ तीन बार फेरते। **(तिर्मिज़ी)**

१७. घर के दरवाज़े 'बिस्मिल्लाहिर्रह़ीम' पढ़कर बंद करें और 'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम' पढ़कर कुंडी लगाए। जिन बर्तनों में खाने पीने की चीज़ें हों उन सब को 'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम' पढ़कर ढ़ांक दे। **(बुख़ारी)**

१८. आग जल रही हो या सुलग रही हो उसको बुझा दें। **(बुख़ारी)**

१६. जिस रौशनी से आग लगने का ख़त्रा हो उसको बुझा दें। **(बुख़ारी)**

२०. बीवी बच्चों से अच्छी-अच्छी बातें करें। **(तिर्मिज़ी)**

२१. जब बच्चे नौ दस साल की उमर को हो जायें तो बहन भाई के बिस्तर अलग-अलग कर दें। **(मिश्कात)**

२२. सोने के लिए मिस्वाक कर लें। **(मिश्कात)**

२३. खुद बिस्तर बिछाएँ। **(मुस्लिम)**

२४. तकिया लगाएँ। **(मुस्लिम)**

२५. दाहिनी करवट क़िब्ला रुख़ होकर सोएँ। **(बुख़ारी)**

२६. दाहिनी हाथ के ऊपर सर रखकर सोएँ। **(बुख़ारी)**

२७. तहज्जुद की नमाज़ के लिए नियत करके सोएँ। **(नसई)**

२८. सुबह सवेरे ख़्वाब से बेदार होने से चेहरे और हाथों को मले ताकि नींद का खुमार जाता रहे। **(शमायले तिर्मिज़ी)**

२६. नींद से जब आप (सल्ल०) बेदार होते तो यह अल्फ़ाज़ कहते-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ

"अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह़याना बअ़द मा अमातना व इलैहिन्नुशूर।"

(बुख़ारी, अबूदाऊद, नसई)

३०. जब सोकर उठें तो मिस्वाक करें। **(मुस्नद अह़मद, अबूदाऊद)**

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के कंघा और तेल लगाने से सम्बन्धित ह़दीसें

● ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) के बाल मुबारक आधे कान तक थे। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● ह़ज़रत आ़ईशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि मैं हुज़ूर (सल्ल०) के बालों में कंघा करती थी, हालांकि मैं हाइज़ा होती थी। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● ह़मीद बिन अ़ब्दुर्रह़मान (रज़ि०) नक़्ल करते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) कभी-कभी कंघा किया करते थे। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● आप (सल्ल०) के सर के बाल अक्सर शाने तक लटके रहते थे, फ़तेह़ मक्का में लोगों ने देखा तो शानों पर चार गेसू पड़े हुए थे।

● मुश्रिकीने अ़रब बालों में मांग निकालते थे, हुज़ूर (सल्ल०) चूंकि कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में अहले किताब की तरफ़दारी करते थे इस लिए आप भी शुरु में अहले किताब की तरह बाल रखते थे, फिर मांग निकालने लगे। **(अबू दाऊद)**

● हज़रत आ़इशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) अपने कंघी करने में, और जूता पहनने में और वुज़ू करने में दाएँ से शुरू फ़रमाते थे।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

● हुज़ूर (सल्ल०) अक्सर तेल लगाते, और कंघा भी करते थे, आप (सल्ल०) के सिर्फ चन्द बाल सफ़ेद हुए थे।

● हज़रत आ़इशा (रज़ि०) से रिवायत है कि जब मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बालों की मांग निकालना चाहती तो आप के सर मुबारक के बीचों बीच से मांग चीरती और आप (सल्ल०) के पेशानी के बालों को दोनों तरफ़ लटका देती। दोनों आंखों की बीच की सीध अर्थात आधे इधर और आधे उधर।

(सुनन अबी दाऊद)

● वायल बिन हजर (रज़ि०) से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया मेरे सर के बाल लम्बे-लम्बे थे। जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुझे देखा तो फ़रमाया, "इतने लम्बे बाल रखना नहूसत है, मैं यह सुनकर लौट गया और बालों को क़तर कर दूसरे रोज़ आया।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मैंने तेरे साथ बुराई नहीं की, अब इस तरह अच्छा है।"

आप (सल्ल०) की रफ़्तार बहुत तेज़ थी, इस लिए जब चलते तो मालूम होता कि ढलवान ज़मीन से उतर रहे हैं।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कंघा और तेल लगाने का तरीक़ा

१. आप (सल्ल०) सोते वक़्त मिस्वाक करते, वुज़ू करते और सर के बाल व दाढ़ी मुबारक में कंघा करते।

२. आप (सल्ल०) सात चीज़ें अपने साथ रखते (१) तेल की शीशी (२) कंघा (३) सुर्मादानी (४) क़ैंची (५) मिस्वाक (६) आइना (७) एक छोटी सी लकड़ी (सीक)

३. आप (सल्ल०) का कंघा हाथी के दांत का था जिसे आप (सल्ल०) दाढ़ी और सर मुबारक में तेल लगाने के बाद इस्तेमाल फ़रमाते।

४. दाढ़ी में तेल ऊपर से लगाते जो गर्दन से मिला हिस्सा है, और सर में तेल

लगाते तो पहले पेशानी की तरफ़ से शुरु करते।

५. आप (सल्ल०) ने अक्सर सर पर बाल रखे हैं, कभी कान की लौ से ऊंचे रखे, कभी कान की लौ तक और कभी उससे नीचे कंधे तक।

६. शुरु में आप (सल्ल०) मांग नहीं निकालते थे, मगर बाद में आप (सल्ल०) मांग निकालने लगे थे।

७. आप (सल्ल०) कभी-कभी पानी लगा कर भी दाढ़ी में कंघा किया करते थे।

८. आप (सल्ल०) जब आइना देखते तो यह दुआ़ पढ़ते-

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَحَسِّنْ خُلُقِیْ

"अल्हम्दु लिल्लाह, अल्लाहुम्म कमा ह़स्सन्त ख़ल्क़ी फ़ह़स्सिन ख़ुलुक़ी।"

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नाख़ून और दाढ़ी कटवाने से सम्बन्धित ह़दीसें

● हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि यह पांच चीज़ें इंसान की फ़ित्रत में हैं और दीने फ़ित्रत के ख़ास एह़काम हैं।

१- ख़त्ना २- ज़ेरे नाफ़ के (नाफ़ के नीचे के) बालों की सफ़ाई ३- मूंछे तराशना ४- नाख़ून कटाना ५- बग़ल के बाल साफ़ करना।

(सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम)

● हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि मूंछे तरश्वाने, और नाख़ून काटने और बग़ल व ज़ेरे नाफ़ की सफ़ाई के बारे में हमारे लिए ह़द मुक़र्रर कर दी गई है कि चालीस दिन से ज़्यादा न छोड़ें। **(सह़ीह़ मुस्लिम)**

● हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसुलुल्लाह (सल्ल०) हर जुमा को नमाज़े जुमा को निकलने से पहले अपने नाख़ून तराशते और लबे बनवाते थे। **(कन्ज़ुल उम्माल)**

● हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०)

ने फ़रमाया कि मूछों को ख़ूब बारीक करो और दाढ़ियाँ छोड़ो।

(सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम)

● ह़ज़रत अ़म्र बिन शुऐब अपने वालिद शुऐब से और वह अपने दादा अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने दाढ़ी मुबारक के बालों के अ़र्ज़ (चौड़ाई) से भी और तूल (लम्बाई) से भी कुछ तरश्वा देते थे। **(तिर्मिज़ी)**

● ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जिस शख़्स के बाल हों तो उसको चाहिए कि वह उन बालों का इकराम करे।" **(सुनन अबी दाऊद)**

● (ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) के ख़ादिम) नाफ़े ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन (रज़ि०) से रिवायत करते हैं कि आप मना फ़रमाते थे 'क़ज़अ़' से, नाफ़े से पूछा गया कि 'क़ज़अ़' क्या है? उन्होंने कहा कि 'क़ज़अ़' यह है कि बच्चे के सर के कुछ ह़िस्सा के बाल मूंड दिये जायें और कुछ ह़िस्सा के छोड़ दिये जायें। **(सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम)**

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के नाख़ून काटने का तरीक़ा

१. हाथ के नाखून कटवाने में आप (सल्ल०) पहले दाहिने हाथ के शहादत की उंगली, फिर बीच की उंगली, फिर बीच की उंगली के बराबर वाली उंगली, फिर छिंगुलिया, फिर बाएं हाथ की छिंगुलिया, फिर उसके बराबर वाली उंगली फिर बीच की उंगली, फिर शहादत की उंगली, फिर अंगूठा, फिर आख़िर में सीधे हाथ के अंगूठे के नाखून कटवाते।

२. पैर के नाखून काटने में आप (सल्ल०) पहले दाहिने पैर की छिगुंलिया से शुरु करते और अंगूठे तक ख़त्म करते फिर बांए पैर की छिगुंलिया से शुरु करते और अंगूठे पर ख़त्म करते।

३. आप (सल्ल०) नाखून पंद्रहवें दिन काटते थे।

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के सफ़र से सम्बन्धित ह़दीसें

● ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सरजस (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) सफ़र करते तो पनाह मांगते सफ़र की मशक़्क़त से मेह़नत से, वापसी से, बुरी ह़ालत से (आ़माल और अहल व माल में ज़्यादती के बाद नुक़सान से, मज़लूम की बद्दुआ़ से और वापस आकर) अहल व माल को बुरी ह़ालत में देखने से। **(मुस्लिम)**

● ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया सलाम करे सवार पैदल पर, और पैदल चलने वाला बैठे हुए पर और सलाम करें थोड़े लोग बहुत लोगों पर। **(मुस्लिम)**

● ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया फ़रिश्ते साथ नहीं रहते उन मुसाफ़िरों के जिनके साथ घंटा हो या कुत्ता हो। **(मुस्लिम)**

● ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "घंटा शैतान का बाजा है।" **(मुस्लिम)**

● ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "बचो! तुम रास्ते में बैठने से।" लोगों ने कहा, "या रसूलल्लाह! हमको अपनी मजलिसों में बैठना ज़रूरी है बातें करने के लिए।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अगर तुम नहीं मानते तो रास्ते का ह़क़ अदा करो।" लोगों ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह! रास्ते का ह़क़ क्या है।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "आंख नीची रखना रास्ते में तक्लीफ़ न देना (किसी को चलने में), सलाम का जवाब देना, अच्छी बात का हुक्म करना और बुरी बात से मना करना।" **(मुस्लिम)**

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के सफ़र करने का तरीक़ा

१. आप (सल्ल०) सफ़र के लिए ख़ुद रवाना होते या किसी को रवाना करते, तो जुमेरात को, लेकिन इसे ज़रुरी नहीं समझते।

२. आप (सल्ल०) सफ़र में सवारी को ज़्यादहतर तेज़ रफ़्तार से चलाना पसंद फ़रमाते, और जब देखते कि रास्ता लम्बा है तो रफ़्तार और तेज़ कर देते।
३. सफ़र अक्सर आप (सल्ल०) सुबह् के वक़्त करते।
४. सफ़र में आप (सल्ल०) जहां ठहरते कम से कम दो रकअ़त नमाज़ ज़रुर पढ़ते।
५. आप (सल्ल०) जब घर में दाख़िल होते या सफ़र में कहीं मंज़िल पर पड़ाव डालते तो जब तक दो रकअ़त नमाज़ न पढ़ लेते उस वक़्त तक न बैठते थे।
६. अगर पिछली रात कहीं पड़ाव डालते तो दाहिने हाथ की कोहनी के बल खड़ा करके उसकी हथेली पर अपना सर मुबारक रख कर आराम फ़रमाते।
७. आप (सल्ल०) से कोई सफ़र से वापसी के बाद मिलता तो आप (सल्ल०) उससे मुआ़नक़ा (गले मिलते) करते और उसकी पेशानी पर बोसा देते।
८. जब किसी को सफ़र के लिए रुख़सत फ़रमाते तो उससे दुआ़ का मुतालबा करते कि अपनी दुआ़ में हमको न भूलना।
९. जब आप (सल्ल०) अपने साथियों के साथ होते और कोई काम सब को करना होता (जैसे खाना वग़ैरह पकाने का) तो आप (सल्ल०) काम काज में ज़रुर हिस्सा लेते, जैसे एक बार सब साथियों ने खाना पकाने का इरादा किया और सबने एक-एक काम अपने ज़िम्मे लिया तो आप (सल्ल०) ने लकड़ियां चुन कर लाने का काम अपने ज़िम्मे लिया।
१०. सफ़र से वापसी पर आप (सल्ल०) सीधे घर तशरीफ़ नहीं ले जाते बल्कि पहले मस्जिद में जाकर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ते फिर घर तशरीफ़ ले जाते।
११. सफ़र से वापसी पर शहर के रास्ते में बच्चे मिलते तो उनको आप (सल्ल०) अपनी सवारी पर बिठा लेते छोटे बच्चे को अपने आगे और बड़े को अपने पीछे।
१२. आप (सल्ल०) जब सफ़र में जिहाद के लिए जाते तो हर दिन सहाबा में से किसी एक सहाबी को अपनी सवारी पर बिठाते।
१३. जब आप (सल्ल०) सफ़र के लिए रवाना होते और सवारी पर अच्छी तरह

बैठ जाते तो तीन बार 'अल्लाहुअकबर' कहते और फिर यह दुआ़ पढ़ते।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ۔ سُبْحَانَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا ھٰذَا وَمَا کُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَاِنَّآ اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

"अल्ह़म्दुलिल्लाहिल्लज़ी सख़्ख़र लना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून।"

जब आप (सल्ल०) सफ़र से वापस होते तो यही दुआ़ पढ़ते लेकिन उसके साथ यह अल्फ़ाज़ और बढ़ा देते।

اٰئِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ

"आइबूना ताइबूना आ़बिदूना लिरब्बिना ह़ामिदून।"

१४. जब किसी ऊंचाई पर सवारी चढ़ती तो तीन बार 'अल्लाहुअकबर' कहते और यह फ़रमाते–

اللھمَّ لَکَ الشَّرَفُ علی کلِّ شَرِیْفٍ وَلکَ الْحَمْدُ عَلٰی کُلِّ حَسنٍ

''अल्लाहुम्म लकश्शर्फ़ु अ़ला कुल्लि शरीफिन व लकलह़म्दु अ़ला कुल्लि हसनिन''

१५. जब नीचे की ओर सवारी उतरती तो फ़रमाते 'सुब्ह़ानल्लाहि' तीन बार और रिकाब में पैर रखते वक़्त फ़रमाते 'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम।

१६. जब आप (सल्ल०) किसी को सफ़र के लिए रुख़सत फ़रमाते तो यह दुआ़ पढ़ते।

اَسْتَوْدِعُ اللّٰہَ دِیْنَکَ وَاَمَانَتَکَ وَخَوَاتِیْمَ عَمَلِکَ

'इस्तौदिअुल्लाह दीनक् व अमानतक व ख़वातिमु अमलिक'।

१७. जब सफ़र से अपने घर में दाखिल होते तो यह दुआ़ पढ़ते–

تَوْبًا تَوْبًا لِرَبِّنَا اَوْبًا لَّا یُغَادِرُ عَلَیْنَا حَوْبًا

''तौबन-तौबन लिरब्बिना अवबन ला युग़ादिरु अ़लैना ह़ौबन।''

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के क़ज़ा-ए-ह़ाजत (इस्तिन्जा) से सम्बन्धित ह़दीसें

● ह़ज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम जब पाख़ाना (लैट्रीन) के लिए जाओ तो कअ़बः की

ओर न मुँह करो और न उसकी ओर पीठ करो।” **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

● हज़रत सलमान (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हमें इस से मना किया कि हम पाख़ाना व पेशाब के वक़्त कअ़बः की ओर मुँह करें, या हम दाहिने हाथ से इस्तिंजा करें, या हम तीन पत्थरों से कम में इस्तिंजा करें, या हम हड्डी से, या नजिस चीज़ से इस्तिंजा करें। **(मुस्लिम)**

● हज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) बयान करते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) दो क़ब्रों के पास से गुज़रने लगे तो फ़रमाया,“इन दोनों क़ब्र वालों को अ़ज़ाब दिया जा रहा और अ़ज़ाब किसी बड़ी बात के सिलसिले में नहीं दिया जा रहा है, बल्कि इन दोनों में से एक शख़्स तो वह है जो पेशाब से अपने को नहीं बचाता था और दूसरा शख़्स वह है जो चुग़लख़ोरी करता फिरता था।” फिर आप (सल्ल०) ने खजूर की एक टहनी लेकर उसको आधी-आधी करके एक-एक क़ब्र पर गाड़ दिया। यह देखकर सहाबा ने अ़र्ज़ किया, “आप (सल्ल०) ने यह किस लिए किया?” आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “उम्मीद है कि यह टहनियां हरी रहेंगी उस वक़्त तक दोनों के अ़ज़ाब में कमी होती रहेगी।” **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

● हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, “इन दोनों चीज़ों से बचो जो लानत का ज़रिया हैं।” सहाबा ने पूछा, “या रसूलल्लाह! वह दो चीज़ें क्या हैं?” इर्शाद हुआ जो शख़्स लोगों के रास्ते या उनके साया लेने की जगह में पाख़ाना करे। **(मुस्लिम)**

● हज़रत अनस (रज़ि०) बयान करते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) जब पाख़ाना को जाते तो मैं और एक दूसरा ख़ादिम पानी का बर्तन और बरछी लेकर जाते, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पानी से इस्तिंजा करते। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

● हज़रत जाबिर (रज़ि०) बयान करते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) हाजत के लिए जब इरादा फ़रमाते तो इतनी दूर तक जाते कि जहां आपको कोई देख नहीं सकता था। **(अबूदाऊद)**

● हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, “तुम में से कोई शख़्स जब पाख़ाना को जाए तो उसको अपने साथ तीन पत्थर ले जाने चाहिए जिसके ज़रिये वह इस्तिंजा करे, तो वह तीन पत्थर उसके

लिए काफ़ी होंगे।” **(अहमद, अबूदाऊद, नसई, दारमी)**

● हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सरजस (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, “तुम में से कोई शख़्स किसी सुराख़ में पेशाब न करे।”

(सुनन अबीदाऊद, नसई)

● हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, “तुम में कोई भी शख़्स अपने ग़ुस्लख़ाना में पेशाब न करे” फिर वहीं नहाए और वुज़ू करे क्योंकि इससे अक्सर वस्वसे पैदा होते हैं।

(अबी दाऊद, तिर्मिज़ी, नसई)

● हज़रत अबूसईद (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, “दो आदमी पाख़ाना करने के लिए इस तरह न निकलें कि वह दोनों एक दूसरे के सामने सतर खोले रहें और बातें करते रहें।”

(अहमद, इब्ने दाऊद, इब्ने माजा)

● हज़रत उमर (रज़ि०) बयान करते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) ने मुझको इस हाल में देखा कि मैं खड़ा हुआ पेशाब कर रहा था तो फ़रमाया ऐ उ़मर! खड़े होकर पेशाब न किया करो।” फिर उसके बाद मैंने कभी खड़े होकर पेशाब नहीं किया। **(तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)**

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का बैतुलख़ला जाने का तरीक़ा और हुक्म

१. जब हुज़ूर (सल्ल०) बैतुलख़ला में तशरीफ़ ले जाते तो जूता पहन कर और सर ढ़ांक कर जाते। **(इब्ने सअ़द)**

२. हुज़ूर (सल्ल०) बैतुल ख़ला (लैट्रीन) में दाख़िल होते तो बायां पैर पहले अन्दर रखते और जब बाहर निकलते तो दायां पैर पहले निकालते, और जाते वक़्त यह दुआ़ पढ़ते-

بِسْمِ اللّٰهِ. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَآئِثِ

“बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिनलख़ुबुसि वल्ख़बाइसि।”

३. बैतुलख़ला में दाख़िल होते वक़्त पहले बायां पैर रखे, और क़दमचे पर सीधा

पैर रखे और उतरने में बायां पैर क़दमचे से नीचे रखे। **(ज़अ़दुल मआ़द)**

४. जब बदन नंगा करे तो आसानी के साथ जितना नीचा होकर खोल सकें उतना ही बेहतर है। **(तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)**

५. बैतुलख़ला जाने से पहले अंगूठी या किसी चीज़ पर कुर्आन शरीफ़ की आयत या हुज़ूर (सल्ल०) का मुबारक नाम लिखा हो तो उसको उतार कर बाहर ही छोड़ दें, फ़राग़त के बाद बाहर आकर पहन लें। तावीज़ जिसको मोमजामा कर लिया गया हो या कपड़े में सी लिया गया हो उसको पहनकर जाना जायज़ है। **(नसई)**

६. हाजत करते वक़्त क़िब्ला की तरफ़, न चेहरा करें और न उस तरफ़ पीठ करें। **(तिर्मिज़ी)**

७. हाजत करते वक़्त बिला ज़रुरत बात न करें और न अल्लाह का ज़िक्र करें। **(मिश्कात)**

८. पेशाब करते वक़्त या इस्तिंजा करते वक़्त ख़ास अंग को दायां हाथ न लगायें बल्कि बायां हाथ लगायें। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

६. पेशाब पाख़ानों की छींटो से बहुत बचें क्योंकि अक्सर अ़ज़ाबे क़ब्र पेशाब की छींटों से न बचने की वजह से होता है। **(मिश्कात)**

१०. कहीं- कहीं बैतुलख़ला नहीं होता तो उस वक़्त ऐसी आड़ की जगह में करना चाहिए जहां दूसरे आदमी की निगाह न पड़े। **(तिर्मिज़ी)**

११. पेशाब करने के लिए नर्म ज़मीन तलाश करें, ताकि पेशाब की छीटें न उड़ें। **(तिर्मिज़ी)**

१२. आप (सल्ल०) पेशाब करना चाहते तो नर्म ज़मीन की तलाश रहती, अगर आप (सल्ल०) को नर्म ज़मीन न मिलती तो लकड़ी या किसी और चीज़ से सख़्त ज़मीन को खोद कर नर्म कर लेते, फिर पेशाब करते।

१३. जब आप (सल्ल०) 'क़ज़ा-ए-हाजत' के लिए जाते तो इतनी दूर जाते कि नज़रों से ग़ायब हो जाते, बल्कि कभी-कभी शहर से दो-दो मील दूर निकल कर 'क़ज़ा-ए-हाजत' के लिए बैठते।

१४. बैठकर पेशाब करें खड़े होकर पेशाब न करें। **(तिर्मिज़ी)**

१५. पेशाब करने के लिए उकड़ू बैठते तो रानों के दर्मियान काफ़ी फ़ासला रखते।

१६. इस्तिन्जे के बाद आप (सल्ल०) अपने बाएँ हाथ को मिट्टी से रगड़ कर धोते और पाक करते।

१७. 'क़ज़ा-ए-हाजत' को बैठने के लिए रेत, मिट्टी का ढ़ेला, या पत्थरों की ठिकरी, या किसी खुजूर वग़ैरह की आड़ को पसंद फ़रमाते।

१८. आप (सल्ल०) 'रफ़-ए-हाजत' के लिए बैठते तो क़िबले की तरफ़ न मुंह करते और न पुश्त (पीठ)।

१६. 'क़ज़ा-ए-हाजत' के बाद सफ़ाई के लिए आप (सल्ल०) मिट्टी के ढेले ज़रुर लेकर जाते और वह तादाद में हमेशा ताक़ (विषम) होते।

२०. बैतुलख़ला से निकलते वक़्त पहले दायां पैर बाहर निकालें। **(तिर्मिज़ी)**

२१. बैतुलख़ला से बाहर आते वक़्त यह दुआ पढ़ें-

غُفْرَانَکَ ۔اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَذْهَبَ عَنِّیِ الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

(तिर्मिज़ी)

"गुफ़रनका अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़हबा अ़न्निल्अज़ा व आ़फ़ानी"

२२. पेशाब करने के बाद इस्तिंजा सुखाना हो तो दीवार वग़ैरह की आड़ में खड़े होना चाहिए। बाज़ारों और सड़कों पर चल फिर कर इस्तिंजा सुखाना बेहयाई की बात है। **(तहावी)**

२३. सुबह़ सादिक़ हो जाने के बाद गुस्ल करने में देर न करना चाहिए। **(तिर्मिज़ी)**

गुस्ल करने का सुन्नत तरीक़ा

१. पहले दोनों हाथ पहुंचों तक तीन मर्तबा धोएँ, फिर बदन, फिर किसी जगह मनी या नापाकी लगी हो तो उसको तीन मर्तबा पाक करें, फिर छोटा और बड़ा दोनो इस्तिंजा करे, उसके बाद सुन्नत तरीक़े पर वुज़ू करें। अगर नहाने का पानी क़दमों

में जमा हो रहा हो तो पैरों को न धोए। उस जगह से अ़लैहिदा होने के बाद धोए वरना उसी वक़्त धो ले। उसके बाद सर पर पानी डाले फिर दायें कंधे पर फिर बायें कंधे, पर फिर बदन को हाथ से मले। यह एक दफ़ा हुआ।

फिर दोबारा इसी तरह पानी डाले, पहले सर पर, फिर दायें कंधे पर, फिर बायें कंधे पर फिर इसी तरह तीसरी बार पानी सर से पैर तक बहाए। **(तिर्मिज़ी)**

२. ग़ुस्ल के बाद बदन को कपड़े से साफ़ करना भी साबित है और न साफ़ करना भी, इसलिए दोनों में से जो भी सूरत हो सुन्नत की नियत कर ले। **(मिश्कात)**

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के चलने का तरीक़ा

● ह़ज़रत ह़सन (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने अपने मामू से सुना कि जब आप (सल्ल०) चलते तो कूव्वत से क़दम उठाते और आगे को झुककर तशरीफ़ ले जाते। आप (सल्ल०) का क़दम ज़मीन पर आहिस्ता पड़ता ज़ोर से नहीं पड़ता था। आप तेज़ रफ़्तार थे और ज़रा कुशादा क़दम रखते, छोटे क़दम नहीं रखते थे। जब आप चलते तो ऐसा मालूम होता था कि पस्ती में उतर रहे हैं और जब किसी ओर तवज्जोह फ़रमाते तो पूरे बदन से फिरकर तवज्जोह फ़रमाते। आप (सल्ल०) की नज़र नीची रहती थी। आप की निगाह आसमान से ज़मीन की तरफ़ ज़्यादा रहती थी यानी शर्म और ह़या की वजह से पूरी आँख भरकर नहीं देखते थे। चलने में सहाबा को अपने आगे कर देते थे और आप पीछे रह जाते थे, जिससे मिलते सलाम करने में ख़ुद पहल करते। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

१. चलते वक़्त हुज़ूर (सल्ल०) अपने बदन को आगे की तरफ़ झोंक कर चलते जिस तरह कोई बुलन्दी से नीचे की तरफ़ उतर रहा हो।
२. आप (सल्ल०) क़दम लम्बे-लम्बे उठाकर रखते, घसीट कर न चलते।
३. आप (सल्ल०) ऐसे तेज़ चलते कि मामूली रफ़्तार वाला आदमी, आप (सल्ल०) के साथ चलने में पीछे रह जाता।
४. आप (सल्ल०) अपने साथियों के साथ चलते तो सबसे पीछे चलते और अपने सब साथियों को आगे रखते और फ़रमाते मेरे पीछे फ़रिश्तों को चलने दो।

५. आप (सल्ल०) चलते वक़्त बदन को ढीला नहीं रखते बल्कि बदन को चुस्त और सिमटा हुआ रखते।
६. चलते वक़्त दायें-बायें नहीं देखते।
७. आप (सल्ल०) चलने में किसी चीज़ की तरफ़ मुड़ कर देखते तो पूरे जिस्म से मुड़ते सिर्फ़ गर्दन या नज़र नहीं फेरते।
८. चलते वक़्त कभी-कभी आप (सल्ल०) अपने साथी का हाथ पकड़ कर चलते।
९. चलते वक़्त आप (सल्ल०) अपनी तह़बन्द को पीछे से ऊँचा कर लेते।

हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के सलाम करने का तरीक़ा

● सलाम करने का सुन्नत तरीक़ा यह है कि सलाम करने वाला 'अस्सलामु अ़लैकुम' कहे। (अगर दूर से करे तो हाथ का इशारा करते हुए ज़बान से भी अस्सलामु अ़लैकुम कहे) वरना यहूद और नसारा की तरह कहलाएगा, जो ख़िलाफ़े सुन्नत है। **(तिर्मिज़ी)**

● जब किसी मुसलमान भाई से सलाम करें तो उसकी ख़ैरियत पूछें और पूरा सलाम करें कि सलाम के बाद मुसाफ़ह भी करें। (औ़रतें औ़रतों से मुसाफ़ह कर सकती हैं।) **(मुस्नद अह़मद, तिर्मिज़ी)**

● जब कोई अपने घर जाए तो अपने घरवालों को सलाम करे कि उसके घरवालों के लिए बरकत होगी और उसके लिए भी। **(तिर्मिज़ी)**

● आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "कलाम से पहले सलाम करना चाहिए।" **(तिर्मिज़ी)**

● जो शख़्स सवारी पर सवार हो तो उसको चाहिए कि पैदल चलने वालों को सलाम करे, जो चल रहा हो वह बैठे हुए को सलाम करे, और जो लोग तादाद में कम हों, वह किसी बड़ी जमाअ़त में से गुज़रें तो उनको चाहिए कि वह सलाम में पहल करें। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

● बुख़ारी की एक और रिवायत में है कि छोटा सलाम करे बड़े को। **(बुख़ारी)**

● बच्चों को भी सलाम करना सुन्नत है, जब यहूद और नसारा तुमको सलाम करें तो उनके जवाब में 'वअ़लैकुम' कहो। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

● एक मुसलान भाई से बार बार मुलाक़ात हो तो बार-बार सलाम करे और जिस तरह पहली मुलाक़ात के वक़्त सलाम करना मस्नून है इसी तरह रुख़्सत के वक़्त भी सलाम मस्नून है। **(तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)**

● किसी मुसलमान के लिए जायज़ नहीं कि वह अपने किसी मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा तअ़ल्लुक़ ख़त्म रखे। जब वह मिले तो वह एक तरफ़ मुँह फेर ले और दूसरा शख़्स दूसरी तरफ़, और दोनों में अच्छा वह है जो सलाम की पहल करे। **(बुख़ारी)**

हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के मुआ़नक़े व मुसाफ़ह करने का तरीक़ा

● जब दो मुसलमान मिलें और मुसाफ़ह करें तो उन दोनों के अलग होने से पहले उनको बख़्श दिया जाता है, और अबूदाऊद की रिवायत में यह भी है कि जब दो मुसलमान आपस में मिलें और मुसाफ़ह करें और अल्लाह की ह़म्द करें और बख़्शिश चाहें तो उनको बख़्श दिया जाता है। **(तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)**

● ह़ज़रत ज़ैद बिन ह़ारसा जब मदीना आए तो नबी करीम (सल्ल०) के यहां पहुंच कर दरवाज़ा खट्खटाया तो आप (सल्ल०) अपनी चादर घसीटते हुए दरवाज़े पर पहुँचे और उनसे मुआ़नक़ा किया (यानी गले लगाया) और पेशानी पर बोसा दिया।) **(तिर्मिज़ी)**

● हुज़ूर (सल्ल०) का यह मामूल था कि जब कोई आप (सल्ल०) के पास आकर आप (सल्ल०) से मुसाफ़ह करता तो आप (सल्ल०) अपना हाथ उसके हाथ से उस वक़्त तक नहीं खींचते थे जब तक कि वह ख़ुद अपना हाथ न खींच ले।

हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के गुफ़्तुगू करने से सम्बन्धित ह़दीसें

● ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) की गुफ़्तुगू तुम लोगों की तरह लम्बी-लम्बी नहीं होती थी। बल्कि हर मज़मून साफ़-साफ़ दूसरे से बेहतर होता है। पास बैठने वाले अच्छी तरह से ज़ेहन नशीन कर लेते थे। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● ह़ज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) कलाम को तीन-तीन बार दोहराते ताकि सुनने वाले अच्छी तरह समझ लें। **(तिर्मिज़ी)**

● ह़ज़रत ह़सन (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने अपने मामू हिन्द बिन अबीहाला से (जो हुज़ूर (सल्ल०) के औसाफ़ बयान फ़रमाते थे) अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर (सल्ल०) की गुफ़्तगू की कैफ़ियत मुझसे बयान फ़रमाइए। उन्होंने बयान फ़रमाया हुज़ूर (सल्ल०) (आख़िरत के) ग़म में हमेशा फ़िक्रमंद रहते थे। (उम्मत के लिए) हर वक़्त सोच में रहते थे। जिसकी वजह से किसी वक़्त आप (सल्ल०) को बेफ़िक्री और राह़त नहीं होती थी। अक्सर अवक़ात ख़ामोश रहते थे। बिला ज़रुरत गुफ़्तगू नहीं फ़रमाते थे। आप (सल्ल०) की तमाम गुफ़्तगू शुरु से आख़िर तक मुँह भर कर होती थी पूरे अल्फ़ाज़ के साथ। आपका कलाम एक दूसरे से बेहतर होता था न उसमें फ़िज़ूल बातें होती थीं न उसमें कोताहियाँ, कि मतलब समझ में न आए।

आप (सल्ल०) न सख़्त मिजाज़ थे न किसी को ज़लील करते थे। अल्लाह की नेअ़मत चाहे कितनी ही थोड़ी हो उसको बहुत बड़ा समझते थे, उसकी मज़म्मत नहीं फ़रमाते थे और खाने की चीज़ों की न मज़म्मत फ़रमाते न तारीफ़। दुनिया और दुनियावी कामों की वजह से आप (सल्ल०) को कभी ग़ुस्सा न आता था। हाँ अगर किसी दीनी काम और ह़क़ बात से कोई शख़्स बढ़ जाता, तो उस वक़्त आप के ग़ुस्से की कोई ताब न ला सकता था, और न कोई उसको रोक सकता था, यहाँ तक कि आप (सल्ल०) उसका बदला न ले लें। अपनी ज़ात के लिए न किसी पर नाराज़ होते थे न उसका बदला लेते थे। जब किसी वजह से किसी की तरफ़ इशारा फ़रमाते तो पूरे हाथ से इशारा फ़रमाते। जब किसी बात पर तअ़ज्जुब फ़रमाते तो

हाथ पलट लेते थे। जब बात करते तो कभी-कभी दाहिनी हथेली को बाईं अगूंठे के अंदुरूनी ह़िस्सा पर मारते। जब किसी पर नाराज़ होते तो मुंह फेर लेते और बेतवज्जोही फ़रमाते या दरगुज़र फ़रमाते और जब ख़ुश होते तो शर्म की वजह से आँखें जैसे बंद कर लेते। आप (सल्ल०) की अक्सर हंसी तबस्सुम होती थी। उस वक़्त आप (सल्ल०) के दांत मुबारक ओले की तरह चमकदार सफ़ेद ज़ाहिर होते थे। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

● ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया दो शख़्स कानाफूसी न करें। तीन आदमियों में से तीसरे के मर्ज़ी के बग़ैर। **(मुस्लिम)**

● ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया जब तुम में से तीन आदमी हों तो दो कानाफूसी न करें तीसरे को जुदा करे, यहां तक कि और लोग तुमसे मिलें, इसलिए कि उसको रंज होगा। **(मुस्लिम)**

● आप (सल्ल०) की गुफ़्तुगू निहायत शीरीं और दिल को भाने वाली होती थी, इसलिए कि आप बहुत ठहर-ठहर कर गुफ़्तुगू फ़रमाते थे, एक-एक बात अलग होती, सुनने वाले को याद हो जाता और एक-एक बात को तीन बार कह देते थे जिस बात पर ज़ोर देना होता, उसको बार-बार दोहराते, बात करते वक़्त अक्सर आपकी निगाह असमान की ओर होती और बुलन्द आवाज़ से बात करते, हज़रत उम्मेहानी (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि हुज़ूर (सल्ल०) कअ़बः में क़ुर्आन पढ़ते तो हम लोग घरों में चारपाई पर लेटे-लेटे सुनते थे।

('इब्ने माज़ा' बाब माजाआ फ़ी क़िरअ़ते क़ुर्आन)

● आप (सल्ल०) हमेशा फ़िक्रमन्द रहते थे और अक्सर ख़ामोश रहते और बे ज़रुरत कभी बात न करते, हाथ से इशारा करते तो पूरा हाथ उठाते, किसी बात पर तअज्जुब करते तो हथेली का रुख़ पलट देते, तक़रीर में कभी हाथ पर हाथ मारते, हंसी आती तो मुस्कुरा देते और यही आपकी हंसी थी। **(शमाइले तिर्मिज़ी)**

रिवायतों में है जब आप (सल्ल०) को ज़्यादह हंसी आती तो दाढ़ के दांत नज़र आने लगते लेकिन इब्ने क़य्यिम आदि ने लिखा है कि यह मुबालिग़ा लगता है

वरना आप कभी ज़ोर से नहीं हंसते थे कि दांत दिखाई देने लगें।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के गुफ़्तगू करने का तरीक़ा

१. आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो शख़्स ज़बान और शर्मगाह की ज़िम्मेदारी देगा मैं उसके लिए जन्नत की ज़िम्मेदारी दूँगा। **(बुख़ारी)**

२. हुज़ूर (सल्ल०) गुफ़्तुगू फ़रमाते तो अल्फ़ाज़ इतना ठहर-ठहर कर बोलते कि सुनने वाला आसानी से याद कर लेता बल्कि अगर कोई गिनने वाला हो तो आप (सल्ल०) के अल्फ़ाज़ को गिन भी सकता था।

३. बात करने में अक्सर अल्फ़ाज़ तीन बार दुहराते थे।

४. आप (सल्ल०) बात करते वक़्त वह्य (ईश्वरीय वाणी) के इन्तिज़ार में बार-बार ऊपर की ओर नज़र उठाते।

५. जिस बात को खोल कर बताना तहज़ीब के ख़िलाफ़ होता उसे इशारे से बताते।

६. किसी बात पर ज़ोर देना होता और आप (सल्ल०) टेक लगाए होते तो टेक छोड़ कर सीधे बैठ जाते और ख़ास लफ़्ज़ को बार-बार कहते।

७. बात करने के वक़्त आप (सल्ल०) मुस्कुराते और निहायत ख़न्दापेशानी (तअ़ज़ीम) के साथ गुफ़्तुगू करते।

८. जब आप (सल्ल०) ह़ाज़िरीन को किसी बात से डराते तो ज़बान मुबारक से अल्फ़ाज़ अदा फ़रमाते और हाथ को ज़मीन कर मलते।

९. जब आप (सल्ल०) गुफ़्तुगू में किसी चीज़ की तरफ़ इशारा करते तो पूरे हाथ से इशारा करते सिर्फ़ उंगली से ही इशारा न करते।

१०. आप (सल्ल०) गुफ़्तुगू में किसी बात पर तअ़ज्जुब करते तो हथेली को उलट देते।

११. कभी-कभी बात करते-करते तअ़ज्जुब के वक़्त दाहिने हाथ की हथेली उल्टे हाथ के अंगूठे के अन्दर के हिस्से पर मारते।

१२. आप (सल्ल०) तअ़ज्जुब के वक़्त सर हिलाते और होठों को दांतो से दबाते और कभी-कभी हाथों को रानों पर मारते थे।

१३. आप (सल्ल०) कभी-कभी जब किसी फ़िक्र में होते तो उस वक़्त ज़मीन को लकड़ी से कुरेदते जाते और सोचते रहते।

१४. जब किसी बात पर ज़्यादा ज़ोर होता तो हाथ या उंगली के इशारे से उसको वाज़ेह करते, जैसे किन्हीं दो चीज़ों के साथ-साथ होने को बताते तो शहादत की उंगली को बीच की उंगली के साथ मिला कर इशारा फ़रमाते या दूसरे हाथ की उंगली में दाख़िल करते।

१५. किसी अहम गुफ़्तुगू के वक़्त टेक लगा लेते और सीधे हाथ को उल्टे हाथ पर रख कर सीधे हाथ की उंगलियों को बांए हाथ की उंगलियों के पुश्त (पीछे) की तरफ़ से दाख़िल करते।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का बच्चों के साथ मुहब्बत करने से सम्बन्धित ह़दीसें

● ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अक़रा बिन जालिस ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को देखा कि आप प्यार कर रहे थे ह़ज़रत हुसैन (रज़ि०) को तो कहा कि मेरे दस बच्चे हैं मैंने किसी को प्यार नहीं किया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया जो शख़्स रह़म न करे उस पर रह़म न होगा। **(सुनन अबी दाऊद)**

● ह़ज़रत शाहवी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से मिले तो उनसे मुआ़नका किया और उनकी दोनों आँखों के दर्मियान बोसा दिया।

(सुनन अबी दाऊद)

● ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि एक क़िस्सा बयान किया और यह कहा कि हम रसूलुल्लाह (सल्ल०) के क़रीब गये और बोसा दिया आप के हाथ पर। **(सुनन अबी दाऊद)**

● ह़ज़रत ह़म्माद और अबूज़र (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुझको पुकारा ऐ अबूज़र! मैंने कहा ह़ाज़िर हूँ और तैयार हूँ आप की ख़िदमत में या रसूलल्लाह और फ़िदा हूँ आप पर। **(सुनन अबी दाऊद)**

● ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) गुज़रे

बच्चों पर से तो सलाम किया उनको। **(मुस्लिम)**

● ईसा बिन इब्राहीम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) हंसे तो ह़ज़रत अबूबक्र या ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने कहा अल्लाह आपको हमेशा हंसाता रहे।

(मुस्लिम)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का बच्चो से प्यार करने का तरीक़ा

१. हुज़ूर (सल्ल०) बच्चों पर बहुत शफ़क़त फ़रमाते और उनसे मुह़ब्बत करते, उनके सर पर हाथ फेरते उनको प्यार करते और उनके ह़क़ में दुआ़-ए-ख़ैर करते।

२. बच्चे आप (सल्ल०) के क़रीब आते तो उनको गोद में लेते, बड़ी मुह़ब्बत से उनको खिलाते कभी बच्चों के सामने अपनी ज़बान मुबारक निकालते तो बच्चा खुश होता और बहेलता, कभी लेटे होते तो अपने क़दमों के अन्दर के तलुओं पर बच्चे को बिठा लेते और कभी सीना-ए-अतहर पर बच्चे को बिठा लेते।

३. अगर कई बच्चे एक जगह जमा होते तो आप (सल्ल०) उनको एक क़तार में खड़ा कर देते और आप (सल्ल०) अपने दोनों हाथों को फैला कर बैठ जाते और फ़रमाते कि तुम सब दौड़ कर हमारे पास आओ जो बच्चा हमको सबसे पहले छुएगा हम उसको यह-यह इनआ़म देंगे। बच्चे भाग कर आप (सल्ल०) के पास आते, कोई आप (सल्ल०) के पेट, पर गिरता और कोई सीने पर, आप (सल्ल०) उनको सीने मुबारक से लगाते और प्यार करते।

४. आप (सल्ल०) बच्चों से अक्सर मज़ाक करते ह़ज़रत अनस (रज़ि०) को या 'ज़लउजुनैन' यानी ऐ दो कानों वाले कह कर पुकारते।

५. ह़ज़रत अनस (रज़ि०) के एक भाई थे अबू उमैर नामी, उन्होंने एक चिड़िया (लाल) पाल रखी थी, एक रोज़ वह मर गयी, अबू उमैर उसके रंज में ग़मग़ीन बैठे थे, हुज़ूर (सल्ल०) तशरीफ़ लाये और जब उनको लाल या ममोले के रंज में रंजीदह देखा तो इर्शाद फ़रमाया, ''या अबा उ़मैर मा फ़अ़लननुग़ैर'' यानी ऐ अबू उमैर यह तुम्हारे ममोले को क्या हुआ? (यानी तुम्हारा 'लाल' क्या हुआ)

६. अब्दुल्लाह बिन बशीर (रज़ि०) फ़रमाते है कि मेरी वालदह ने मुझको एक अंगूरों का ख़ोशा दिया और कहा कि यह रसूलुल्लाह (सल्ल०) को दे आओ, मैं उसे लेकर चला रास्ते में मेरी नियत बिगड़ गई और मैं उसको खा गया, मेरी वालदह हुज़ूर (सल्ल०) से मिलीं तो ख़ोशा (लच्छा) के बारे में पूछा कि आपको अंगूरों को ख़ोशा मिला था, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि नहीं तो, मेरी वाल्दह और हुज़ूर (सल्ल०) समझ गये कि मैं रास्ते में खा गया, इस वाक़िया के बाद जब हुज़ूर (सल्ल०) मुझको रास्ते में मिलते तो मेरा कान पकड़ कर फ़रमाते, 'या ग़दर या ग़दर' (ऐ धोकेबाज़-ऐ धोकेबाज़) **(तिर्मिज़ी)**

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मजलिस से सम्बन्धित ह़दीसें

● ह़ज़रत जाबिर बिन समुरा (रज़ि०) से रिवायत है कि हम लोगों का यह तरीक़ा था कि जब हममें से कोई हुज़ूर (सल्ल०) की मजलिस में आता तो किनारे ही बैठ जाया करता था। **(सुनन अबी दाऊद)**

● ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की ज़बाने मुबारक ने उस शख़्स को क़ाबिले लानत क़रार दिया है जो ह़ल्क़ा के बीच में बैठ जाए। **(तिर्मिज़ी, सुनन अबी दाऊद)**

● ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया जब तुम में से कोई साया की जगह में बैठा हो फिर उस पर से साया हट जाए और फिर उसके जिस्म का कुछ हि़स्सा कुछ धूप में और कुछ साये में हो जाए तो उसे चाहिए कि वह उस जगह से उठ जाए। **(सुनन अबी दाऊद)**

● ह़ज़रत अ़म्र बिन आ़स (रज़ि०) से रिवायत है कि एक दिन एक शख़्स ने खड़े होकर (तक़रीर के तौर पर) बात की तो आप ने फ़रमाया अगर यह शख़्स बात मुख़्तसर करता तो इसके लिए ज़्यादा बेहतर होता- मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सुना है कि आप ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं यह मुनासिब समझता हूँ- या आप ने फ़रमाया कि मुझे अल्लाह तआ़ला की ओर से यह हुक्म है कि बात करने में मुख़्तसर तरीक़े से करूँ क्योंकि बात मुख़्तसर ही बेहतर होती है। **(सुनन अबी दाऊद)**

● ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०)

ने फ़रमाया जब कोई ऐसी मजलिस में शरीक हो कि वहां बेफ़ायदा बातें हो रही हों और वहां से उठने से पहले मजलिस से उठने की दुआ़ पढ़े तो उस मजलिस में जो कुछ हुआ, तो वह उसके लिए माफ़ कर दिया जाता है। **(तिर्मिज़ी, बैहक़ी)**

● जो शख़्स अपनी जगह से उठकर कहीं चला जाए फिर वापस आ जाए तो वह अपनी जगह का ज़्यादा ह़क़दार है। **(मुस्लिम)**

● दो बैठे हुए आदमियों के दर्मियान जुदाई न डाले। यानी आदमियों के दर्मियान न बैठे, हाँ अगर वह इजाज़त दे दे। **(तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)**

● अहले मजलिस को चाहिए कि बाद में आने वालों को जगह देने की कोशिश करें और बाद में आने वालों के लिए यह है कि किसी को अपनी जगह से न उठाएँ। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

● हर वह मजलिस जिसमें अल्लाह का ज़िक्र न हो वह मजलिस क़ियामत के दिन हसरत व अफ़सोस का ज़रिया होगी। **(मिश्कात)**

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मजलिस का तरीक़ा

१. आप (सल्ल०) नाग़ा करके तक़रीर फ़रमाते ताकि लोग उकता न जाएं।

२. आप (सल्ल०) मजलिस में अगर किसी आने वाले को ख़ास एजाज़ देना चाहते तो आप (सल्ल०) उसके लिए अपनी चादर मुबारक बिछा देते।

३. आप (सल्ल०) सह़ाबा-ए-कराम (रज़ि०) के मजमा में तशरीफ़ ले जाते और कोई आप (सल्ल०) की ताज़ीम के लिए खड़ा होता तो आप (सल्ल०) बुरा मानते, इस तरह जब सह़ाबा-ए-कराम (रज़ि०) आप (सल्ल०) की आदत मुबारक पहचान गये तो आप (सल्ल०) के तशरीफ़ लाने पर कोई भी खड़ा नहीं होता था।

४. हुज़ूर (सल्ल०) किसी मजलिस में शिरकत फ़रमाते तो जहां मजलिस ख़त्म होती वहीं तशरीफ़ रखते, मजलिस के बीच जाकर बैठने की हरगिज़ कोशिश नहीं फ़रमाते।

५. सह़ाबा-ए-कराम (रज़ि०) मजलिस में बैठे हुए जिस गुफ़्तुगू में मसरुफ़ होते आप (सल्ल०) भी गुफ़्तुगू में उनके शरीक हो जाते। और जब देखते लोग उकता रहे

हैं, तो मौज़ू (विषय) बदल देते।

६. अगर किसी बात में हुज़ूर (सल्ल०) मसरुफ़ होते और बीच में कोई दूसरा सवाल कर देता तो आप (सल्ल०) अपनी बात जारी रखते, गोया आप (सल्ल०) ने सुना ही नहीं फिर जब बात ख़त्म हो जाती तो फिर सवाल करने वाले से सवाल पूछ कर उसका जवाब देते।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का घर में इजाज़त लेकर जाने से सम्बन्धित हदीसें और नसीहतें

● अबू मालिक अशअ़री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया जब कोई अपने घर में जाने लगे तो यह कहे-

اَللّٰهُمَ اِنّی اَسئلُکَ خَیُرَ الُموَلَجِ وخَیرَالُمَخُرَجِ بِسُم اللّٰهِ ولَجّنَاوَ بِسُمِ اللّٰهِ خَرَجُنَاوَعَلَی اللّٰهِ رَبّنَا تَوکّلنا

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुका ख़ैरल मौलिजी व ख़ैरल् मख़रजि, बिस्मिल्लाहि वलज्ज़िना व बिस्मिल्लाहि ख़रजना व अ़लल्लाहि रब्बना तवक्कलूना।"

● अर्थात या अल्लाह मैं मांगता हूं तुझसे अंदर जाने की बेहतरी और बाहर निकलने की बेहतरी। अल्लाह के नाम पर हम अंदर जाते हैं और अल्लाह के नाम पर हम बाहर निकलते हैं और भरोसा करते हैं अल्लाह पर जो हमारा परवरदिगार है। फिर अंदर जाकर घर के लोगों से सलाम करे।

(सुनन अबी दाऊद)

● हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि एक शख़्स ने झांका। रसूलुल्लाह (सल्ल०) के किसी हुजरे में। मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) तीर लेकर उठे ताकि मारें। **(अबू दाऊद)**

● हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि जो शख़्स किसी घर में झांके बिना उसकी इजाज़त के फिर वह उसकी आँख फोड़ दे तो उसका बदला

न लिया जाएगा। **(सुनन अबी दाऊद)**

● कल्दा बिन हम्बल से रिवायत है कि सफ़वान बिन उमय्या ने उसको रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास भेजा। दूध हिरन और ककड़ियां देकर और आप बलन्दी पर थे वह गया और सलाम नहीं किया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा लौट जा और कह 'अस्सलामु अ़लैकुम' और यह क़िस्सा इस्लाम लाने के बाद का था।

(सुनन अबी दाऊद)

● हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि मैं मदीना की मजलिस में बैठा था कि इतने में अबू मूसा अशअ़री आये डरे हुए हमने पूछा तुम को क्या हुआ उन्होंने कहा मुझको हज़रत उ़मर ने बुलवा भेजा है जब मैं उनके दरवाज़े पर गया तो तीन बार सलाम किया। उन्होंने जवाब न दिया मैं लौट आया फिर उन्होंने कहा तुम मेरे घर पर क्यों नहीं आए मैंने कहा मैं तुम्हारे पास गया था और तुम्हारे दरवाज़े पर तीन बार सलाम किया तुम ने जवाब न दिया, आख़िर लौट आया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया है कि जब तुम में से कोई तीन बार इजाज़त चाहे फिर कोई इजाज़त न मिले तो लौट जाए। हज़रत उ़मर (रज़ि०) ने कहा इस बात पर गवाह लाओ वरना मैं तुमको सज़ा दूंगा। उबई बिन कअ़ब ने कहा अबू मूसा के साथ वह शख़्स जाए जो हम सब लोगों में छोटा हो। अबूसईद (रज़ि०) ने कहा मैं सबसे छोटा हूँ। उबई बिन कअ़ब ने कहा अच्छा तुम जाओ इनके साथ।

(मुस्लिम शरीफ़)

● हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि हम उबई बिन कअ़ब की मजलिस में बैठे थे, इतने में अबू मूसा अशअ़री आए गुस्सा में और खड़े होकर कहने लगे मैं तुमको क़सम देता हूँ अल्लाह की तुम में से किसी ने सुना है रसूलुल्लाह (सल्ल०) से आप फ़रमाते थे तीन बार इजाज़त मांगना फिर अगर इजाज़त मिले तो बेहतर वरना लौट जाओ। हज़रत उबई (रज़ि०) ने कहा तुम क्यों पूछते हो इसको उन्होंने कहा मैंने कल हज़रत उ़मर (रज़ि०) के घर पर तीन बार इजाज़त मांगी मुझको इजाज़त नहीं मिली तो मैं लौट आया आज फिर मैं उनके पास आया और मैंने कहा कल मैं तुम्हारे पास आया था और तीन बार सलाम किया था फिर मैं लौट गया। हज़रत उ़मर (रज़ि०) ने कहा उस वक़्त हम काम में थे तुमने

फिर इजाज़त क्यों नहीं मांगी जब तक तुमको इजाज़त न मिलती, मैंने कहा कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जिस तरह फ़रमाया है उस तरह मैंने इजाज़त मांगी उन्होंने कहा क़सम ख़ुदा की मैं तकलीफ़ दूंगा तेरे पेट और पीठ को नहीं तो तू गवाह ला। इस ह़दीस पर उबई बिन कअ़ब ने कहा ख़ुदा की क़सम तुम्हारे साथ वह जाए जो हम सब में कमसिन हो। उठ ऐ अबू सईद फिर मैं उठा और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) के पास और कहा मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से यह ह़दीस सुनी। **(मुस्लिम शरीफ़)**

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का घर में जाने का तरीक़ा

१. हुज़ूर (सल्ल०) अपने घर में होते और कोई शख़्स मुलाक़ात के लिए आता और अन्दर आने की इजाज़त लेता तो आप (सल्ल०) ख़ादिम को हुक्म देते कि जाओ इसको घर में आने का तरीक़ा सिखाओ कि पहले सलाम करे और फिर इजाज़त ले।

२. अगर कोई बिना इजाज़त आपके पास अन्दर चला आता तो आप (सल्ल०) उसको वापस कर देते और फ़रमाते कि जाओ वापस जाओ और सलाम करके अन्दर आओ।

३. अगर कोई आप (सल्ल०) से अन्दर आने की इजाज़त चाहता तो आप (सल्ल०) पूछते 'कौन है' और अगर वह जवाब में कहता 'मैं' तो आप (सल्ल०) को यह जवाब बहुत नापसंद होता और फ़रमाते कि 'मैं, मैं' क्या करते हो नाम क्यों नहीं बताते।

४. अगर किसी को बुलाया जाता और वह शख़्स आने वाले के साथ बिना इजाज़त अन्दर आ जाता तो आप बुरा नहीं मानते थे।

५. अगर आप (सल्ल०) खुद किसी से मुलाक़ात के लिए तशरीफ़ ले जाते तो आप (सल्ल०) तीन बार सलाम करके वापस तशरीफ़ ले आते।

६. आप (सल्ल०) कभी दरवाज़े के सामने नही खड़े होते थे।

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का मरीज़ की अ़यादत करने से सम्बन्धित ह़दीसें

● ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया- भूखे को खाना खिलाओ, बीमार की अ़यादत करो और क़ैदी को छुड़ाओ। **(बुख़ारी, मुस्लिम)**

● ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया "(एक) मुसलमान के (दूसरे) मुसलमान पर छः ह़क़ हैं।" अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! वह क्या हैं?" फ़रमाया (१) जब तुम किसी मुसलमान से मुलाक़ात करो तो उसे सलाम करो। (२) जब तुम्हें कोई (अपनी मदद के लिए या ज़ियाफ़त की ख़ातिर) बुलाए तो उसे क़ुबूल करो। (३) जब तुम से कोई ख़ैर ख़्वाही चाहे तो उस के ह़क़ में ख़ैर ख़्वाही करो। (४) जब कोई छींके और अल्ह़म्दुलिल्लाह कहे तो (यरह़मुकुमुल्लाह कह कर) उस का जवाब दो। (५) जब कोई बीमार हो तो उस की अ़यादत करो। (६) जब कोई मर जाए तो (नमाज़े जनाज़ा और दफ़न करने के लिए) उस के साथ जाओ।" **(मुस्लिम)**

● ह़ज़रत बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) ने हमें सात चीज़ों का हुक्म दिया और सात चीज़ों से मना फ़रमाया, जिन चीज़ों का हुक्म दिया वह यह हैं। (१) बीमार की अ़यादत करना। (२) जनाज़े के साथ जाना (३) छींकने वाले को जवाब देना। (४) सलाम का जवाब देना। (५) बुलाने वाले की दअ़वत क़ुबूल करना। (६) क़सम खाने वाले की क़सम पूरा करना। (७) मज़लूम की मदद करना और जिन चीज़ों से मना फ़रमाया है वह यह हैं- (१) सोने की अंगूठी पहनने से। (२) रेशम के कपड़े पहनने से। (३) इतलस के कपड़े इस्तेमाल करने से। (४) लाही (दीबाज) के कपड़े पहनने से। (५) सुर्ख़ ज़ेन पोश इस्तेमाल करने से। (६) क़सी के कपड़े पहनने से। (७) और चांदी के बर्तन इस्तेमाल करने से।" एक और रिवायत के यह अल्फ़ाज़ भी हैं कि "चांदी के बर्तन में पीने से (भी मना फ़रमाया है) क्योंकि जो शख़्स चांदी के बर्तन में दुनिया में पियेगा आख़िरत में उसे चांदी के

बर्तन में पीना नसीब न होगा।” **(बुख़ारी मुस्लिम)**

● हज़रत सौबान (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया मुसलमान जब अपने किसी मुसलमान भाई की अ़यादत करता है तो वह जन्नत के मेवा खाने में रहता है। जब तक कि वह वापस न आ जाए। **(मुस्लिम)**

● हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहुअ़न्हा फ़रमाती हैं कि जब हममें से कोई बीमार होता तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) उस पर दाहिना हाथ फेरते और फ़रमाते ऐ लोगों के परवरदिगार! बीमार दूर कर दे और शिफ़ा दे। तू ही शिफ़ा देने वाला है तेरे सिवा किसी की शिफ़ा ऐसी नहीं जो बीमारी को दूर कर दे। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

● हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहुअ़न्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्ल०) जब बीमार होते तो मोअव्विज़ात पढ़कर अपने ऊपर दम करते और अपना हाथ बदन पर फेरते। इस तरह जब आप (सल्ल०) उस बीमारी में थे जिस में आप (सल्ल०) ने वफ़ात पाई तो मैं मोअव्विज़ात पढ़कर आप (सल्ल०) पर दम करती थी जैसा कि आप (सल्ल०) ख़ुद मोअव्विज़ात पढ़कर दम फ़रमाया करते थे और मैं आपका हाथ आप (सल्ल०) के बदन पर फेरा करती थीं। इस तरह कि मैं मोअव्विज़ात पढ़-पढ़कर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के हाथों पर दम करती थी और फिर आप (सल्ल०) के दोनों हाथ, आप (सल्ल०) के बदन मुबारक पर फेरती थीं। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

● हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) तीन दिन बाद मरीज़ की अ़यादत करते थे। **(इब्ने माजा बैहक़ी)**

● हज़रत उ़मर (रज़ि०) रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया जब तुम बीमार के पास जाओ तो उससे कहो कि तुम्हारे लिए दुआ़ करे क्योंकि उसकी दुआ़ फ़रिश्तों की दुआ़ की तरह है। **(इब्ने माजा)**

● हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया जब तुम मरीज़ के पास जाओ तो उसकी ज़िन्दगी के बारे में उसका ग़म दूर करो। इसलिए कि यह किसी चीज़ को टाल नहीं सकती मगर मरीज़

का दिल ख़ुश होता है। **(तिर्मिज़ी, इब्नेमाजा)**

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का मरीज़ की अ़यादत करने का तरीक़ा

१. जब किसी बीमार को देखने जाते तो मरीज़ की पेशानी और नब्ज़ पर हाथ रखते, उससे खाने के लिए पूछते, अगर वह कुछ मांगता तो उसके लिए वह चीज़ मंगवाते, और फ़रमाते कि मरीज़ जो मांगे वह उसको दो।

२. बीमार के पास बैठते तो उसको तसल्ली देते उसकी सेहत के लिए दुआ़ फ़रमाते और कहते कोई परवाह न करो अल्लाह ने चाहा तो ख़ैरियत होगी।

३. मरीज़ के सरहाने बैठते पूछते तुम्हारी कैसी तबीअ़त है।

४. आप (सल्ल०) मरीज़ की पेशानी या दर्द की जगह पर हाथ रखकर दुआ़ करते।

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का लोगों से मुहब्बत करने से सम्बन्धित हदीसें

● हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया मुसलमान उल्फ़त व मुहब्बत का मक़ाम और ख़ज़ाना है और उस शख़्स में भलाई नहीं है जो मुहब्बत नहीं करता न उससे मुहब्बत की जाती है यानी जो शख़्स ऐसा हो कि न तो वह मुसलमानों से मुहब्बत करे और न मुसलमान उससे मुहब्बत करें तो वह किसी काम का नहीं। **(अहमद)**

● हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो शख़्स मज़लूम की फ़रियाद सुनता है तो अल्लाह तआ़ला उसके लिए तिहत्तर बख़्शिश लिख देते हैं और उनमें से एक बख़्शिश तो वह है जो उसके तमाम कामों के इस्लाह की ज़ामिन बन जाती है और बाक़ी बहत्तर बख़्शिशें क़ियामत के दिन उसके दर्जात की बुलन्दी का ज़रिया होंगी। **(मिश्कात)**

● हज़रत अनस (रज़ि०) और हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि०) दोनों कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया मख़्लूक़ ख़ुदा का कुंबा है। इसलिए ख़ुदा के

नज़दीक़ मख़्लूक़ में बेहतर वह शख़्स है जो ख़ुदा के कुंबा के साथ एहसान और हुस्ने-सुलूक का मामला करे। **(बैहक़ी)**

● हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया जो आदमी मेरी उम्मत में से किसी शख़्स में से किसी की हाजत व ज़रुरत को पूरा करे और उससे उसका मक़्सद उसको ख़ुश करना हो तो उसने मुझको ख़ुश किया और जिसने मुझको ख़ुश किया, उसने अल्लाह को ख़ुश किया और जिसने अल्लाह को ख़ुश किया उसको अल्लाह जन्नत में दाख़िल करेगा। **(मिश्कात)**

● हज़रत अबू मूसा (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) से रिवायत करते हैं कि जब आप (सल्ल०) के पास कोई हाजतमंद आता तो फ़रमाते कि इस शख़्स की सिफ़ारिश करो ताकि तुम्हें सिफ़ारिश का सवाब मिल जाए और अल्लाह तआला अपने रसूल की ज़बान से जो हुक्म चाहता है जारी फ़रमाता है।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

● हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि कोई बन्दा उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिए वही चीज़ न चाहे जो अपने लिए चाहे। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

● हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि वह शख़्स हमारी इत्तिबा करने वालों में से नहीं है जो हमारे छोटों पर रहम और शफ़क़त न करे, और हमारे बड़ों का एहतिराम न करे, नेकी और भलाई का हुक्म न दे और बुराई से मना न करे। **(तिर्मिज़ी)**

● हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया मुसलमानों के घर में बेहतरीन घर वह है जिसमें कोई यतीम हो और उसके साथ अच्छा सुलूक किया जाए और मुसलमानों के घरों में बुरा घर वह है जिसमें कोई यतीम हो और उसके साथ बुरा सुलूक किया जाए। **(इब्ने माजा)**

● हज़रत जाबिर बिन समुरा (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया अपने बेटे को अदब की एक बात सिखाना एक साअ़ ग़ल्ला ख़ैरात करने से बेहतर है। **(मिश्कात)**

● हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर (रज़ि०) कहते हैं कि जो शख़्स किसी मुसलमान में कोई ऐब देखे और उसकी बुराई को जाने और बुराई को छुपा ले तो उस शख़्स का दर्जा उस शख़्स के बराबर होगा जो ज़िन्दा दफ़न की हुई लड़की को बचा ले। **(अहमद तिर्मिज़ी)**

● हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) ने एक शख़्स से अपनी संगदिली की शिकायत की तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि यतीम के सर पर हाथ फेरा करो और मिस्कीन को खाना खिलाया करो। **(अहमद)**

● हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) नबी करीम (सल्ल०) से नक़्ल करते हैं कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन फ़रमाएगा कहां हैं वे लोग जो मेरी बड़ाई के लिए और मेरे तअ़ज़ीम के लिए आपस में मुहब्बत व तअ़ल्लुक़ रखते थे। आज मैं उन लोगों को अपने साया में पनाह दूँगा और आज के दिन मेरे साये के अ़लावा और कोई साया नहीं है। **(मुस्लिम)**

● हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत अबूज़र (रज़ि०) से फ़रमाया कि अबूज़र ईमान की कौन सी शाख़ मज़बूत है। हज़रत अबूज़र (रज़ि०) ने जवाब दिया कि अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा जानने वाले हैं। हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया ख़ुदा की रज़ा और ख़ुशनूदी के लिए आपस में एक दूसरे से मेल मोहब्बत रखना और ख़ुदा की रज़ा के लिए किसी से दोस्ती रखना और ख़ुदा की रज़ा के लिए किसी से बुग्ज़ व नफ़रत रखना।

(बैहक़ी)

● हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया जो कोई मुसलमान बन्दा कोई दरख़्त का पौदा लगाए या खेती करे फिर कोई इंसान या परिंदा या चौपाया उस दरख़्त या खेती में से खाए तो यह उस बंदे की तरफ़ से सद्क़ा और सवाब है।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

● हज़रत सफ़वान बिन सुलैम (रज़ि०) ने नबी करीम (सल्ल०) से नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया बेवाओं और मिस्कीनों की ख़बरग़ीरी करने वाला अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है या उस शख़्स की तरह है जो दिन में रोज़ा रखता हो और रात में इ़बादत करता हो। **(बुख़ारी)**

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का लोगों से मुहब्बत करने का तरीक़ा

१. जब आप (सल्ल०) के कान में कोई चुपके से बात कहना चाहता तो सर मुबारक को उसके मुहं से उस वक़्त तक न हटाते जब तक कि वह खुद अपनी बात कह कर मुंह न हटा लेता।

२. अगर कोई आप (सल्ल०) की ख़िदमत में नया कपड़ा पहन कर हाज़िर होता तो आप (सल्ल०) उसकी तारीफ़ करते और फ़रमाते 'हस्सन्ता-हस्सन्ता' (बहुत खूब-बहुत खूब)

३. कभी-कभी मुहब्बत में मुख़्तसर नाम लेते जैसे 'अबूहुरैरा' को कहते 'अबाहुर'

४. जब किसी की ज़बान से या हरकत से कोई बुरा अ़मल हो जाता तो आप (सल्ल०) किसी का नाम लेकर उसकी तंबीह नहीं फ़रमाते बल्कि एक उमूमी तौर पर कहते कि लोगों को क्या हो गया है, ऐसा कहते हैं या ऐसा करते हैं।

५. आप (सल्ल०) को किसी के दीनी हुक्म के बारे में नाराज़गी होती तो दो इस तरह नाराज़गी का इज़हार फ़रमाते एक यह कि उस शख़्स के आने पर उसकी तरफ़ से चेहरा-ए-अनवर फेर लेते, या उसका हदिया क़ुबूल नहीं करते थे।

६. आप (सल्ल०) जब किसी को पैग़ाम भेजते तो सलाम भी कहलवाते।

७. जब आप (सल्ल०) को किसी का सलाम पहुंचता तो सलाम पहुंचाने वाले के साथ सलाम लाने वाले को भी सलाम का जवाब देते और यूं कहते, 'अलैक व अ़ला फ़लां सलामुहू'।

८. अगर किसी का नाम मालूम न होता और उसको पुकारना होता तो आप (सल्ल०) फ़रमाते 'या इब्ने अ़ब्दिल्लाह' यानी ऐ अल्लाह के बन्दे के बेटे कह कर पुकारते।

९. आप (सल्ल०) दोस्तों की तरफ़ से हदिये ज़रुर क़ुबूल करते लेकिन उसका बदला उतारने की भी कोशिश करते।

१०. मुलाक़ात के वक़्त आप (सल्ल०) कभी मुसाफ़ह करते और कभी मुआनक़ा करते और कभी पेशानी पर बोसा भी देते।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का सुबह से शाम तक ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा

आप (सल्ल०) फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर जानमाज़ ही पर आलती पालती मारकर बैठ जाते, और अपने साथियों और आप के साथी (सहाबा) भी आ आकर पास बैठ जाते। आप (सल्ल०) उनको अच्छी-अच्छी नसीहतें करते, कभी-कभी आप (सल्ल०) सहाबा से पूछते किसी ने कोई ख़्वाब देखा हो तो बयान करे। सहाबा (रज़ि०) ख़्वाब बयान करते। आप (सल्ल०) ख़्वाब की ताबीर फ़रमाते। लोग तरह-तरह की बातें करते शेर पढ़ते हँसी ख़ुशी की बातें करते। हुज़ूर (सल्ल०) सुनकर खुश होते और मुस्कुराते।

जब कुछ दिन चढ़ जाता तो आप नफ़्ल नमाज़ कभी चार रकअ़त कभी आठ रकअ़त पढ़ते, फिर घर जाते और घर के कामों में लग जाते। इसी तरह ज़ुह्र के वक़्त तक कामों में लगे रहते। फिर अ़स्र की नमाज़ पढ़कर अपनी बीवियों के घरों में जाते। सबकी ख़ैरियत पूछते थोड़ी थोड़ी देर ठहरते। आख़िर में एक बीवी के यहाँ ठहर जाते फिर उसी घर में तमाम बीवियाँ इकट्ठा हो जातीं। मग़रिब से इशा तक वहीं रहती। हँसी ख़ुशी की बातें करतीं।

इशा की अज़ान होती तो आप (सल्ल०) उठ खड़े होते और नमाज़ पढ़ने के बाद आकर सो जाते और तमाम बीवियाँ चली जातीं। इस तरह आधी रात के बाद कुछ रात बाक़ी रहती तो आप उठ जाते दुआ़ पढ़ते और मिस्वाक़ करते फिर वुज़ू करके घर में ही नमाज़ पढ़ते, फिर फ़ज्र के लिए मस्जिद जाते।

नोट- लोगों के दर्मियान आप कैसे रहें इसके बारे में सुन्नते रसूल यह है कि आप का दिल लोगों के बारे में बुरे ख़यालात से पाक हो, जब एक आदमी दूसरे आदमी के दर्मियान रहता है तो तरह-तरह के आपसी मामलात पेश आते हैं। उसकी वजह से अक्सर ऐसा होता है कि एक शख़्स को दूसरे के ख़िलाफ़ रंजिश और शिकायत पैदा हो जाती है। ऐसा होना फ़ित्री है मगर अल्लाह के रसूल की सुन्नत यह है कि ऐसे जज़्बात को अपने दिल में ठहरने न दिया जाए बल्कि उन्हें बाहर निकाल दिया जाए। शिकायतों को नज़र अन्दाज़ किया जाए, रंजिशों को भूल जाया जाए, ग़ल्तियों को माफ़ कर दिया जाए, तकलीफ़ को बर्दाशत कर लिया जाए यह सब पैग़म्बराना तरीक़े हैं और जन्नत उन्हीं लोगों के लिए है जो पैग़म्बर के तरीक़े पर चले। जो लोग पैग़म्बर के तरीक़े को छोड़कर अपने मनचाहे तरीक़े को अपनाते हैं वे लोग आख़िरत में नेक लोगों से दूर होंगे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ

ऐ लोगों जो ईमान लाए हो, इताअ़त करो अल्लाह की और इताअ़त करो रसूल की और उन लोगों की जो तुम में से साहि़बे अम्र हों।

भाग-तीन

ज़िन्दगी गुज़ारने के शरई़ आदाब, कुर्आन व सुन्नत की रौशनी में

ज़िन्दग़ी गुज़ारने के शरअ़ी आदाब क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में

नीचे ज़िन्दग़ी गुज़ारने के शरअ़ी आदाब अर्थात सुन्नतों का ज़िक्र बहुत मुख़्तसर तरीक़े से अलग-अलग करके बयान किया गया है, ताकि अ़मल करने में आसानी हो जैसे-

खाना खाने के शरअ़ी आदाब

१. 'बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम' पढ़कर खाना शुरु करना। **(अबूदाऊद)**

२. खाने से पहले हाथ धोना और कुल्ली करना। **(तिर्मिज़ी)**

३. दायें हाथ से खाना खाना। इसी तरह किसी दूसरे को खाना देना हो तब भी दायां हाथ इस्तेमाल करना। **(मुस्लिम)**

४. इकट्ठे बैठ कर खाना खाना, खाने में जितने हाथ जमा होंगे उतनी ही बरकत ज़्यादा होगी। **(अबूदाऊद, मिश्कात)**

५. बैठ कर खाना उकड़ू या दो ज़ानू या एक ज़ानू बैठना। जैसे एक घुटना खड़ा हो और दूसरे को बिछाकर उस पर बैठे या दोनों घुटने ज़मीन पर बिछाकर कअ़दः की तरह बैठे। **(उमदतुलक़ारी)**

६. दस्तर ख्वान बिछाना। **(तिर्मिज़ी)**

७. खाने से पहले की दुआ पढ़ना जैसे-

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى بَرَكَةِ اللّٰه

"बिस्मिल्लाहि वअ़ला बरकतिल्लाहि"

८. अपने सामने से खाना। **(बुख़ारी)**

९. दाहिनें हाथ से खाना, खाने की मजलिस में जो शख़्स सबसे ज़्यादा बुर्जुग और बड़ा हो उससे खाना शुरु कराना। **(मुस्लिम)**

१०. खाना एक क़िस्म का हो तो अपने सामने से खाना, बर्तन के बीच में या दूसरे आदमी के आगे हाथ न डालना। **(तिर्मिज़ी)**

११. तेज़ गर्म खाना न खाना। **(मुस्नद अह़मद)**

१२. जिस ख़ादिम ने खाना पकाया हो तो उसे खाने में शामिल करना या उसको खाने में से कुछ अलग दे देना।

१३. खाना खाने के दर्मियान कोई आ जाए तो उसे भी बुला लेना। **(इब्ने माजा)**

१४. खाने के बाद हाथ धोना और कुल्ली करना। **(इब्ने माजा)**

१५. अगर कोई लुक़्मा गिर जाए तो उठाकर साफ़ करके खाना।

१६. टेक लगाकर न खाना। **(तिर्मिज़ी)**

१७. खाने में कोई ऐब न निकालना। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

१८. जूता उतार कर खाना। **(दारमी)**

१९. खाने के बाद बर्तन प्याला और प्लेट को साफ़ कर ले। **(मुस्नद अह़मद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, दारमी)**

२०. अगर आपका साथी खाना खा रहा हो तो उसका साथ देना ताकि वह पेट भर कर खा ले, मजबूरी हो तो उ़ज़्र कर दे। **(इब्ने माजा)**

२१. मुहं बन्द कर के खाना, ताकि चप-चप की आवाज़ न आये। **(तिर्मिज़ी)**

२२. सर को ढक कर खाना।

२३. पहले दस्तरख़्वान उठाना और फिर ख़ुद उठना। **(इब्नेमाजा)**

२४. दस्तरख़्वान उठाने की दुआ पढ़ना।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مُكْفِيٍّ وَلَا مُوَدَّعٍ وَلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا

"अल्ह़म्दु लिल्लाहि ह़म्दन कसीरन तय्यिबन मुबारकन फ़ीहि ग़ैर मुकिफ़्फ़ी वला मुवद्दअ़ी वला मुस्तग़नन अ़न्हु रब्बना।"

२५. अगर शुरु में 'बिस्मिल्लाह' पढ़ना भूल जाए तो यह पढ़े। **(तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)**

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهُ وَاٰخِرَهُ

"बिस्मिल्लाहि अव्वलहु व आख़िरहू"। **(तिर्मिज़ी)**

२६. जब किसी के यहां खाना खाए तो मेज़बान को यह दुआ़ दे।

اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَّنْ اَطْعَمَنِىْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِىْ

"अल्लाहुम्म अत़्अ़िम मन अत़्अ़मनी वस्क़ी मन सक़ानि।"

२७. खाने के वक़्त बिल्कुल ख़ामोश रहना मकरूह है।

२८. जब खाना खा चुकें तो यह दुआ़ पढ़ें। **(तिर्मिज़ी)**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

"अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत़्अ़मना वसक़ाना वजअ़लाना मिनल् मुस्लिमीन।"

पानी पीने के शरअ़ी आदाब

१. पानी पीने से पहले 'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम' पढ़ना। **(अबूदाऊद)**

२. बैठ कर पीना। **(ज़ादुल अ़ाद)**

३- दाहिने हाथ से पीने का बर्तन पकड़ना, और पीना। **(मुस्लिम)**

३. तीन सांस मे पीना और सांस लेते वक़्त पानी का बर्तन मुंह से अलग करना। **(मुस्लिम, तिर्मिज़ी)**

४. बर्तन के टूटे हुए किनारे की तरफ़ से न पीना। **(अबूदाऊद)**

५. मशक़ से मुँह लगाकर न पीना। **(बुख़ारी)**

६. पीने के बाद कम से कम 'अल्ह़म्दुलिल्लाहि' कहना। **(अबूदाऊद)**

७. पीने के बाद की दुआ़ पढ़ना।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ سَقَانَا عَذْبًا فُرَاتًا بِرَحْمَتِهٖ مَاءً وَلَمْ يَجْعَلْهُ بِذُنُوْبِنَا مِلْحًا اُجَاجًا

"अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी सक़ाना अ़ज़बन फ़ुरातन बिरह़मतिही माअ़न वलम यजअ़लहु बिज़ूनूबिना मिल्ह़न उजाजा।"

८- पानी पीकर अगर दूसरों को देना हो तो पहले दाहिनें वाले को दें फिर उसी तर्तीब से देते जायें। **(तिर्मिज़ी)**

१०. चांदी या सोने के बर्तन में न खायें न पियें। **(बुख़ारी)**

११. बर्तन के टूटे हुए किनारे से न पियें। **(अबूदाऊद)**

१२. जो दूसरे को पिलाए वह ख़ुद आख़िर में पिए। **(तिर्मिज़ी)**

१३. आबे ज़मज़म खड़े होकर के पिये। **(बुख़ारी, तिर्मिज़ी)**

१४. वुज़ू का बचा हुआ पानी खड़े होकर पिये। **(बुख़ारी, तिर्मिज़ी)**

१५. दूध पीकर यह दुआ़ पढ़ना चाहिए।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ

"अल्लाहुम्म बारिक लना फ़ीहि वज़िदना मिन्हु"

१६. हर पीने वाली चीज़ पीकर यह दुआ़ पढ़ना।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَاَطْعِمْنَا خَيْرًا مِّنْهُ

"अल्लाहुम्म बारिक लना फ़ीहि व अतअ़िमना ख़ैरिम्ममिन्हु।"

मेहमानी के आदाब

१. ह़ज़रत शुरैह़ कअ़बी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता हो तो उसको चाहिए कि अपने मेहमान की इ़ज़्ज़त करे। मेहमान के साथ तकल्लुफ़ व एह़सान करने का वक़्त एक दिन और एक रात है और मेहमानदारी का तीन दिन है। इसके बाद जो दिया जाएगा वह हदिया और ख़ैरात होगा और मेहमान के लिए यह जायज़ नहीं है कि वह मेज़बान के यहां (तीन दिन के बाद) ठहरे कि वह तंगी में मुब्तिला हो जाए। एक ह़दीस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता हो

तो उसको चाहिए कि वह अपने मेहमान की इज़्ज़त करे और जो शख़्स अल्लाह और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता हो तो उसको चाहिए कि वह अपने पड़ोसी को तकलीफ़ न दे और जो शख़्स अल्लाह और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता हो तो उसको चाहिए कि भली बात कहे या ख़ामोश रहे। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

२. मेहमान नवाज़ी के आदाब में से एक यह है कि मेहमान के आते ही जो कुछ खाने पीने की चीज़ मुयस्सर हो और जल्दी से मुहय्या हो सके उसे रखें फिर अगर साहिबे उस्अ़त हो तो मज़ीद मेहमान नवाज़ी का इन्तिज़ाम बाद में करे।

३. आने वाले मेहमान को चाहिए कि सलाम में पेशक़दमी करे और दूसरों को चाहिए कि जवाब दें।

४. मेहमान नवाज़ी के लिए बहुत ज़्यादा तकल्लुफ़ात की फ़िक्र में न पड़े।

५. आसानी से जो अच्छी चीज़ मुयस्सर हो जाए वह मेहमान की ख़िदमत में पेश करे।

६. मेहमान के आदाब में से एक यह भी है कि मेहमान के सामने जो चीज़ पेश की जाए उसको क़ुबूल करे। खाने को दिल न चाहे तो थोड़ा बहुत दिलजोई के लिए शरीक हो जाए और अगर वह नुक़सानदेह हो तो उ़ज़्र कर दे। मेहमान का मेज़बान को इस तरह दुआ़ देना सुन्नत है।

اللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُم فِيمَا رَزَقْتَهُمْ واغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ

“अल्लाहुम्म बारिक लहुम फ़ीमा रज़क़्तहुम वग़्फ़िर लहुम वरह़महुम।” (मुस्लिम)

७. मेज़बान को चाहिए कि सिर्फ़ खाना वग़ैरह सामने रखकर फ़ारिग़ न हो जाए। बल्कि उस पर नज़र रखे कि मेहमान खा रहा है या नहीं। मगर यह नज़र इस तरह न हो कि मेहमान के खाने (पीने) को तक़ता रहे। सरसरी नज़र से देख ले। क्योंकि मेहमान के लुक़्मों को देखना आदाब ज़ियाफ़त के ख़िलाफ़ और मेहमान के लिए बाइसे शर्मिन्दग़ी होता है।

८. मेहमान को रुख़्सत करने के लिए मकान के दरवाज़े या बाहर कुछ दूर तक उस के साथ जाना मस्नून है। **(मिश्कात)**

९. मेज़बान का नेक व सालेह़ मेहमान से तलबे दुआ़ कराना और मेहमान का मेज़बान के लिए दुआ़ करना मस्नून है। **(मज़ाहिरे ह़क़)**

१०. ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमायाः जिस घर में (मेहमानों को) खाना खिलाया जाता है वहां ख़ैर (यानी रिज़्क़ व बरकत और भलाई) इतनी तेज़ी से पहुंचती है। जिस तरह ऊँट का गोश्त काटने में छुरी तेज़ी से कोहान की तरफ़ जाती है। **(इब्ने माजा)**

११. ह़ज़रत मालिक बिन फ़ुज़ला (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्ल०) अगर मैं किसी शख़्स के यहां जाकर मेहमान हूँ और वह मेरी मेहमानदारी न करे और मेरी ज़ियाफ़त का ह़क़ अदा न करे। फिर वह शख़्स मेरे यहाँ (कभी) मेहमान हो तो क्या मैं उस की मेहमानदारी करुँ या उस से बदला लूं (यानी मैं भी उस के साथ वही सुलूक करूँ जो वह मेरे साथ कर चुका है) आप (सल्ल०) ने फ़रमाया (नहीं उस से बदला न लो) बल्कि उस की मेहमानदारी करो। **(तिर्मिज़ी)**

जागने के शरअ़ी आदाब

१- सवेरे उठने के बाद दोनों हाथों से चेहरे और आँख को मलें ताकि नींद का ख़ुमार ख़त्म हो जाए। **(तिर्मिज़ी)**

२- जागने के बाद यह दुआ़ पढ़े-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ

“अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह़याना बअ़द मा अमातना व इलैहिन्नुशूर”

(बुख़ारी व मुस्लिम, अबूदाऊद, नसई)

३- जागने के बाद मिस्वाक करे। **(अबूदाऊद, मुस्नद अह़मद)**

४- बर्तन में हाथ डालने से पहले तीन बार हाथों को अच्छी तरह धो ले। **(अबूदाऊद)**

सोने के शरअ़ी आदाब

१. बिस्तर को झाड़ कर बिछाना। (तिर्मिज़ी)
२. बिस्मिल्लाह पढ़ते हुए बिस्तर पर बैठना। (मुस्लिम)
३. तस्बीह़ फ़ातिमा पढ़ना। (बुख़ारी व मुस्लिम)
४. चारो कुल मय फातिहा तीन-तीन बार पढ़ना। (अबूदाऊद)
५. सुरमा लगाना। (तिर्मिज़ी)
६. दाहिने करवट पर लेटना। (मुस्लिम)
७. दाहिना हाथ दायें गाल के नीचे रखना। (बुख़ारी व मुस्लिम)
८. सोने से पहले की दुआ पढ़ना जैसे-

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْیٰ

"अल्लाहुम्म बिस्मिका अमूतु व अह़या"

(बुख़ारी व मुस्लिम)

९. मस्जिद मे एतिकाफ की नियत कर के सोना जैसे-

بِسْمِ اللّٰهِ دَخَلْتُ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَنَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَافِ

"बिस्मिल्लाहि दख़लतु वअ़लैहि तवक्कलतु व नवैतु सुन्नतलू एतिकाफ़"

१०. घर के दरवाज़े 'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम' पढ़कर बंद करें। (मुस्लिम)
११. जिन बर्तनों में खाने पीने की चीज़ें हों उसे 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर ढांक दें। (मुस्लिम)
१२. आग जलती हो या सुलग रही हो उसको बुझा दें। (बुख़ारी, मुस्लिम)
१३. जिस रौशनी से आग लगने का ख़तरा हो उसको बुझा दें। (बुख़ारी, मुस्लिम)
१४. बीवी बच्चों के साथ नसीह़त की बातें करें। (शमायले तिर्मिज़ी)
१५. जब बच्चे दस साल के हो जायें तो बहन भाई के बिस्तर अलग कर दें। (अबूदाऊद, मिश्कात)
१६. आँखों में सुर्मा लगाएँ पहले दाईं आँख में फिर बाईं आँख में। (तिर्मिज़ी, मिश्कात)

१७. सोने से पहले मिस्वाक़ कर लें। (मिश्कात)
१८. सोने से पहले दोनों हाथों की हथेलियां मिलाकर उन पर फूंक मारें। एक तरफ़ 'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम' पढ़कर सूरः इख़्लास पढ़ें फिर पूरी 'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम' पढ़कर कुलअऊज़ू बिरब्बिल फ़लक़ फिर बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम पढ़कर कुल अऊज़ू बिरब्बिन्नास पढ़ें और दोनों हाथों को सर से पैर तक जहां तक हाथ पहुंचे फेर लें। पहले सामने से शुरु कर पैरों तक उसके बाद क़मर की तरफ़ फेर लें। इस तरह से तीन बार करें। (तिर्मिज़ी)
१९. खुद बिस्तर बिछायें तकिया लगायें। (मुस्लिम)
२०. चमड़े और खाल या चटाई या बोरिये या कपड़े के बिस्तर या ज़मीन या तख़्त पर सोना सुन्नत है। (तिर्मिज़ी)
२१. पेट के बल लेटना इस तरह कि सीना ज़मीन की तरफ़ हो और पीठ आसमान की तरफ़ मना किया गया है। (तिर्मिज़ी)
२२. कुर्आन मजीद में से कोई एक सूरः पढ़ें। (ह़दीस)
२३. तहज्जुद की नमाज़ के लिए नियत कर के सोयें।
२४. वुज़ू का पानी और मिस्वाक़ पहले से तैयार रखें।
२५. रात को सोने से पहले वुज़ू करके सोना सुन्नत है। (अबूदाऊद)
२६. गुस्ल फ़र्ज़ हो जाए तो उसी वक़्त गुस्ल करना अफ़ज़ल है। (बुख़ारी)
गुस्ल को जी न चाहे तो वुज़ू कर के सोए। (बुख़ारी व मुस्लिम, अबूदाऊद)
और यह भी न जी चाहे तो इस्तिंजा कर के सोए। (मुस्नद अह़मद)
और अगर यह भी न हो सके तो तयम्मुम कर के सोए। (मजमउल फ़वॉइद)
लेकिन सुबह़ सादिक़ हो जाने के बाद गुस्ल करने में देर न करे।

छींकने और जमाई के शरअ़ी आदाब

१. जब छींके तो 'अ़ल्ह़म्दुलिल्लाह' कहे। (अबूदाऊद)
२. सुनने वाले को चाहिए कि वह 'यरहकुमुल्लाह' कहे। (अबूदाऊद)

३. अगर कोई छींकने वाले के ‘अल्हम्दुलिल्लाह’ के जवाब में ‘यरहकुमुल्लाह’ कहे तो छींकने वाला उसके जवाब में ‘यहदिकुमुल्लाह’ व ‘युस्लहुबालकुम’ कहे। **(बुख़ारी)**

४. जब छींक आए तो अपने मुँह को हाथ या कपड़े से ढ़ांक ले और आवाज़ को हल्की रखे। **(अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)**

५. तीन बार अपने मुसलमान भाई की छींक का जवाब दे उससे ज़्यादा छींक आए तो वह ज़ुकाम है। **(अबूदाऊद)**

६. जब जम्हाई आए तो हाथ रखकर मुँह बन्द कर ले क्योंकि शैतान दाख़िल हो जाता है। **(अबूदाऊद, मुस्लिम)**

लिबास पहनने के शरअ़ी आदाब

१. अगर तहबन्द पहने तो इस तरह कि घुटने खुले न रहें।

२. कुर्ता पहनना कुर्ते की क़िस्म से हर वह कपड़ा जो पूरी आस्तीन का हो और सुरीन ढके रहें।

३. गोल टोपी, दोपल्ली टोपी और हर वह टोपी जिस में मुशाबहत कुफ्फार न हो।

४. पाइजामा पहनना, शलवार या छोटी मुहरी का पाइजामा जो न ज़्यादा चौड़ा हो और न पतला।

५. कोई ऐसा कपड़ा जिस से तकब्बुर की बू न आये।

६- पायजामा शलवार या लूंगी टख़्ना से ऊपर रखे।

७- नया कपड़ा पहन कर दुआ़ पढ़े।

८- बिना टोपी के अमामा बांधना सुन्नत के ख़िलाफ़ है।

९- काला अमामा बांधना और शिमला छोड़ना सुन्नत है।

१०- कपड़ा उतारते वक़्त ‘बिस्मिल्लाह’ कहें फिर बायें ओर से उतारें।

११- पहले बायां हाथ आस्तीन से निकालें फिर दायां हाथ। इसी तरह शलवार और पायजामा उतारते वक़्त पहला बायां पैर निकालें फिर दायां।

कुर्ता पहनने के शरअ़ी आदाब

१. पुराना कपड़ा पेवन्द लगा कर पहनना।

२. ‘‘बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम’’ पढ़ना।

३. दाहिनी आस्तीन में पहले दाहिना हाथ डालना।

४. फिर बायां हाथ डालना।

५. फिर सर में डाल कर दुरुस्त करना।

६. फिर यह दुआ़ पढ़े।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ

“अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़ा मिन ग़ैरि हौलिन मिन्नी वला क़ूव्वः”

पाइजामा पहनने के शरअ़ी आदाब

१. ‘‘बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम’’ पढ़ना।

२. बैठ कर पहनना।

३. दाहिने पैर में डालना।

४. फिर बायें पैर में डाल कर खड़े हो कर बाँधना।

५- पायजामा या शलावार पहने तो पहले दाहिनें पैर में फिर दाएँ पैर में, कमीज़ पहनें तो पहले दायें हाथ में, फिर बायें हाथ में, इसी तरह सदरी और जूता। पहले दायें पैर में फिर बायें में और जब उतारें तो पहले बायें तरफ़ का उतारें फिर दायें का और बदन की पहनी हुई हर चीज़ के उतारने का यही सुन्नत तरीक़ा है।

जूता पहनने के शरअ़ी आदाब

१- जूता पहले दाहिने पैर में पहनना फिर बायें पैर में पहनना।

२- उतारते वक़्त पहले बायें पैर से उतारें फिर दायें पैर से।

३- जब नया जूता पहनें तो यह दुआ़ पढ़ें-

اَللّٰهُمَّ اِنّی اَسْئَلُکَ مِنْ خَیْرِہٖ وَخَیْرِ مَا هُوَلَهٗ وَاَعُذُبِکَ مِنْ شَرِّہٖ وَشَرِّ مَا هُوَلَهٗ

"अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुका मिन ख़ैरिही व ख़ैरि मा हुवा लहू व अऊज़ू बिका मिन शर्रिही व शर्रि मा हुवा लहु।"

बालों के शरई़ आदाब

१. 'वफ़रा' रखाना यानी कान के ऊपरी हिस्सा से पीछे का मुँडाना और सीधी मांग निकालना।
२. 'लम्मा' रखाना यानी कान के नीचे से मुँडाना जिस को पट्टा कहते हैं।
३. 'जुम्मा' रखाना यानी गर्दन की इब्तिदा से कटवाना जिस को काकल कहते हैं।
४. हजामत के साथ बगल भी मुँडाना।
५. ज़ेरे नाफ़ हर हफ़्ता में या चालीस दिन से पहले मुँडाना या साफ़ करना।
६. मूंछों को क़तरने में मुबालिग़ा करना सुन्नत है।
७. बालों को धोना, तेल लगाना और कंघा करना सुन्नत है।
८. सर में तेल डालने की शुरुआ़त पेशानी की तरफ़ से करना।
९. कंघा पहले दायें से शुरु करना।
१०. शीशा देखते वक़्त यह दुआ़ पढ़ना-

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَحَسِّنْ خُلُقِیْ

"अल्ह़म्दुलिल्लाह- अल्लाहुम्मा कमा ह़स्सन्ता ख़ल्क़ि फ़ह़स्सिन ख़ुलुक़ी।"

नाखून काटने के शरई़ आदाब

१. हाथ के नाखून- दाहिने हाथ के कलिमा की उंगली से शुरु करके हाथ की छोटी उंगली पर खत्म करना।
२. बांए हाथ की छोटी उंगली से शुरु करके अंगूठे पर खत्म करना।
३. **पैर के नाखून-** दाहिने पैर की छोटी उंगली से शुरु करके अंगूठे पर खत्म

करना।
४. बांए पैर के अंगूठे से शुरु करके छोटी उंगली पर ख़त्म करना।

अंगूठी पहनने के शरई़ आदाब

१. चाँदी की अँगूठी पहनें।
२. सीधे हाथ की छिंगुलिया में पहनें।
३. नगीना नीचे रखें, चाँदी का या पत्थर का।

मस्जिद मे दाखिल होने के शरई़ आदाब

१. "बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रह़ीम" पढ़ना।
२. दाहिना क़दम अन्दर रखना।
३. दाख़िल होने की दुआ़ पढ़ना जैसे-

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ

"अल्लाहुम्मफ़ तह़ली अबवाब रह़मतिक"

४. 'अस्सलामु अ़लैकुम' कहना चाहे मस्जिद में कोई भी न हो।
५. एतिकाफ़ की नियत करना।
६. इस्तेहज़ारे खुदा वन्दी का ख़याल करते हुए दाख़िल होना।
७. वापसी मे बायां क़दम पहले बाहर निकालना।
८. बायां क़दम मस्जिद से निकाल कर जूते या चप्पल पर रखना फिर दाहिने पैर में पहन कर बायें पैर में पहनना।
९. एहतिरामें मस्जिद को मुक़द्दम रखना।
१०. वापसी की दुआ़ पढ़ना जैसे-

اَللّٰهُمَّ اِنّیْ اَسْئَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ

"अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुका मिन फ़ज़्लिक"

बैतुल ख़ला (लैट्रीन) के शरअ़ी आदाब

१. इस्तिंजे के लिए पानी और ढेले दोनों ले जाए, तीन ढ़ेले या पत्थर हों तो बेहतर है।
२. जाते हुए बायां पैर अन्दर रखें। **(इब्ने माजा)**
३. क़दमचे पर सीधा क़दम रखे और उतरने में बायां पैर क़दमचे से नीचे रखे।
४. बैतुल ख़ला जाने से पहले अंगूठी या किसी चीज़ पर क़ुर्आन शरीफ़ की आयत और हुज़ूर का मुबारक नाम लिखा हो और दिखाई देता तो उसको उतार कर बाहर ही छोड़े दें। **(नसई)**
५. तावीज़ जिसको मोमजामा कर लिया गया हो या कपड़े में सी लिया गया हो उसको पहन कर जाना जायज़ है।
६. जब बदन नंगा करे तो आसानी के साथ जितना नीचे होकर खोल सकें तो उतना ही बेहतर है। **(तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)**
७. सर ढ़ाक कर और जूता पहन कर बैतुल ख़ुला जायें। **(इब्ने सअ़द)**
८. दाखिले की दुआ़ दिल मे पढ़ना। जैसे-

بِسْمِ اللّٰهِ۔ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِکَ مِنَ الۡخُبُثِ وَالۡخَبَآئِث

"बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिनल्ख़ुबुसि वल् ख़बाइसि।"

(तिर्मिज़ी)

९. बांये पैर पर ज़ोर देकर बैठना।
१०. चलती हुई हवा का रुख न करना।
११. परदे की जगह का तलाश करना।
१२. क़िब्ला का एहतिराम करना, यानी बैठने की सूरत में न क़िब्ला की तरफ मुहं हो और न पीठ हो। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**
१३. मिट्टी के तीन ढेलों से साफ़ करना। **(तिर्मिज़ी)**
१४. फिर पानी से पाक करना। **(तिर्मिज़ी)**

१५. इस्तिंजे में बिला ज़रुरत बात न करें और न अल्लाह का ज़िक्र करें। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**
१६. पेशाब करते वक़्त या इस्तिंजा करते वक़्त ख़ास हिस्से को दायां हाथ न लगायें। बल्कि बायां हाथ लगाएँ।
१७. पेशाब करने के लिए नर्म जगह और बैठ कर पेशाब करना चाहिए।
१८. इस्तिंजा के लिए किसी आड़ में बैठें या इतनी दूर चले जाएँ कि लोगों की निगाह न पड़े। **(तिर्मिज़ी)**
१९. लोगों के रास्ते में पाख़ाना न करे और न ही लोगों के किसी साया के नीचे पाख़ाना करे। **(मुस्लिम)**
२०. फारिग़ होने के बाद की दुआ़ पढ़ना जैसे-

غُفْرَانَکَ ۔اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیۡ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِی

"ग़ुफ़रानका अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़हबा अन्निल अ़ज़ा व आफ़ानी"

(तिर्मिज़ी)

पेशाब करने के शरअ़ी आदाब

१. एहतिरामे क़िब्ला यानी क़िब्ला की तरफ मुंह न करना।
२. ऊँची जगह पर बैठ कर पेशाब न करना।
३. पेशाब की छीटों से एहतियात करना।
४. बैठ कर पेशाब करना।
५. सर ढक कर पेशाब करना यानी टोपी वग़ैरह से ढकना।
६. रास्ते पर और उस दरख़्त के नीचे जिस के साये से लोग फायदा उठाते हों पेशाब न करना।
७. पाइजामा पहनने की सूरत में कमर बन्द खोलकर पेशाब करना, ताकि छींटों से एहतियात रहे।
८. सतर का छिपा होना यानी रान और सुरीन न खुले।

घर में दाख़िल होने और बाहर निकलने के शरअ़ी आदाब

१. दाहिने पैर से दाख़िल होना।

२. 'बिस्मिल्लाह' पढ़ते हुए दाख़िल हो। **(अबूदाऊद)**

३. घर में दाख़िल होते वक़्त कोई न कोई ज़िक्र करे।

४. घर में दाख़िल होते वक़्त यह दुआ़ पढ़े-

اَللّٰهُمَ اِنّی اَسئلُکَ خَیُرَ الُمولَجِ وخَیرَالُمَخُرَجِ بِسُمِ اللّٰهِ
ولَجِّنَا وَ بِسُمِ اللّٰهِ خَرَجُنَا وَعَلَی اللّٰهِ رَبِّنَا تَوكَّلنا

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुका ख़ैरल मौलिजी व ख़ैरल् मख़रजि, बिस्मिल्लाहि वलज्ज़िना व बिस्मिल्लाहि ख़रजना व अ़लल्लाहि रब्बना तवक्कल्ना।"

५. घर वालों को सलाम करे। **(मुस्लिम)**

६. घरवालों को कुंडी या पैरों की आहट से ख़बरदार कर दे।

७. मेहमान जब रुख़्सत हो तो घर के दरवाज़े तक उसको छोड़े।

८. घर से बाहर निकले तो यह दुआ़ पढ़े-

لَا حَوُلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

"लाहौला वला कूव्वता इल्ला बिल्लाह"

बाज़ार जाने के शरअ़ी आदाब

१. खुद अपना सौदा ख़रीद कर लाना, दूसरों के भी काम आना।

२. बाज़ार पहुंच कर चौथा कलमः कसरत से पढ़ना।

३. सौदा ख़रीदने और बेचने में साफ़गोई से काम लेना।

४. नाप तौल में इन्साफ़ से काम लेना।

५. सौदे के ऐब को ज़ाहिर करना।

६. ग्राहक को धोखा न देना।

७. झूठी क़सम खाने से परहेज़ करना।

८. खोटा सिक्का चलाने मे एहतियात करना।

९. बाज़ार जाते हुए ये दुआ़ पढ़ना। जैसे-

اللهُمَّ اِنّی أعُوذُبِکَ مِن فِتُنَةِ النسَاعِ وَعَذَابِ القَبُر

"अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिका मिन फ़ित्नतिन्नसाइ व अज़ाबिल्क़ब्र"

दाढ़ी, मूँछ और बालों के शरअ़ी आदाब

१. एक मुश्त के बाद, दाढ़ी दायें-बायें के बाल बराबर कर सकते हैं।

२. एक मुश्त या उससे बड़ी दाढ़ी रखना मूंछों के कतरवाने में मुबालिग़ा करना।

३. सर और दाढ़ी के बालों को दुरुस्त कर के तेल लगाना।

४. सर और दाढ़ी में कंघा करना।

५. सुन्नत के मुताबिक़ बाल रखना।

६. दाढ़ी में मेंहदी लगा सकते हैं।

बच्चा पैदा होने के बाद के शरअ़ी आदाब

१. बच्चे के दायें कान में अज़ान और बायें कान में तकबीर कहना।

२. नाम जल्दी और अच्छा रखना।

३. सातवें रोज़ नाम रखकर अक़ीक़ा करना।

४. किसी अल्लाह वाले से छुहारा चबवा कर बच्चे के मुँह में लगाना और दुआ़ कराना।

क़ब्रस्तान जाने के शरअ़ी आदाब

१. नेक नियत से जाना-यानी मरने वालों को नफ़ा पहुंचाने की ग़र्ज़ से जाना।
२. अस्सलामुअ़लैकुम या 'अहलल् क़ुबूर मिनल्मुस्लिमीन वल्मुस्लिमात' कहना।
३. मरने वालों के लिए दुआ़-ए-मग़्फिरत करना।
४. अपने मरने का भी ध्यान करना यानी ये सोचना कि कैसी-कैसी अरमानें लेकर चले गये और दुनिया का क्या हुआ सब छोड़ गये।
५. उस ज़िन्दगी की तैयारी में लग जाना यानी अअ़माले खैर की तरफ मुतवज्जह होना।
६. मैदाने हश्र का ध्यान करना कि सूरज का क़रीब होना और सत्तर हज़ार बरस का दिन होना।
७. क़ब्रस्तान में चलते हुए क़ब्रों पर पैर रखने और बैठने से एहतियात करना।
८. हर जाने वाले को कम से कम इतना कहना ज़रुरी है, और ये भी दुआए मग़्फिरत है।

जैसे-

يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ

"यग़्फ़िरुल्लाहु लना वलकुम"

मुर्दे को नहलाने के शरअ़ी आदाब

१. जिस तख़्ता पर नहलाना हो उस का पाक होना।
२. तख़्ते पर मय्यत को लिटा कर हल्के हाथों पेट को दबाना।
३. दस्ताना पहन कर तीन बार या पाँच बार या सात बार ढेले से साफ करना।
४. बैर की पत्ती पानी में गर्म करके नहलाना।
५. नहलाने में मुल्तानी मिट्टी या साबुन का इस्तेमाल करना।
६. पर्दे का बहुत ही एहतिमाम करना।
७. जिस्म का निचला हिस्सा अच्छी तरह साफ करना।
८. जिस्म को अच्छी तरह मिट्टी या साबुन वग़ैरह लगा कर साफ करना।

९. दूसरा दस्ताना पहन कर वुज़ू करवा कर सर से पैर तक तीन बार पानी बहाना।
१०. फिर दाहिने करवट करके तीन बार पानी बहाना।
११. फिर बायें करवट तीन बार पानी बहाना।
१२. किसी खुश्क़ कपड़े से बदन पोंछ कर साफ करना।

कफन और कफनाने के शरअ़ी आदाब

कफ़न मर्द के लिए तीन कपड़े और औ़रत के लिए पाँच कपड़े होते हैं।

१. एक बड़ी चादर जिस का साइज़ ढाई गज़ लम्बा और सवा गज़ चौड़ा हो पहले चारपाई पर बिछाया जाए।
२. फिर एक चादर जिसका साइज़ सर से पैर तक हो बड़ी चादर के ऊपर रखे।
३. फिर कफनी सर से डालकर मूंढे से घुटने के नीचे तक करे।
४. औ़रत के लिए एक सीना बन्द हो।
५. एक कपड़ा इसी साइज़ का हो जिसे ओढ़नी या दुपट्टा कहते है।
६. फिर खुश्बू के लिए काफूर इतर वग़ैरह हो तो भी इस्तेमाल कर सकते है।

नोट- पहले बड़ी चादर चारपाई पर बिछा दें इस तरह कि ऊपर का आधा हिस्सा समेट कर सरहाने कर दें फिर मय्यित, मर्द की रखकर कफनी के ऊपर का हिस्सा जो समेटा हुआ रखा है सर में डाल कर पूरा खोल दें, फिर वह कपड़ा जिस को लपेट कर लाए हैं, निकालें फिर छोटी चादर लपेटने से पहले काफूर नाक में और हाथ पैर के जोड़ों पर लगाएँ, फिर इतर को दाढ़ी में मुँह और पेशानी पर लगा कर छोटी चादर का बांया पल्ला पलटें, फिर दाहिना पल्ला पलट कर दोनों इसी तरह पलट कर तीन पट्टीयों से बांध दें, इस तरह मर्द का जनाज़ा तैयार हो गया किसी चादर से ढक कर ले जाएं जिस चादर का नई होना ज़रुरी नहीं।

औ़रत मय्यत के पाँच कपड़े

कफन ऊपर की तरह चारपाई पर फैला कर कफनी समेट कर सिरहाने

रख कर सीना बन्द बेड़ा करके फैला दें, फिर औ़रत की मय्यित को रख कर सीना बन्द बगल से निकाल कर लपेट दें, फिर कफनी फैला कर सर के बालों को दो हिस्सों में करके दुपट्टा लपेट कर सीना पर रखदें। फिर खुश्बू वगैरह लगा कर दोनों चादरें लपेट कर पट्टी से बांधे, फिर किसी चादर से ढक कर ले जाएँ।

दफ़नाने के शरई़ आदाब

१. नमाज़ जनाज़ा पढ़ कर मय्यित की चारपाई क़ब्र के पश्चिम की तरफ़ रखें।
२. फिर ऊपर की चादर लपेट कर पैरों की तरफ से कमर में डालकर उतारें।
३. लहद में रखने से पहले चादर एक तरफ़ से खीच लें।
४. औ़रत की मय्यिम पर चादर से पर्दा करें।
५. औ़रत की मय्यित के उतारने में महरम का होना बेहतर है।
६. मय्यित को लहद में पूरब की दीवार के सहारे दाहिनी करवट पर रखें।
७. कफ़न में बंधी हुई पट्टी की गांठे खोल दें और मुंह न खोलें।
८. क़ब्र में काफूर सन्दल वग़ैरह पानी में घोल कर लहद मे छिड़कें।
९. पहले सरहाने की तरफ से बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम पढ़ कर मिट्टी डालें।
१०. क़ब्र में उतारते समय यह दुआ़ पढ़ें-

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि व अ़ला मिल्लते रसूलिल्लाहि"

मौत और उसके बाद के शरई़ आदाब

१. जब मौत की ख़बर सुने तो यह दुआ़ पढ़े-

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

"इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊन"

२. जब यह मालूम होने लगे मौत का वक़्त करीब है तो उस समय जो लोग मौजूद

हों उसका मुँह क़िब्ला की तरफ़ फेर दें। **(मुस्तदरक हाकिम)**
३. जब मौत क़रीब मालूम हो तो यह दुआ़ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَالْحِقْنِيْ بِالرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى

"अल्लाहुम्मग़्फ़िरली वरह़मूनी व अल्ह़िक़्नी बिर्रफ़ीक़िल आ़ला"

(बुखारी,मुस्लिम,तिर्मिज़ी)

४. जब रुह़ निकलने के आसार महसूस हों तो यह दुआ़ पढ़े। **(तिर्मिज़ी)**

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّيْ عَلٰى غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَسَكَرٰتِ الْمَوْتِ

"अल्लाहुम्मअइन्नी अ़ला ग़मरातिल्मौति व सक़रातिल् मौति। "

६. रुह़ निकल जाने के बाद मय्यित की आँखे बन्द कर दे।
७. जो शख़्स मय्यित को तख़्त पर रखने के लिए उठाए या जनाज़ा उठाए तो 'बिस्मिल्लाह' कहे। **(इब्ने अबीशैबा)**
८. मय्यित को जल्दी दफ़नाना सुन्नत है। **(सुनने अबीदाऊद)**
९. मय्यित को क़ब्र में दाहिनी करवट पर इस तरह लिटाना चाहिए कि पूरा सीना कअ़बः की तरफ़ हो और पुश्त को कब्र की दीवार से लगा दें।
१०. मय्यित के रिश्तेदारों को खाना देना मस्नून है उस खाने को तमाम बिरादरी या रिश्तेदारों को खाना दुरुस्त नहीं, मय्यित वालों के खाने में जो शरीक हैं उनके लिए ये खाना जाइज़ है।
११. क़ब्र को न बहुत ऊँची करें न पुख़्ता बनाएं।
१२. क़ब्र पर पानी छिड़कना सुन्नत है। **(अबूदाऊद, हाकिम, बैहक़ी)**
१३. जब मय्यित के दफ़न से हुज़ूर (सल्ल०) फ़ारिग़ होते तो खुद भी और दूसरों को भी फ़रमाते अपने भाई के लिए अस्तग़फ़ार करो और साबित क़दम रहने की दुआ़ करो।
१४. जब मय्यित को क़ब्र में रखें तो यह दुआ़ पढ़ें-

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ

"बिस्मिल्लाहि व अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाहि (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)।"

नहाने के शरअ़ी आदाब

१. पानी को एहतियात की जगह पर रखना ताकि निजासत की छींटे न पड़े।
२. पहले दोनों हाथ पहुँचों तक तीन बार धोना।
३. छोटा बड़ा इस्तिंजा करना।
४. फिर निचला हिस्सा इस तरह धोना कि निजासत का शक भी न रहे।
५. अगर वही नजिस कपड़े पहने हुए नहा रहा है तो उस को भी पाक करना।
६. उस कपड़े का तार-तार भिगोना।
७. फिर वुज़ू करना मगर दो चीज़ों का ध्यान रखना कुल्ली में ग़रारा करना। नाक में नर्म हड्डी तक पानी पहुंचा कर हाथ की छोटी उंगली से कुरेद कर साफ करना। लेकिन अगर रोज़ः हो तो ग़रारा न करें।
८. इसके बाद पानी सर पर डालना फिर दायें कंधे पर फिर बायें कंधे पर फिर बदन को हाथ से मले, यह एक बार हुआ फिर दोबारा इसी तरह पानी डाले पहले सर पर, फिर दायें कंधे पर, फिर बायें कंधे पर (जहां बदन सूखा रहने का अन्देशा हो वहां हाथ से मलकर पानी बहाने की कोशिश करे) फिर इसी तरह तीसरी बार पानी सर से पैर तक बहाए।
९. गुस्ल के बाद बदन को कपड़े से साफ़ करना भी साबित है और न साफ़ करना भी।
१०. फिर पानी इतना और इस तरह बहाना कि जिस्म का कोई हिस्सा बाल बराबर सूखा न रहे।

वुज़ू के शरअ़ी आदाब

१. नियत करना।
२. ऊँची जगह बैठना।
३. "बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम" पढ़ना।
४. क़िब्ला रुख होना।

५. दोनो हाथों को गट्टों तक धोना।
६. तीन बार कुल्ली करना।
७. मिस्वाक करना।
८. तीन बार नाक में पानी पहुँचाना फिर बांये हाथ की छोटी उंगली से नाक को कुरेद कर साफ करना।
९. हर अंग को तीन बार धोना।
१०. लगातार धोना।
११. पानी के इस्राफ़ से बचना।
१२. पूरे सर का मसह़ सुन्नत के मुताबिक करना।
१३. हाथ पैर की उंगलियों और दाढ़ी का खिलाल करना।
१४. वुज़ू के बाद कलिमा शहादत पढ़ना जैसे-

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

"अश्हदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू।"

१५. वुज़ू के बाद की दुआ पढ़ना जैसे-

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

"अल्लाहुम्मज अ़लनी मिनत्तौव्वाबीन वजअ़लनी मिनल् मुततह्हि़रीन"

१६. आसमान की तरफ़ देख कर सूर-ए-क़द्र पढ़ना।

मिस्वाक़ के शरअ़ी आदाब

१. मिस्वाक एक बालिश्त से ज़्यादा लम्बी न हो, और उंगली से ज़्यादा मोटी न हो।
२. क़ुर्आन करीम की तिलावत करने के लिए।
३. मुँह में बद्बू हो जाने के वक़्त।
४. ह़दीस शरीफ़ पढ़ने या पढ़ाने के लिए।
५. ज़िक्र इलाही से पहले।
६. इल्म दीन पढ़ने या पढ़ाने के वक़्त।

७. बीवी के साथ मुजामिअ़त से पहले।
८. ख़ान-ए-कअ़बः या ह़तीम में दाख़िल होने के बाद
६. अपने घर में दाख़िल होने के बाद।
१०. भूक प्यास लगने के वक़्त।
११. किसी भी मजलिस ख़ैर में जाने से पहले।
१२. सह़र के वक़्त
१३. मौत के आसार पैदा हो जाने के वक़्त।
१४. हर वुज़ू करते वक़्त मिस्वाक करना सुन्नत है।
१५. सोने से पहले।
१६. सोकर उठने के बाद।
१७. खाना खाने से पहले
१८. सफ़र में जाने से पहले
१६. सफ़र में आ जाने के बाद।
२०. इसमें अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी है, मिस्वाक दिल को पाक करती है।

अज़ान और मुअ़ज़्ज़िन के शरअ़ी आदाब

१. मुअज़्ज़िन का मर्द होना।
२. मुअज़्ज़िन का आ़क़िल होना।
३. मुअज़्ज़िन का मसायले ज़रुरिया से वाक़िफ होना।
४. मुअज़्ज़िन का परहेज़गार और दीनदार होना
५. लोगों के हाल से बाख़बर होना।
५. मुअज़्ज़िन का बुलन्द आवाज़ होना।
६. अज़ान का किसी ऊँचे मुक़ाम पर मस्जिद से अलग कहना।
७. अज़ान खड़े होकर कहना।
८. अज़ान कहते हुए कान के सुराखों को बन्द करना।
६. अज़ान के अल्फाज़ों को रुक-रुक कर अदा करना।
१०. अज़ान में हय्या अलस्सलाह़ कहते हुए दाहिनी तरफ मुंह फेरना और हय्या

अलल् फ़लाह़ कहते हुए बांये तरफ मुंह फेरना।
११. अज़ान और इक़ामत का क़िब्लारु होकर कहना।
१२. अज़ान कहते समय बड़ी नापाकी से पाक होना।
१३. अज़ान और इकामत के अलूफ़ाज़ तर्तीबवार कहना।
१४. अज़ान व इकामत की ह़ालत में कोई दूसरा कलाम न करना चाहे वह सलाम या जवाबे सलाम ही क्यों न हो।
१५. जब अज़ान सुने तो तिलावत, ज़िक्र और तस्बीह़, बन्द करके अज़ान का जवाब दे अर्थात नमाज़ के कलिमात को दोहराए। जब मुअ़ज़्ज़िन ह़य्या अ़लस्सलाह और ह़य्या अ़लल्फ़लाह कहे तो जवाब में "लाहौलावला कुव्वता इल्ला बिल्लाह" कहे।
१६. फ़ज्र की अज़ान में "अस्सलातु ख़ैरूम मिनन्नौम" के जवाब में "सदक़्ता व बररता" कहे।
१७. इक़ामत का जवाब भी अज़ान की तरह दे। लेकिन "क़दक़ामतिस्सलाह" के जवाब में "अक़ामहल्लाहु व अदामहा" कहे।
१८. अज़ान ख़त्म होने के बाद दुरुद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है। फिर यह दुआ़ पढ़ें-

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَتِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِعَةِ اٰتِ
مُحَمَّدَنِا لْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُوْدَا الَّذِىْ
وَعَدْتَّهٗ اِنَّکَ لاَ تُخْلِفُ الْمِيعَادَ

"अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद्दअ़वतित्ताम्मति वस्सलातिल् क़ाइमति आति मुह़म्मदनिल् वसीलता वल्फ़ज़ीलता वबअ़स्हु मक़ामम मह़मूदा अल्लाज़ी व अद्तहु इन्नक ला तुख़्लिफ़ुल मीआ़द।"

नमाज़ में क़ियाम के शरअ़ी आदाब

१. पैर के पंजों को क़िब्ला रुख सीधा रखना।
२. चार उंगली से छः उंगली का फ़ासला रखना।
३. हाथों को कानों तक उठाना।

४. हाथों को क़िब्ला की तरफ रखना।
५. हाथ को नाफ़ के नीचे रखना।
६. बांये हाथ की कलाई पर दाहिने हाथ की कलाई रखना।
७. हाथ की छोटी उंगली और अंगूठे से हल्क़ा बाँधना।
८. दर्मियान की तीन उंगलियों को कलाई पर रखना।
९. निगाह सजदः पर रखना।
१०. मूंढे से मूंढा मिलाए रखना।
११. दोनो पैरों पर बराबर बोझ रखना।
१२. सफ़ को सीधी रखना।
१३. आऊज़ु बिल्लाह और बिस्मिल्लाह पढ़ना
१४. सना पढ़ना।
१५. सूरः फातिहा खत्म होने पर चुपके से 'आमीन' कहना।

औरतों की नमाज़

१. हाथ को कंधो तक उठाना।
२. हथेलियों को क़िब्ले की तरफ रखना।
३. हाथ सीने पर रखना।
४. दाहिनी हथेली बांयी हथेली पर रखना।
५. दर्मियान की तीन उंगलियों को कलाई पर रखना।
६. निगाह सज्दः की जगह रखना।
७. आऊज़ु बिल्लाह, और बिस्मिल्लाह पढ़ना।
८. सना पढ़ना।
९. सूरः फ़ातिहा के ख़त्म पर आमीन कहना।

नमाज़ में रुकूअ के शरअ़ी आदाब

१. सर और कमर को बराबर रखना।

२. हाथों और पैरों को सीधा रखना।
३. उंगलियों को कुशादा करके घुटनों को मज़बूत पकड़ना।
४. खुदा के सामने झुकने का ध्यान रहना।
५. नज़र पैर के अंगूठों पर रखना।
६. रुकूअ़ की तस्बीह़ पढ़ना।
७. ताक अदद में पढ़ना।

सज्दे के शरअ़ी आदाब

१. सज्दे में पहले दोनों घुटनों को ज़मीन पर रखना।
२. फिर नाक और पेशानी रखना।
३. पेट को रानों से और पहलुओं को बाजुओं से अलग रखना।
४. कोहनियों को ज़मीन से अलग रखना।
५. नज़र हाथ के अंगूठों पर रखना।
६. पैरों को पंजों के बल खड़ा रखना।
७. सज्दः की तस्बीह़ पढ़ना।
८. खुदा के सामने नाक रगड़ने का ध्यान रहना।
९. उठते समय पहले नाक फिर हाथ फिर घुटनों को उठाना।

औ़रतों के लिए

१. पेट को रानों से और बाहें पहलुओं से मिलाए रखना।
२. कुहनियों को ज़मीन से बिछी रखना।
३. हाथ के अंगूठों पर नज़र रखना।
४. पंजो को बिछाकर दोनों पैर दाहिनी तरफ निकाल कर बैठना।

कअ़दे के शरअ़ी आदाब

१. दायें पैर को खड़ा रखना और बायें पैर को बिछाकर उस पर बैठना।

२. पैर की उंगलियों को क़िबले की तरफ रखना।
३. दोनो हाथों को रानों पर रखना।
४. तशहहुद (अत्तहियातु) में "अशहदुअल्लाइलाह" पर शहादत की उंगली को उठाना और इल्लल्लाह पर झुका देना।
५. कअ़दा आखीरा में दुरुद शरीफ़ पढ़ना।
६. दुरुद शरीफ़ के बाद दुआ़-ए-मासूरा इन अल्फाज़ में जो हदीस हों पढ़ना।
७. दोनों तरफ़ सलाम फेरना।
८. सलाम की दाहिनी तरफ से इब्तिदा (शुरु) करना।
९. इमाम को मुक्तदियों फ़रिश्तों और सालेह़ जिन्नात की नियत करना।
१०. मुक्तदियों को इमाम व फ़रिश्तों और सालेह़ जिन्नात और दायें बायें मुक्तदियों की नियत करना।
११. मुनफ़रिद को सिर्फ फ़रिश्तों की नियत करना।
१२. मुक्तदी को इमाम के साथ-साथ सलाम फेरना।
१३. दूसरे सलाम की आवाज़ को पहले सलाम पे पस्त करना।
१४. रुकूअ़ में हाथ की उँगलियाँ फैली हुई रखना और सज्दः में यह उंगलियाँ मिली हुई रखना।

नमाज़ के वह आदाब जो सबके लिए यकसाँ हैं

खड़े होने की हालत में सज्दः की जगह पर, और रुकूअ़ की ह़ालत में पैर पर, सज्दे की हालत में नाक पर और सलाम फेरते वक्त कंधों पर नज़र रहे, और जमाई आये तो रोकें और अगर न रुके तो दाहिने हाथ की पुश्त से रोकें और जब खांसी का असर मालूम हो तो भी रोकने की कोशिश करें और ज़ब्त करें सिर्री नमाज़ में इतनी आवाज़ से पढ़ें कि खुद सुन सकें सलाम फेर कर एक बार अल्लाहु अकबर कहे फिर तीन मर्तबा 'अस्तग़फ़िरुल्लाहि' कहे।

दुआ़ में हाथ उठाने के शरअ़ी आदाब

१. हाथों को कंधों के सामने रखना।
२. हाथों और उंगलियों को कुशादा रखना।
३. दुआ़ में दिल का हाज़िर होना और कुबूलियत का यक़ीन होना।
४. दुआ़ की इब्तिदा और इन्तिहा दुरुद शरीफ़ से करना।
५. खुदा की बड़ाई और मेहरबानी और अपनी बदआमाली और नाफ़रमानी का ध्यान होना।
६. इमाम की दुआ़ पर 'आमीन' कहना।
७. दुआ़ की ह़ालत में दोज़ानू बैठना।
८. दुआ़ में आजिज़ी और इन्किसारी होना।
९. दुआ़ के बाद हाथों का मुंह पर फेरना।

नमाज़े जुमा के शरअ़ी आदाब

१. जुमअ़ के दिन गुस्ल करें सर के बाल हों तो उनको और बदन को ख़ूब साफ़ करें।
२. मिस्वाक करें।
३. अच्छे से अच्छा कपड़ा पहने, हो सके तो खुश्बू लगाए, नाख़ून वग़ैरह काटे।
४. जामे मस्जिद में बहुत जल्दी जाए।
५. नमाज़े जुमअ़ के लिए पैदल जाए।
६. खुत्बः पढ़ने की ह़ालत में, पढ़ने वाले को खड़ा होना।
७. दोनों खुत्बों के दर्मियान में इतनी देर बैठना की कम से कम तीन बार "सुब्ह़ान अल्लाह" कह सके।
८. दोनों खुत्बे पढ़ना।
९. दोनों हदसों (पेशाब पाखाना) से पाक होना।
१०. खुत्बः पढ़ने की ह़ालत में मुंह लोगो की तरफ होना।

११. खुत्बः शुरु करने से पहले आहिस्ता से यह कहना–
१२. खुत्बः ऐसी आवाज़ से पढ़ना कि लोग सुन सकें।
१३. खुत्बः में आठ क़िस्म के मज़ामीन का होना।
१४. खुत्बः को ज्यादा तूल न देना बल्कि नमाज़ से कम रखना।
१५. जुमअ़ को फ़ज्र की नमाज़ में पहली रकअ़त में इमाम 'अलिफ़-लाम-मीम् सज्दः' और दूसरी रकअ़त में 'हलअताका हदीसुल ग़ाशियः' की सूरः पढ़ना, लेकिन कभी-कभी छोड़ भी देना।
१६. जुमअ़ की नमाज़ में इमाम पहली रकअ़त में सूरः जुमअ़ और दूसरी रकअ़त में 'सूरः मुनाफ़िक़ून' या पहली रकअ़त में 'सब्बिहिस्मरब्बिकल्आला' दूसरी में 'सूरः ग़ाशिया' पढ़े।
१७. जुमअ़ की नमाज़ से पहले या बाद में जो सूरः कहफ़ पढ़ें तो उसके लिए अ़र्श के नीचे से आसमान के बराबर बुलन्द एक नूर ज़ाहिर होगा, जो क़ियामत के अंधेरे में उसके काम आएगा और उस जुमअ़ से पहले जुमअ़ तक जितने गुनाह उससे हुए सब माफ़ हो जाएँगें।
१८. जुमअ़ के दिन कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ना।

इस के सिवा जो जुमा के दिन सूरः कहफ पढ़ेगा उसके लिए अर्श के नीचे से आसमान के बराबर एक नूर ज़ाहिर होगा जो क़ियामत के अंधेरे में उसके काम आयेगा।

रमज़ान के शरअ़ी आदाब

१. सहरी आख़िरी वक्त में खाना सुन्नत है।
२. एक दो लुक्मा खाना इसी तरह एक दो घूंट पानी पीने से भी सहरी की सुन्नत अदा हो जायेगी।
३. सूरज डूबते ही रोज़ः खोलना और अब्र (बदली) के दिन थोड़ी देर करना सुन्नत है।
४. छुहारा या ख़ज़ूर से इफ्तार करना बेहतर है।
५. रमज़ान में किसी वजह से किसी का रोज़ः टूट जाए तो रोज़ः टूटने के बाद दिन

में कुछ खाना-पीना दुरुस्त नहीं है।
६. तरावीह सुन्नत मुअक्क़िदा (ज़रुरी) है बीस रकअ़त दो-दो रकअ़त करके पढ़ना चाहिए और पूरा क़ुर्आन सुनना या पढ़ना सुन्नत है।
७. दाढ़ी एक मुश्त रखना ज़रुरी है।
८. रमज़ान में कम से कम तीन चार मिनट की एहतियात रखनी चाहिए।
६. सहरी आख़िरी टाइम दस मिनट पहले एहतियातन खत्म कर दी जानी चाहिए।
१०. रमज़ान में कलिमा-ए-तय्यिबः कसरत से पढ़ना।
११. जन्नत का सवाल करना।
१२. दोज़ख से पनाह माँगना।
१३. क़ुर्आन की तिलावत और दुरुद शरीफ़ जितना हो सके पढ़ना।
१४. खुसूसी मेहमानों की मेहमान नवाज़ी खुद फ़रमाना।
१५. आप (सल्ल०) कभी उकड़ू बैठते, और कभी बैठ कर अपने दोनों हाथ दोनों ज़ानू के आस पास लपेट लेते और कभी बजाय हाथों के कपड़ा भी लपेट लेते।
१६. बैठे हुए टेक लगाते तो अक्सर उल्टी जानिब और उल्टे हाथ की तरफ़ लगाते।

ईदुल् फित्र के शरअ़ी आदाब

१. ईद की नमाज़ से पहले कोई नफ़्ल न पढ़ना।
२. सुबह़ को बहुत सवेरे उठना।
३. शरअ़ा के मुआफिक़ अपनी आराइश करना।
४. गुस्ल करना।
५. मिस्वाक़ करना।
६. अच्छा से अच्छा कपड़ा जो पास में मौजूद हो पहनना।
७. खुश्बू लगाना।
८. ईदगाह जाने से पहले कोई शीरीं चीज़ खाना।
६. ईदगाह में बहुत सवेरे जाना।
१०. ईदगाह जाने से पहले सद्क़-ए-फ़ित्र देना।
११. ईद की नमाज़ ईदगाह में जाकर पढ़ना यानी शहर की मस्जिद में बिना ज़रुरत

न पढ़ना।

१२. एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से वापस आना।

१३. पैदल जाना।

१४. रास्ते में -

"अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर, लाइलाहइल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल ह्म्द"

आहिस्ता आवाज़ से पढ़ते हुए जाना चाहिए।

ईदुल अज़्हा के शरअ़ी आदाब

१. कुर्बानी कराना।

२. तकबीर बुलन्द आवाज़ से कहना।

३. नमाज़ से पहले कोई चीज़ न खाना।

४. नमाज़ से पहले नवाफ़िल नमाज़ पढ़ना मना है।

ईद के मसाइल

१. ईद की नमाज़ से पहले या बाद ईद गाह मे नफिल पढ़ना मना है।

२. बिना ज़रुरत शरअ़ी ईद की नमाज़ शहर की मस्जिद में पढ़ना सुन्नत के खिलाफ है।

३. नमाज़ के बाद दोनों खुत्बों को सुनना चाहिये अगर आवाज़ न आए तब भी चुपचाप बैठे रहना ज़रुरी है बहुत से लोग सलाम फेरते ही घर वापस जाने लगते हैं और गले मिलने लगते हैं ये तरीक़ा सुन्नत के खिलाफ, बिद्अ़त है और खुत्बा न सुनने की महरुमी का गुनाह अलग है।

४. ईद गाह में नमाज़े जनाज़ा पढ़ना जाइज़ है।

५. दाढ़ी मुंडाने या कतराने की वजह से अगर एक मुश्त से कम रह जाये तो ऐसे शख्स को इमाम बनाना जाइज़ नहीं, ईद की नमाज़ और उस के अ़लावा तमाम दूसरी नमाज़ों का यही हुक्म है इमामत मे विरासत नहीं चलती अगर कोई बात

सज्द-ए-सह्व वाली ईद की नमाज़ में हो जाए तो सज्द-ए-सह्व माफ़ है।

ईद की नमाज़ का तरीक़ा

१. नियत करे कि मैं दो रकअ़त नमाज़ वाजिब ईदुल फित्र ज़ायद छः तकबीरात के पढ़ता हूँ, फिर तकबीर कह कर हाथ बांध लें और 'सुब्हानकल्लाहुम्मा' पढ़ कर दो बार फिर अल्लाह अकबर (तकबीर) कहे और हाथ कानों तक ले जाये और छोड़ दें, फिर तीसरी बार तकबीर 'अल्लाहुअकबर' कह कर हाथ बांध ले और खामोश होकर क़िरत सुने, फिर दूसरी रकअ़त में क़िरत के बाद तीन मर्तबा 'अल्लाहुअकबर' कहकर हाथ कानों तक तीनो मर्तबा ले जाए और छोड़ दे फिर चौथी तकबीर कहकर रुकू करे।

सफर के शरअ़ी आदाब

१. जहाँ तक हो सके कम से कम दो आदमी सफर में जाएँ तन्हा आदमी सफर न करे।

२. सवारी के लिए रिकाब में पैर रखें तो "बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम" कहें।

३. सवारी पर अच्छी तरह बैठ जायें तो तीन मरतबा "अल्लाहु अकबर" कहें फिर यह दुआ़ पढ़ें-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ سُبْحَانَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ
وَاِنَّآ اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

"अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी सख़्ख़रा लना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून।"

फिर यह दुआ़ पढ़ें:-

اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَیْنَا هٰذَا السَّفَرَ وَاطْوِعَنَّا بُعْدَهٗ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَالْخَلِیفَةُ فِی الْاَهْلِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَآءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْٓءِ الْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ

“अल्लाहुम्म हव्विन अ़लैना हाज़स्सफ़र वातौ अन्ना बुअ़दहू, अल्लाहुम्म अन्तस्साहिबु फ़िस्सफ़रि वल्ख़लीफ़तु फ़िल्अह्लि, अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिंव्वसाइस्सफ़रि व काबतिल मन्ज़रि व सूइल् मुन्क़लबि फ़िल्मालि वल् अह्लि वल्वलदि।”

४. मुसाफरत में ठहरने की ज़रुरत पेश आ जाये तो सुन्नत ये है कि रास्ते से हट कर क़याम करे रास्ते में पड़ाव न डाले कि आने जाने वालों का रास्ता रुके और उनको तकलीफ़ हो।

५. सफ़र के दौरान जब सवारी बुलंदी पर चढ़े तो तीन बार “अल्लाहु अकबर” कहें।

६. जब सवारी नशेब (ढलाव) या नीचे उतरने लगे तो तीन बार ‘सुब्ह़ानल्लाह’ कहे।

७. जिस शहर या गाँव में जाने का इरादा हो उसे जब दूर से देख ले तो तीन बार यह दुआ़ पढ़े “अल्लाहुम्मा बारिकलना फ़ीहि”।

८. जब उस शहर में दाख़िल होने लगें तो यह दुआ़ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا جَنَاهَا وَحَبِّبْنَآ اِلٰى اَهْلِهَا وَحَبِّبْ صَالِحِىْٓ اَهْلَهَآ اِلَيْنَا

“अल्लाहुम्मर्ज़ुक़ना जनाहा वह़ब्बिबना इला अहलिहा व ह़ब्बिब सालिह़ी अहलिहा इलैना।”

९. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है कि जब सफ़र की ज़रुरत पूरी हो जाये तो अपने घर लौट आयें बाहर सफ़र में बिलाज़रुरत अच्छा नहीं है।

१०. दूरदराज़ के सफ़र से बहुत दिनों बाद लौटे तो सुन्नत यह है कि अचानक घर में दाख़िल न हो बल्कि अपने आने की ख़बर करे और कुछ देर बाद घर आये तो उसी वक्त घर में न जाये बल्कि बेहतर यह है कि सुबह़ मकान में जाये अल्बत्ता घर वाले इन्तिज़ार में हों तो उसी वक्त घर में दाख़िल होने में कोई हरज नहीं इन मस्नून तरीक़ों पर अ़मल करने से दीन व दुनिया की भलाई ह़ासिल होगी।

११. सफ़र में कुत्ता और घुंघरु (भालु) साथ रखने की मनाही आई है क्यों कि इनकी वजह से शैतान पीछे लग जाता है और सफ़र की बरकत जाती रहती है।

१२. सफ़र से लौट कर आने वाले के लिए यह मस्नून है कि घर में दाख़िल होने से पहले मस्जिद में जाकर दो रकअ़त नमाज़ पढ़े।

१३. जब सफर से वापस आये तो यह दुआ़ पढ़े-

آئِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ

“आइबूना ताइबूना आ़बिदूना लिरब्बिना ह़ामिदून।”

सलाम और मजलिस के शरअ़ी आदाब

१. सलाम करना मुसलमानों के लिए बहुत बड़ी सुन्नत है हुज़ूर (सल्ल०) ने इस की बहुत ताक़ीद फ़रमायी है हर मुसलमान को सलाम करना चाहिए चाहे उसे पहचानता हो या न पहचानता हो क्योंकि सलाम इस्लामी ह़क़ है।

२. बुख़ारी और मुस्लिम की एक ह़दीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) का गुज़र बच्चों के पास से हुआ तो उनको सलाम किया इसलिए बच्चों को भी सलाम करना सुन्नत है।

३. सलाम करने का सुन्नत तरीक़ा यह है कि ज़बान से ‘अस्सलामुअ़लैकुम’ कहे हाथ से या सर से या उंगली के इशारे से सलाम करना या उसका जवाब देना सुन्नत के खिलाफ़ है।

४. किसी मुसलमान भाई से मुलाकात हो तो सलाम के बाद मुसाफ़ह करना मस्नून है औ़रत से औ़रत मुसाफ़ह कर सकती है।

५. किसी मजलिस में जाएँ तो जहाँ मौक़ा मिले और जगह मिले बैठ जाए दूसरों को उठा कर खुद बैठना गुनाह की बात और मकरुह़ है।

६. अगर कोई शख्स मजलिस में आये और कोई न हो तो पहले से बैठने वालों को चाहिये कि ज़रा मिल कर बैठ जायें और आने वाले मोमिन भाई के लिए गुंजाइश निकाल लें।

७. कहीं अगर सिर्फ तीन आदमी हों तो एक को छोड़ कर काना फूसी (सरगोशी)की इजाज़त नहीं कि ख़्वाह मख़्वाह उसका दिल (शुब्हात की वजह से) रंजीदा होगा और मुसलमान भाई को रंजीदा करना बहुत बड़ा गुनाह है।

कुछ अहम बातें

१. आम तौर से लोग सलाम करने में यह ग़लती करते हैं कि हम्ज़ा और मीम की हरकत साफ़ नहीं पढ़ते उसको ज़ाहिर करके इस तरह कहें-

अस्सलामु अलैकुम वरह़मतुल्लाहि वबरकातुहू।

२. हर अच्छे काम को दायीं ओर से करना चाहिए और हर घटिया काम को बाईं ओर से करना चाहिए जैसे मस्जिद में जायें तो दाहिना पैर पहले रखें और निकलें तो बांया पैर पहले निकालें और लिबास पहने तो दाहिनी ओर से शुरु करें उतारना हो तो बांये ओर से उतारें लिहाज़ा हर काम में यह सुन्नत याद रखें, यह सिर्फ मस्जिद जाने की सुन्नत नहीं है।

३. ज़िक्रुल्लाह की कसरत रखना जिन नमाज़ों के बाद सुन्नतें नहीं हैं उनमें से फ़ौरन बाद वरना सुन्नतों के बाद तस्बीह़ फ़ातिहा ३३ बार सुब्हान अल्लाह, ३३ बार अल्ह़म्दुलिल्लाह, ३४ बार अल्लाहु अकबर पढ़ें। दिन भर में कम से कम एक तस्बीह़ कलिमा तय्यिबः एक तस्बीह़ दुरुद शरीफ़ और एक तस्बीह़ अस्तग़फार की इस नियत से पढ़ें कि अल्लाह तआ़ला की मुह़ब्बत बढ़े और ग़ैरुल्लाह की मुह़ब्बत घटे मुतफ़र्रिक़ औक़ात में 'सुब्ह़ानल्लाह', 'अलह़म्दुलिल्लाह', 'अल्लाहु अकबर' चाहे मिलाकर पढ़े या अलग-अलग पढ़े बहरह़ाल ज़िक्र करते रहें, बेहतर यह है कि जब बुलंदी पर चढ़ें तो 'अल्लाहु अकबर' और नीचे उतरें तो 'सुब्ह़ानल्लाह' और बराबर जगह पर चलें तो 'लाइलाहाइल्लल्लाहु' पढ़ें।

४. किसी के मकान पर जाना हो तो उससे इजाज़त (आज्ञा) लेकर दाख़िल होना चाहिए।

५. जब जमाई आये तो सुन्नत यह है कि मुंह बंद कर ले और मुंह पर हाथ रख ले और हा हा की आवाज़ न निकाले यह हदीस में मना है।

६. अगर किसी का अच्छा नाम सुने तो उसे अपने मकसद के लिए नेक फ़ाल समझना सुन्नत है, और उससे खुश होना भी सुन्नत है, बद्फ़ाली लेने को सख्त मना फ़रमाया गया है जैसे रास्ते में चलते-चलते किसी को छींक आई तो ये समझना कि काम न होगा या कव्वा बोले, या बन्दर नज़र आये, या उल्लू बोले, तो इन से आफ़त आने का गुमान करना सख्त नादानी और बिल्क़ुल बेअस्ल और ग़लत और गुमराही का अक़ीदा (विशवास) है इसी तरह किसी को मन्हूस समझना या किसी दिन को मन्हूस समझना बहुत बुरा है सुन्नत पर अमल करने से बन्दा अल्लाह तआ़ला का मह़बूब हो जाता है इस लिए एहतिमाम से इस पर अ़मल करना चाहिए।

निकाह़ के शरअ़ी आदाब

१. सुन्नत निकाह़ वह है जो सादा और कम खर्च में हो।
२. जुमअ़ के दिन मस्जिद में निकाह़ करना बेहतर है।
३. निकाह़ को मशहूर करना और निकाह़ के बाद छुहारे या खजूर लुटाना सुन्नत है।
४. ह़स्ब इस्तिताअ़त (क्षमता के अनुसार) कपड़ा और ज़ेवर इस्तिमाल करना।
५. हस्ब इस्तिताअ़त (क्षमता के अनुसार) महर मुक़र्रर करना।
६. महर का अदा करना और अदा करने का रिवाज डालना।
७. शोहरत और घमण्ड से बचना।
८. शादी की पहली रात जब बीवी से तन्हाई में मिले तो बीवी के पेशानी के ऊपर के बाल पकड़कर यह दुआ़ पढ़ेः-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِهَا وَخَيْرِ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ
وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ

"अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिन ख़ैरिहा व ख़ैरि मा जबल्तहा अ़लैहि व अऊ़ज़ू बिका मिन शर्रिहा व शर्रि मा जबलतहा अ़लैहि।"

९. ख़ुत्बा निकाह़ पढ़ना।
१०. दुआ़-ए-ख़ैर करना।

११. निकाह़ के बाद छुहारे या खुजूर तक़्सीम करना।

१२. कर्ज़ से बच कर दावत वलीमा करना।

१३. दुल्हा दुल्हन को मुबारकबाद देना।

१४. जब बीवी से सोहबत का इरादा करे तो यह दुआ़ पढ़े-

بِسۡمِ اللّٰهِ۔ اَللّٰهُمَّ جَنِّبۡنَا الشَّيۡطٰنَ وَجَنِّبِ الشَّيۡطٰنَ مَا رَزَقۡتَنَا

"बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म जन्निबनश्शैताना व जन्निबिश्शैताना मा रज़क्तना"

१५. मर्दो के लिए साढ़े चार माशा वज़न से कम की चांदी की अंगूठी पहनने की इजाज़त है और औ़रतों को मेंहदी इस्तेमाल करना सुन्नत है।

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की कुछ प्यारी प्यारी बातें

१. जब आप चलते तो लोगों को आगे से हटाया नहीं जाता था।

२. आप जाइज़ काम को मना नही करते अगर कोई सवाल करता और उसके सवाल को पूरा करने का इरादा होता तो, हां कह देते, वरना चुप हो जाते।

३. आप अपना चेहरा किसी से न फेरते जब तक वह न फेरता और अगर कोई चुपके से बात कहना चाहता तो आप कान उसकी तरफ कर देते और जब तक वह फारिग़ नहीं होता आप कान न हटाते।

४. जब आपको छींक आती तो हाथ या कपड़ा मुंह पर रख लेते और आवाज़ को धीमी करते।

५. जब कोई मिलता तो पहले आप सलाम करते।

६. जब किसी चीज़ को करवट की तरफ़ देखते तो पूरा चेहरा फेर कर देखते घमंडियों की तरह न देखते।

७. निगाह नीची रखते और शर्म की वजह से निगाह भर कर न देखते थे।

८. बर्ताव में सख़्ती न फ़रमाते नर्मी को पसंद करते थे।

९. सब में मिले जुले रहते थे यानी शान बना कर न रहते थे बल्कि कभी-कभी मज़ाक भी कर लेते थे।

१०. अगर कोई ग़रीब आता या बुढ़िया आप से बात करना चाहती तो सड़क के

एक किनारे पर सुनने के लिए खड़े हो जाते या बैठ जाते।

११. नमाज़ में क़ुर्आन मजीद की तिलावत करते तो सीना मुबारक से हांडी खौलने की सी सदा आती थी ख़ौफे खुदा की वजह से यह ह़ालत होती थी।

१२. घर वालों का बहुत ख्याल रखते कि किसी को आप (सल्ल०) से तकलीफ़ न पहुंचे।

१३. जब चलते तो निगाह नीची ज़मीन की तरफ रखते लोगों के साथ चलते तो सबसे पीछे होते और कोई सामने से आता तो सबसे पहले सलाम आप ही करते।

१४. आप फ़रमाते जब बच्चा सात बरस का हो जाये तो नमाज़ और दीन की बातों का हुक्म करो।

१५. आप फ़रमाते जब दस बरस का बच्चा हो जाए तो मार कर नमाज़ पढ़वाना।

१६. किसी क़ौम का इज़्ज़तदार आदमी हो तो उसके साथ इज़्ज़त से पेश आओ।

१७. आप फ़रमाते अपने अवक़ात में से कुछ वक्त अल्लाह की इबादत के लिए कुछ घर वालों के हुक़ूक अदा करने के लिए जैसे उनसे हंसना बोलना और एक ह़िस्सा अपने बदन के आराम के लिए निकालो।

१८. आप फ़रमाते पड़ोसी के साथ एहसान करो बड़ो की इज़्ज़त करो छोटों पर रह़म करो।

१९. आप फ़रमाते कोई रिश्तेदार बद्सलूकी करे उसके साथ सुलूक से पेश आओ।

२०. आप फ़रमाते जब बच्चा पैदा हो तो उसके दायें कान में आज़ान और बायें कान में तकबीर कहो, जब सात रोज़ का हो जाये तो उसका अच्छा सा नाम रखो, किसी बुज़ुर्ग से छुहारा चबवाकर बच्चा के मुंह में डालना या चटाना भी मुस्तहब है।

२१. आप फ़रमाते पड़ोसी को अपनी तकलीफों से बचाओ उससे अच्छी बात कहो वरना ख़ामोश रहो।

२२. आप फ़रमाते सिला रहिमी करो।

२३. आप (सल्ल०) ज़ेरे नाफ, बगल और नाक के बाल साफ़ करने की ताकीद फ़रमाते, चालिस रोज़ गुज़र जाये और सफाई न करे तो गुनाहगार होगा।

२४. आप (सल्ल०) दाढ़ी रखते और मूंछों को कतरवाते।

२५. आप (सल्ल०) फ़रमाते जो लोग दुनिया के एतिबार से कमज़ोर हैं उनकी तरफ ख़याल रखो।

२६. आप (सल्ल०) बायें जानिब तकिया लगाते।

२७. आप (सल्ल०) अज़वाजे मुतह्हरात के साथ खुश करने के लिए उनसे दिल्लगी और हंसी की बात करते।

२८. नमाज़ के बाद फ़ज्र से इशराक़ तक आप मस्जिद में आलती पालती बैठते थे।

२६. आप फ़रमाते अपने भाई मुसलमान से ख़ुशी से मिलो और अपनी जगह से किसी कदर हट जाना उसके बिठाने के लिए चाहे ज़रा सा ही खिसक जाये।

३०. सवारी पर उसके मालिक को आगे बैठने के लिए कहना और बग़ैर उसके इजाज़त के आगे न बैठना सुन्नत है।

३१. आप (सल्ल०) फ़रमाते काम लेने से पहले मज़दूर को उसकी मजदूरी बता दो।

३२. आप (सल्ल०) फ़रमाते जो चीज़ तुम्हें खरीदनी नही है उसका भाव मत बड़ाओ।

३३. आप (सल्ल०) फ़रमाते जो रिज़्क हलाल के लिए मज़दूरी करता है और रात थक कर गुज़ारता है अल्लाह उससे खुश होता है।

३४. आप (सल्ल०) फ़रमाते किसी मजलिस मे जाए तो पहले सलाम करें और जब उठे तो भी सलाम करो।

३५. आप (सल्ल०) फ़रमाते किसी को पानी और नमक से रोकना जाइज़ नहीं।

३६. आप (सल्ल०) फ़रमाते खुदा तुम्हारे सूरतों और मालों को नहीं देखता बल्कि तुम्हारी दिलों को और अामाल को देखता है।

३७. आप (सल्ल०) फ़रमाते आख़िरी ज़माने में ऐसे लोग पैदा होंगे जो दीन के ज़रिया से अपनी दुनिया कमाते फिरेगें उन की जुबाने शकर से ज़्यादा मीठी, और उनके दिल भेड़ियों की तरह होंगे।

३८. किसी ने फरमाया निजात का रास्ता बताएँ फ़रमाया अपनी ज़ुबान को रोक कर घर में बैठें और अपने गुनाहों पर रोया करें।

३६. आप (सल्ल०) फ़रमाते ख़ुदा की क़सम तुममें से कोई भी मोमिन नहीं जब

तक मैं उसे जान व माल और औलाद सबसे ज़्यादा महबूब न हो जांऊ।

४०. आप (सल्ल०) फ़रमाते अल्लाह अगर एक इंसान को तुम्हारे ज़रिये नेकी की हिदायत दे दे तो वह तुम्हारे लिए सुर्ख ऊंट से बेहतर है।

४१. आप (सल्ल०) फ़रमाते तुममें बहुत अच्छे वह लोग है कि जब उन्हें देखा जाए तो खुदा याद आ जाए।

४२. आप (सल्ल०) फ़रमाते ख़ुदा की राह में मारा जाना हर गुनाह को मिटा देता है मगर कर्ज़ को नहीं मिटाता।

४३. आप (सल्ल०) फ़रमाते सब से मुहब्बत रखें आधी अक़्ल उसी में है।

४४. आप (सल्ल०) फ़रमाते ग़रीबों के साथ दोस्ती रखें अमीरों की मजलिस से एहतियात करे।

४५. आप (सल्ल०) फ़रमाते क़ज़ा को दुआ ही मिटा सकती है।

४६. आप (सल्ल०) फ़रमाते सच्चा और अमीन ताजिर क़ियामत के दिन सादिक़ों और शहीदों के साथ होगा।

४७. आप (सल्ल०) फ़रमाते जिसने हमारे दीन में कोई ऐसी बात निकाली जो दीन में नहीं है वह रद्द है।

४८. आप (सल्ल०) फ़रमाते मोमिन के लिए मौत उसके रब की तरफ़ से एक तोहफ़ा है।

४६. आप (सल्ल०) फ़रमाते मौत एक ऐसा रास्ता है जो दोस्त को दोस्त से मिला देता है।

५०. आप (सल्ल०) फ़रमाते जो शख़्स किसी ऐबदार चीज़ को उसका ऐब ज़ाहिर किये बग़ैर बेच दे अल्लाह कभी उस से खुश नहीं होगा।

५१. आप (सल्ल०) फ़रमाते जो अपने भाई की पर्दा पोशी करेगा दुनिया व आख़िरत में उस की पर्दा पोशी की जायेगी।

५२. आप (सल्ल०) फ़रमाते इत्मिनान से काम करना अल्लाह की तरफ से है और जल्दी का काम शैतान की तरफ से है।

५३. आप (सल्ल०) फ़रमाते नमाज़ पढ़ाने वाले को चाहिये की नमाज़ मुख्तसर पढ़ाये क्यों कि मुक्तदियों में बूढ़े कारोबारी और बीमार सभी क़िस्म के लोग होते हैं।

५४. आप (सल्ल०) फ़रमाते ताजिर क़समें न खाएँ।
५५. आप (सल्ल०) फ़रमाते साफ सुथरा रहें।
५६. आप (सल्ल०) फ़रमाते जिस्म की पाकीज़गी आधा ईमान है।
५७. आप (सल्ल०) फ़रमाते अपने उस्तादों की तौक़ीर करें।
५८. आप (सल्ल०) फ़रमाते बुरा साथी गोया आग का एक टुकड़ा है।
५९. मुस्कुराना खुदा की तरफ़ से पसंदीदा चीज़ है।
६०. आप (सल्ल०) फ़रमाते बढ़-चढ़ कर बातें बनाने वाला दोज़ख़ में जायेगा।
६१. आप (सल्ल०) फ़रमाते सवार पैदल को सलाम करे पैदल बैठे हुए को और थोड़े आदमी ज़्यादा आदमियों को सलाम करें।
६२. आप (सल्ल०) फ़रमाते अल्लाह की इबादत करो उसके साथ किसी को भी शरीक न ठहराओ फर्ज़ नमाज़े अच्छी तरह पढ़ो ज़कात दो और रमज़ान के रोज़े रखो, ये सब तुमको जन्नत मे दाख़िल करेगी।
६३. आप (सल्ल०) फ़रमाते तुममें से किसी ने कही शादी का पैग़ाम दिया तो दूसरा वहाँ पैग़ाम न ले जाये जब तक पहला ख़त्म न कर दे।
६४. आप (सल्ल०) फ़रमाते गुलाम के मामले में इंसाफ करो जो खुद खाए उनको खिलाए जो खुद पहने उनको भी पहनाए।
६५. आप (सल्ल०) फ़रमाते आदमी निकाह़ करके अपना आधा ईमान महफ़ूज़ कर लेता है।
६६. आप (सल्ल०) फ़रमाते शादी खुदा से क़रीब करने का ज़रिया है।
६७. आप (सल्ल०) फ़रमाते मालदारों पर सद्क़ा फर्ज़ किया गया है उन्हें फक़ीरों में तक़सीम कर दो, देखो ऐसा न करना कि उनके अच्छे-अच्छे माल छांट कर ले लो मज़लूम की बद्दुआ से बचो।
६८. जो शख्स दिल से कलिमा शहादत यानी-

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

"अश्हदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह।"

पढ़ेगा अल्लाह तआ़ला उस पर आग (जहन्नम) ह़राम कर देगा।

६९. आप (सल्ल०) फ़रमाते हर एक को सलाम करो खाना खिलाओ चाहे पहचानते हो या न पहचानते हो।
७०. आप (सल्ल०) फ़रमाते अपने काफिर भाईयों के लिए ईमान की दुआ़ करना चाहिए।
७१. आप (सल्ल०) फ़रमाते इन तीन समय मे बिना ज़रुरत किसी के यहां न जाओ-ईशा की नमाज़ के बाद, सुबह़ की नमाज़ से पहले और दोपहर में आराम के समय।
७२. आप (सल्ल०) जब तक अपने घर में रहते घर के कामों में लगे रहते जैसे- (१) दूध खुद दुह लेते (२) जानवरों को चारा डाल देते (३) कपड़ों में पेवन्द लगा लेते (४) अपना जूता खुद सी लेते (५) ख़ादिम के साथ आटा पिसवा लेते।
७३. बाज़ार आप (सल्ल०) खुद जाते और कपड़े में बांध कर समान ले आते।
७४. बारिश का पहला पानी बरसता तो आप (सल्ल०) सिवाय तह़बन्द के सब लिबास उतार देते और ऊपर के बदन को बारिश के पानी से तर करते।
७५. आप (सल्ल०) बाग़ात की तफ़रीह को पसन्द फ़रमाते और कभी-कभी बाग़ात में तफ़रीह के लिए तशरीफ़ ले जाते।
७६. आप (सल्ल०) एक बार चन्द सह़ाबा के साथ तैर रहे थे तो आपने हर एक की जोड़ी बना दी, कि हर एक अपने साथी की तरफ़ तैर कर जाए, इस तरह आप (सल्ल०) के साथी हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) गये और आप (सल्ल०) तैरते हुए उनके पास गये और उनकी गर्दन पकड़ ली।

यह है करीमाना अख़लाक़ व आदाब उस शख़्स के जो रहती दुनिया के तमाम इन्सानों के लिए रहबर बन कर आया था जिसने ज़िन्दगी का कोई हिस्सा नहीं छोड़ा कि जिसमें मुकम्मल रहनुमाई मौजूद न हो, इस किताब में सिर्फ़ आप (सल्ल०) की एक हल्की सी झलक दिखाई गई है ताकि उसके ज़रिए आप (सल्ल०) की सीरत पढ़ने का शौक़ पैदा हो और आप (सल्ल०) की सुन्नतों से इश्क़ पैदा हो। सलातो सलाम हो आप (सल्ल०) पर जिन्होंने हमें मुकम्मल ह़क़ की तरफ़ रहनुमाई फ़रमाई, अल्लाह पाक इस पर अमल की भी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ

ऐ लोगों जो ईमान लाए हो, इताअ़त करो अल्लाह की और इताअ़त करो रसूल की और उन लोगों की जो तुमसे से साहि़बे अम्र हों।

भाग–चार

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की सुन्नत के ख़िलाफ़ आमाल का ज़िक्र

सुन्नत के ख़िलाफ़ अ़ामाल का ज़िक्र

मस्जिद में सुन्नत के ख़िलाफ़ दाख़िल होना

१. “बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम” न पढ़ना।
२. बायाँ क़दम पहले अंदर रखना।
३. दाख़िले की दुअ़ा न पढ़ना।
४. अस्सलामु अ़लैकुम न कहना।
५. खुदा का इस्तेह़ज़ार न होना।
६. मस्जिद में दुनिया की बातें करना।

वुज़ू में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. “बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम” न पढ़ना।
२. पानी में इस्राफ़ करना।
३. नाक दाहिने हाथ से साफ़ करना।
४. किसी अज़ू को बिला ज़रुरत ३ बार से ज़्यादा धोना।
५. किसी अज़ू को इस तरह़ धोना कि पहला अज़ू खुश्क हो जाए।
६. दुनिया की बातें करना।

क़ियाम में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. पंजों का बहुत तिरछा या टेढ़ा होना।
२. दोनों पैर बहुत फैलाकर खड़ा होना।
३. एक पैर पर ज़ोर देकर खड़े होना।

४. हाथों को नाफ़ के ऊपर रखना।
५. निगाह सज्दे की जगह पर न होना।
६. सफ़ का टेढ़ी होना।

रुकूअ़ में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. कमर से सर का ऊँचा होना या उस के ख़िलाफ़ होना।
२. हाथों या पैरों में ख़म होना।
३. निगाह सज्दे की जगह पर होना।
४. तस्बीह़ को जुफ़्त अदद ४, ८, २ बार पढ़नां

क़ौमा में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. सीधा खड़ा होने से पहले सज्दे में चले जाना, यह अ़मल ख़िलाफ़े सुन्नत ही नहीं है बल्कि तर्के वाजिब है, इस पर सज्दः सह्व लाज़िम होता है और सज्दः सह्व भूल जाने की सूरत में नमाज़ को दोहराना वाजिब है।

सज्दः में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. सज्दः में पहले हाथों को ज़मीन पर रखना।
२. सज्दः की ह़ालत में नाक का ज़मीन से उठ जाना।
३. पैरों का ज़मीन से उठ जाना।
४. पैरों का ज़मीन पर बिछाए रखना।

जल्से में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. दोनों पैरों को खड़ा रखकर बैठना।
२. या दोनों पैरों को बाहर निकाल कर बैठना।
३. निगाह ज़ानू के बजाए सज्दः की जगह पर रखना।
४. जिस्म का दुरुस्त होने से पहले दूसरे सज्दे में चले जाना।

क़ाइदा अख़ीरा में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. दोनों पैरों को खड़ा रखना।
२. दोनों पैरों को बिछाए रखना।
३. निगाह को सज्दे की जगह पर रखना।
४. हाथ की उंगलियों को फैलाए रखना।
५. उंगली को न उठाना।
६. हाथों को रानों पर रखकर उंगलियों का झुका न होना, दुरुद शरीफ़ और दुआ़ के बग़ैर सलाम फेरना।

दुआ़ में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. हाथों को मिलाना या मुँह के सामने होना।
२. हाथों को मिलाए रखना।
३. दुआ़ में उंगलियों को चटख़ाना।
४. दिल का ग़ैर हाज़िर होना, क़ुबूलियत में शक होना।
५. ख़ुदा की मेहरबानी और अपनी नाफ़रमानी का ध्यान न होना।
६. दुआ़ में इस्तेहज़ार न होना।
७. दुआ़ में आजिज़ी व इन्किसारी का न होना।

नमाज़े जुमअ़ में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. ख़ुत्बः के साथ उर्दू या फ़ारसी के अशआ़र मिलाकर पढ़ना ख़िलाफ़े सुन्नत है।
२. ख़ुत्बः होते हुए कोई नमाज़ पढ़ना या आपस में बातचीत करना ख़िलाफ़े सुन्नत है।
३. ख़ुत्बः होते हुए खाना पीना खाना या चलना फिरना यहां तक कि तस्बीह़ पढ़ना तिलावत करना ख़िलाफ़े सुन्नत है।
४. ख़ुत्बः होते हुए कोई ऐसा काम करना जो सुनने में हारिज हो ख़िलाफ़े सुन्नत है।

५. ख़ुत्बः होते हुए सलाम करना या सलाम का जवाब देना यहाँ तक कि किसी को शरई मसला बताना भी ख़िलाफ़े सुन्नत है।
६. दोनों ख़ुत्बों के दर्मियान बैठने की ह़ालत में बैठने के दर्मियान हाथ उठा कर दुआ़ मांगना भी मकरुह़ तह़रीमी है।
७. रमज़ान के आख़िर जुमअ़ में ख़ुत्बः में विदाअ़ व फ़िराक़ के मज़ामीन पढ़ना अगरचे जायज़ है लेकिन नबी करीम (सल्ल०) और उन के अस्ह़ाब से मन्क़ूल नहीं और न कुतुब फ़िक़ः में कहीं इस का पता चलता है लेकिन इस ज़माने में बड़ा इल्तिज़ाम हो रहा है अगर कोई न पढ़े तो वह मूरद होता है और उस को सुन्नत समझते हैं इसलिए इस को ज़रुरी समझना ख़िलाफ़े सुन्नत है।

ईदुल्फ़ित्र में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. बिलाउ़ज़्र शरई के ईद की नमाज़ किसी मस्जिद में पढ़ना।
२. नमाज़े ईद के लिए सवारी पर जाना भी ख़िलाफ़े सुन्नत है।
३. नमाज़े ईदुल फ़ित्र से पहले न खाना ख़िलाफ़े सुन्नत है।
४. नमाज़े ईदुल अज़्हा के पहले खा लेना भी ख़िलाफ़े सुन्नत है।
५. तकबीर ईदुल फ़ित्र में बाआवाज़ बुलन्द पढ़ना ख़िलाफ़े सुन्नत है।
६. ईदुलअज़्हा तकबीर आहिस्ता पढ़ना ख़िलाफ़े सुन्नत है।

घर में दाख़िल होने में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. बायाँ क़दम अंदर रखना।
२. 'बिस्मिल्लाह' न पढ़ना।
३. सलाम न करना।
४. बड़ों का एह़तिराम न करना।

खाना खाने में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. हाथ धोने के बजाए सिर्फ़ चुट्की धोना

२. 'बिस्मिल्लाह' पढ़े बग़ैर शुरु कर देना।
३. खाने से पहले की दुआ का भी न पढ़ना।
४. नंगे सर होकर खाना।
५. बिला उ़ज़्र पालती मार कर खाना यानी चौ ज़ानू बैठना।
६. खाते वक़्त मुँह से चप-चप की आवाज़ आना।
७. उंगलियों को न चाटना।
८. बर्तन को साफ़ न करना।

पानी पीने में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. 'बग़ैर' बिस्मिल्लाह पढ़े पीना।
२. खड़े होकर पीना।
३. एक ही सांस में पीना।
४. पीने में गट-गट की आवाज़ आना।
५. सांस लेने में बर्तन को न हटाना।
६. 'अल्हम्दुलिल्लाह' न कहना दुआ भी न पढ़ना।

कपड़ा पहनने में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. 'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम' न पढ़ना।
२. बाईं तरफ़ से पहनना।
३. पायजामा खड़े होकर पहनना।
४. अन्डर वियर यानी केवल जाघियां का पहनना, इसलिए कि सतर का खोलना ह़राम है।
५. पैंट, शर्ट, पहनकर नमाज़ पढ़ना जिस में सतर खुले हों ह़राम है।
६. दुआ का न पढ़ना।
७. पेवन्द लगे हुए कपड़े पहनने को ह़क़ीर समझना।

लिबास में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. केवल जांघिया अन्डर वियर चड्ढी वग़ैरह ख़िलाफ़े सुन्नत ही नहीं, बल्कि ह़राम है क्योंकि इस से सतर खुला रहता है जिस का छुपाना फ़र्ज़ है वरना यह फ़रिश्तों की लानत का सबब है।
२. पेट और पीठ के हर क़िस्म का वह कपड़ा जिस से सुरीन(पुट्ठा) नुमाँया नज़र आता हो ।
३. शर्ट और शर्ट के हर क़िस्म का वह कपड़ा जिस से सुरीन(पुट्ठा) खुले रहें।
४. बड़ी मोहरी का रिवाजी पायजामा जिस में पाँचे परेशान करते हैं।
५. औ़रतों के लिए लहंगा, तहबन्द और हर वह महीन कपड़ा जिस में बदन नज़र आए।

ह़जामत में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. पूरे सर के बाल बड़े-बड़े रखना।
२. पूरे सर के बाल औ़रतों की तरह़ रखना।
३. बग़ल के बालों में लापरवाही बरतना।
५. ज़ेरे नाफ़ दो-दो महीने लापरवाही करना।
६. हाथ पैर के नाख़ूनों में भी लापरवाही बरतना।
७. टेढ़ी मांग निकालना।

पाख़ाना करने में ख़िलाफ़ें सुन्नत

१. जाते वक़्त दाहिना क़दम अन्दर रखना।
२. दुआ का न पढ़ना।
३. गिरती हुई नजासत को देखना।
४. क़िब्ला की तरफ़ मुँह करके बैठना।
५. चलती हुई हवा की तरफ़ मुँह करना।

६. दाहिने पैर पर ज़ोर देकर बैठना।
७. बेपरदग़ी में बैठ कर पाख़ाना करना।
८. केवल ढेलों से साफ़ करना।
६. वापसी में बायां क़दम बाहर निकालना।
१०. बाद की दुआ़ का न पढ़ना।

बाज़ार में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. दूसरों का सौदा लेने से इन्कार कर देना।
२. ख़रीद व फ़रोख़्त में झूठ बोलना।
३. नाप व तौल में कमी करना।
४. ग्राहक को धोखा देना।
५. झूठी क़सम खाना खोटा सिक्का चलाना।

क़ब्रस्तान जाने में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. नजासत की ह़ालत में क़ब्रस्तान जाना।
२. क़ब्रस्तान में पाख़ाना या पेशाब करना।
३. क़ब्रस्तान में दुनिया की बातें करना।
४. मरने वालों को सवाब से मह़रूम रखना।
५. अपने मरने का ध्यान न करना।
६. मरने के बाद ज़िन्दग़ी का यक़ीन न होना।
७. ग़फ़लत और नाफ़रमानी में ज़िन्दग़ी गुज़ारना।
८. ख़ुदा की अ़दालत का यक़ीन न होना।
६. क़ब्रस्तान पहुँच कर सलाम न करना।
१०. क़ब्र को पुख़्ता बनवाना।

कफ़न और कफ़नाने में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. मर्द को कफ़न के साथ पायजामा और पगड़ी यानी साफ़ा टोपी वग़ैरह।

२. औ़रत के कफ़न में सुर्ख़ चादर, चूड़ी या सेंदुर वग़ैरह का इस्तेमाल।
३. क़ब्र में केवड़ा या गुलाब वग़ैरह का इस्तेमाल।
४. मय्यित के साथ क़ब्रस्तान ग़ल्ला या पैसा वग़ैरह ले जाकर तक़सीम करना।
५. क़ब्र में मय्यित का मुँह खोलना ख़िलाफ़े सुन्नत है, और औ़रत का मुँह खोलना ह़राम है।

निकाह़ में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. सर पर सेहरा और मकना बांधना।
२. हाथों और पैरों में मेंहदी लगाना।
३. रस्म में औ़रतों को ढ़ोल बजा कर गाना।
४. मांझा बैठना या रस्म छुई करना।
५. गोला दाग़ना आतिशबाज़ी छोड़ना।
६. बाजा बजवाना या नाच कराना।
७. फ़ख़्र से महर का ज़्यादा होना और अदा करने की फ़िक्र न करना।
८. नाम व नमूद, फ़ख़्र व तकब्बुर की ग़र्ज़ से दावत करना।

पेशाब में ख़िलाफ़े सुन्नत

१. क़िब्ले का ध्यान न रखना।
२. नीचे बैठ कर ऊपर की तरफ़ पेशाब करना।
३. छीटों से एह़तियात न करना।
४. रास्ते में पेशाब करना।
५. खड़े होकर पेशाब करना।
६. नंगे सर या नंगे होकर पेशाब करना।
७. बिलों या सूराख़ों में पेशाब करना।
८. कमरबन्द खोले बग़ैर पायजामें से पेशाब करना।
६. ऐसे दरख़्त या ऐसी जगह जिस से लोग फ़ायदा उठाते हों पेशाब करना।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ

ऐ लोगों जो ईमान लाए हो, इताअ़त करो अल्लाह की और इताअ़त करो रसूल की और उन लोगों की जो तुम में से साहि़बे अम्र हों।

भाग-पाँच

दुअ़ाओं के आदाब और मख़्सूस दुअ़ाएँ

दुआ के आदाब

(१) इख़्लास व तवज्जोह के साथ दुआ करना। (२) खाने, पीने, पहनने में ह़राम से बचना। (३) बावुज़ू दुआ करना। (४) दुआ मांगने से पहले और बाद में अल्लाह तआ़ला की ह़म्द व सना बयान करना। (५) दुरुदशरीफ़ पढ़ना (६) आजिज़ी व इन्किसारी अख़्तियार करना। (७) गिड़गिड़ा कर माँगना। (८) रग़बत व शौक़ के साथ माँगना। (९) क़िब्ला की तरफ़ रुख़ करना। (१०) अल्लाह तआ़ला के नामों और सिफ़तों के साथ माँगना। **(इब्ने ह़ब्बान, मुस्तदरक)**

दुआ की क़ुबूलियत के अवक़ात

१. रमज़ानुल मुबारक का पूरा महीना।
२. अ़रफ़ा (ज़िल ह़िज्ज की नवीं तारीख़) का पूरा दिन।
३. जुमअ़ की रात (यानी जुमेरात और जुमा की दर्मियानी रात।)
४. जुमअ़ का पूरा दिन, ख़ूसूसन अ़स्र के बाद गुरुब तक।
५. सह़र के वक़्त।
६. शबे क़द्र में।
७. नमाज़ पंचगाना के बाद।

जिन लोगों की दुआएँ जल्द क़ुबूल होती हैं

१. मजबूर व लाचार की। **(बुख़ारी मुस्लिम)**
२. बाप की दुआ अपनी औलाद के लिए। **(अबूदाऊद)**
३. मुसाफ़िर की दुआ। **(अबूदाऊद)**
४. माँ-बाप की ख़िदमत करने वाली औलाद की दुआ। **(मुस्लिम)**
५. एक मुसलमान की दुआ दूसरे मुसलमान के लिए। **(अबूदाऊद)**
६. मज़लूम की दुआ। **(सह़ाह सित्ता)**

रात के वक़्त पढ़ने की दुआएँ

(१) सोते वक़्त "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ" "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ" "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ" तीन-तीन मर्तबा पढ़ कर हाथ पर दम करके पूरे जिस्म पर फेरे। **(बुख़ारी मुस्लिम)**

नोट-

हु़ज़ूर-ए-अकरम (सल्ल०) ने फ़रमाया जो शख़्स तीन-तीन मर्तबा सोते वक़्त पढ़ ले तो उस के गुनाह ख़्वाह समन्दर के बराबर हों, या दरख़्तों के पत्ते के बराबर हो या रेगिस्तान के रेत के बराबर हो, या दुनिया में दिनों की तादाद के बराबर हों अल्लाह तआ़ला माफ़ कर देता है। **(तिर्मिज़ी)**

सोकर उठने की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا	तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने
بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ	हम को ज़िन्दा किया मौत देने के बाद और
النُّشُوْر	उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।

बैतुलख़ला में दाख़िल होने से पहले और बाद की दुआ

जब बैतुलख़ला में जाएँ तो दाख़िल होने से पहले (और अगर मैदान में हैं तो बैठने से पहले) "**بِسْمِ اللّٰهِ**" कहे और उस के बाद यह दुआ पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ	ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ ख़बीस
الْخُبُثِ وَالْخَبَآئِثِ	जिन्नों से मर्द हो या औ़रत

(इब्ने अबी शैबा, व तिर्मिज़ी)

जब फ़ारिग़ होकर निकलें तो पढ़ें

غفرانک

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से मग़्फ़िरत का तलबगार हूँ। **(इब्ने, ह़ब्बान, तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)**

उस के बाद यह दुआ़ पढ़ें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

तमाम तअ़रीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने मेरी तकलीफ़ दूर की और मुझे आ़फ़ियत बख़्शी। **(रवाहुल निसाई)**

घर में दाख़िल होने और निकलने की दुआ़

जब घर में दाख़िल हों तो दुआ़ पढ़ें, और सलाम करें, ख़्वाह घर में कोई हो या न हो) ह़ज़रत साअ़दी (रज़ि०) से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से मोह़ताजी और तंगी की शिकायत की, आप (सल्ल०) ने उस से फ़रमाया कि जब तू घर में दाख़िल हो तो सलाम करो ख़्वाह उस में कोई शख़्स हो या न हो, फिर सलाम भेजो और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ एक बार पढ़ो, उस शख़्स ने ऐसा ही किया, अल्लाह तआ़ला ने (इस अ़मल की बरकत से) इस कसरत से उस को रिज़्क़ दिया कि उस ने दूसरों को नफ़ा पहुँचाया। **(नज़ुलुल अबरार)**

घर में दाख़िल होने की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ خَیْرَ الْمَوْلَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَ بِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَی اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَکَّلْنَا

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से घर के अन्दर आने और बाहर जाने की ख़ैर व बरकत का सवाल करता हूँ, हम अल्लाह के नाम के साथ ही घर से जाते हैं और अपने परवरदिगार अल्लाह पर ही हमारा भरोसा है। **(अबूदाऊद)**

घर से निकलें तो यह दुआ़ पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰهِ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

मैं अल्लाह का नाम लेकर निकला, मैंने अल्लाह तआ़ला पर भरोसा किया, गुनाहों से बचना और नेकियों की क़ुव्वत देना अल्लाह ही की तरफ़ से है। **(तिर्मिज़ी)**

उस के बाद आसमान की तरफ़ सर उठाकर यह भी दुआ़ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ اَنْ أَضِلَّ اَوْ اُضَلَّ اَوْ أَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ اَوْخَیْرَالْمَخْرَجِ أَجْهَلَ أَوْ أَجْهَلَ عَلَیَّ

ऐ अल्लाह! मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूँ कि गुमराह हो जाऊँ या गुमराह कर दिया जाऊँ, या ज़ुल्म कर दूँ या मुझ पर ज़ुल्म किया जाए, या जिहालत करुँ या मुझ पर जिहालत की जाए। **(अबूदाऊद)**

खाना खाने बैठें तो यह दुआ़ पढ़ें

जब खाने के लिए बैठें तो हाथ धोकर बैठें, उस के बाद यह दुआ़ पढ़ें-

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰی بَرَکَةِ اللّٰهِ۔

मैंने अल्लाह के नाम और अल्लाह की बरकत पर खाना शुरु किया। **(मुस्तदरक)**

अगर शुरु में दुआ़ भूल गया हो तो यह पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ

मैंने उस के अव्वल व आख़िर में अल्लाह का नाम लिया। **(मिश्कात)**

जब खाना खा चुकें तो यह दुआ़ पढ़ें

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ

तमाम तअ़रीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम को खिलाया और पिलाया और हमको मुसलमानों में से बनाया। (तिर्मिज़ी)

जब दस्तरख़्वान उठाया जाने लगे तो यह दुआ़ पढ़ें

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ حَمدًا کَثِیْرًا طَیِّبًا مُبَارَکًا فِیْہِ غَیْرَ مُکْفِّی وَلَا مُوَدَّعٍ وَلَا مُسْتَغْنیً عَنْہُ رَبَّنَا۔

सब तअ़रीफ़ अल्लाह के लिए है ऐसी तअ़रीफ़ जो बहुत हो और पाकीज़ा हो और बरकत, ऐ हमारे रब हम इस खाने को काफ़ी समझ कर या बिल्कुल रुख़्सत करके या उस से बेनियाज़ होकर नहीं उठा रहे हैं। (बुख़ारी)

दूसरे के यहाँ खाना खाए तो यह दुआ़ पढ़े

اَللّٰھُمَّ اَطْعِمْ مَّنْ اَطْعَمَنِیْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِیْ

ऐ अल्लाह जिस ने मुझे खिलाया तू उसे खिला, और जिस ने मुझे पिलाया तू उसे पिला। (मुस्लिम)

जब मेज़बान से रुख़्सत होने लगे तो यह दुआ़ पढ़ें

اَللّٰھُمَّ بَارِکْ لَھُمْ فِیْمَا رَزَقْتَھُمْ وَاغْفِرْ لَھُمْ وَارْحَمْھُمْ

ऐ अल्लाह! उन के रिज़्क़ में बरकत दे और उन को बख़्शा दे, और उन पर रहम फ़रमा। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबूदाऊद)

पानी पीते वक़्त यह दुआ़ पढ़ें

जब पानी पीने का इरादा हो तो ऊँट की तरह़ एक ही सांस में न पिये, बल्कि तीन सांस बर्तन से बाहर ले, फूंक फूंक कर पियें, यानी बर्तन में फूंक न मारे और जब पीने लगे तों "बिस्मिल्लाह" पढ़ें, और जब पी चुके तो "अ़ल्ह़म्दु लिल्लाह" कहें। (मिश्कात)

ज़मज़म पीने के आदाब

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا وَّشِفَآءً مِّنْ کُلِّ دَاءٍ

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से नफ़ा पहुँचाने वाले इल्म, और फ़राख़ रोज़ी, और हर बीमारी से शिफ़ा का सवाल करता हूँ।

इफ़्तार के वक़्त की दुआ़

जब रोज़ा इफ़्तार करने लगें तो यह दुआ़ पढ़ें-

اَللّٰھُمَّ لَکَ صُمْتُ وَعَلٰی رِزْقِکَ اَفْطَرْتُ

ऐ अल्लाह! मैंने तेरे लिए रोज़ः रखा और तेरी दी हुई रोज़ी से इफ़्तार किया। (अबूदाऊद)

उस के बाद यह दुआ़ पढ़ें

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ أَسْأَلُکَ بِرَحْمَتِکَ الَّتِیْ وَسِعَتْ کُلَّ شَیْئٍ اَنْ تَغْفِرَلِیْ ذُنُوبِیْ۔ (ابن ماجہ والی حاکم فی المستدرک)

ऐ अल्लाह! मैं तेरी उस रहमत के वास्ते से सवाल करता हूँ जो हर चीज़ को घेरे हुए है कि तू मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा दे। (इब्ने माजा, मुस्तदरक)

इफ़्तार के बाद यह दुआ पढ़ें

ذَهَبَ الظَّمَاُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوْقُ
وَثَبَتَ الْاَجْرُ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ تَعَالٰى

प्यास चली गई और रगें तर हो गईं और इन्शाअल्लाह सवाब साबित हो गया। (अबूदाऊद, मुस्तदरक)

जब किसी के यहाँ इफ़्तार करें तो यह दुआ पढ़ें

اَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّآئِمُوْنَ
وَاَكَلَ طَعَامَكُمُ الْاَبْرَارُ
وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ

तुम्हारे पास रोज़ेदार इफ़्तार करें, और नेक बन्दे तुम्हारा खाना खाएँ और फ़रिश्ते तुम पर रह़मत भेजें। (इब्ने माजा)

जब सफ़र पर निकलें तो यह दुआ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ بِكَ أَصُوْلُ
وَبِكَ اَحُوْلُ
وَبِكَ اَسِيْرُ

ऐ अल्लाह! मैं तेरी मदद से (दुश्मनों पर) ह़मला करता हूँ और तेरी ही मदद से उन के दिफ़ा करने की तद्बीर करता और तेरी ही मदद से चलता हूँ। (अह़मद)

जब सवार होने लगें और रिकाब या पायदान पर क़दम रखें तो "बिस्मिल्लाह" कहें, और जब जानवर की पुश्त या सीट पर बैठ जाएँ तो "अल्ह़म्दु लिल्लाह" कहें।" फिर जब सवारी चलने लगे तो यह दुआ पढ़ें-

سُبْحَانَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا
هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِيْنَ
وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

अल्लाह पाक जिस ने उस को हमारे क़ब्ज़े में दे दिया और हम उस की क़ुदरत के बग़ैर उसे क़ब्ज़ा में करने वाले न थे और बिलाशुबहा हम को अपने रब की तरफ़ जाना है। (सूरः ज़ुख़रुफ़, पारा २५)

फिर उस के बाद यह दुआ माँगे

سُبْحَانَكَ اِنِّىْ ظَلَمْتُ
نَفْسِىْ فَاغْفِرْلِىْ فَاِنَّهٗ لَا
يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

ऐ ख़ुदा! तू पाक है बेशक मैंने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया तू मुझे बख़्श दे, क्योंकि सिर्फ़ तू ही गुनाह बख़्शता है। (अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

उस के बाद यह दुआ मांगे

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ فِىْ
سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰى
وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰى،
اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا
هٰذَا وَاطْوِعَنَّا بُعْدَهٗ، اَللّٰهُمَّ
اَنْتَ الصَّاحِبُ فِى السَّفَرِ
وَالْخَلِيْفَةُ فِى الْأَهْلِ، اَللّٰهُمَّ
اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَاءِ
السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ
وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِى الْمَالِ
وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ

ऐ अल्लाह! हम तुझ से अपने सफ़र में नेकी की और परहेज़गारी की और जो अ़मल तुझे पसंद हों उस की दरख़्वास्त करते हैं, ऐ अल्लाह! तू हमारा सफ़र आसान कर दे, और उस की मुसाफ़त को तय कर दे, ऐ अल्लाह! तू ही सफ़र में हमारा रफ़ीक़ और घर बाहर में (हमारा) क़ायम मक़ाम है,(तू हमारे घर बार की हिफ़ाज़त फ़रमा) ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सफ़र की सख़्तियों से और तकलीफ़देह मन्ज़र से, और बीवी बच्चों और माल व औलाद में तकलीफ़देह वापसी से पनाह मांगता हूँ। (मुस्लिम, अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

सफ़र से वापस होकर जब अपनी बस्ती में पहुँचे तो यह दुआ पढ़ें

آئِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِنَا حَامِدُوْنَ

हम लौटने वाले हैं, तौबः करने वाले हैं, अल्लाह की बन्दगी करने वाले, अपने रब की ह़म्द करने वाले हैं। **(मुस्लिम)**

फिर जब घर में दाख़िल हों तो यह दुआ पढ़ें

اَوْبًا اَوْبًا لِرَبِّنَا تَوْبًا لَا يُغَادِرُ عَلَيْنَا حَوْبًا۔ (بزار، ابویعلی)

मैं वापस आता हूँ, मैं वापस आता हूँ, अपने रब के सामने ऐसी तौबा करता हूँ जो हम पर कोई गुनाह न छोड़े। **(बज़्ज़ार, अबूयअ़ला)**

दरयाई या बह़री सफ़र पर रवाना हो तो यह दुआ पढ़ें

(١) بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرِيُهَا وَمُرْسَاهَا اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔ (ھود)
(٢) وَمَا قَدَرُوْا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعاً قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمٰواتُ مَطْوِيّاتٌ بِيَمِيْنِهٖ، سُبْحَانَ اللّٰهِ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْن

(१) अल्लाह के नाम से ही उस का लंगर उठाना है (और उस के नाम से) उस का लंगर डालना है। (२) और (उन काफ़िरों, मुशिरकों ने) अल्लाह की क़द्र करने का जैसा ह़क़ था वैसी क़द्र नहीं की ह़ालांकि क़ियामत के दिन सारी ज़मीन उस की मुट्ठी में होगी, और तमाम आसमान उस के दायें हाथ में लिपटे हुए होंगे (ह़क़ीक़त में अल्लाह पाक व साफ़ और बुलन्द व बरतर है उन मुशिरकों के शिर्क है। **(तबरानी, अबूयअ़ला)**

किसी को रुख़सत करते वक़्त यह दुआ पढ़े

जब कोई सफ़र पर जा रहा हो तो रुख़्सत करने वाला "मुक़ीम" इस से मुसाफ़ा करे और यह दुआ दे।

اَسْتَودِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَأَمَانَتَكَ وَخَواتِيْمَ عَمَلِك

मैं अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ तुम्हारे दीन को, अमानत और और तुम्हारे अ़मल को ख़ातिमों (सफ़र) के अन्जाम को (वही सब का मुह़ाफ़िज़ है।) **(निसाई, अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)**

रुख़सत होने वाला मुसाफ़िर यह दुआ दे

اَسْتَوْدِعُكَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَا تَخِيْبُ وَدَائِعُهُ

मैं भी तुम्हें अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ जिस के सुपुर्द की हुई अमानतें नामुराद नहीं होतीं। **(तबरानी)**

मरीज़ की अ़यादत के वक़्त की दुआ

لَا بَاسَ عَلَيْكَ طَهُوْرٌ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ

तुझ पर कोई ह़र्ज नहीं है (यह बीमारी गुनाहों से) पाक करने वाली है, अगर अल्लाह ने चाहा। **(रवाहुल बुख़ारी, व नसई)**

शिफ़ा-ए-मरीज़ की दुआ

أذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاءُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا

बीमारी को दूर कर ऐ तमाम लोगों के परवरदिगार, और शिफ़ा दे तू ही शिफ़ा देने वाला है, शिफ़ा नहीं है मगर तेरी शिफ़ा, ऐसी शिफ़ा दे जो किसी बीमारी को बाक़ी न छोड़े। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

जाँकनी के वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّىْ عَلٰى غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَسَكَرَاتِ الْمَوْتِ

ऐ अल्लाह मौत की सख़्तियों के इस मौक़े में मेरी मदद फ़रमा।

रुह़ निकलने के बाद की दुआ

रुह़ निकलने के बाद मय्यित की आँखें बन्द करते हुए यह दुआ़ पढ़ें, और "लिफ़ुलान" की जगह मय्यित का नाम लें।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِفُلَانٍ وَارْفَعْ دَرَجَتَهٗ فِى الْمَهْدِيِّيْنَ وَاخْلُفْهُ فِىْ عَقِبِهٖ فِى الْغَابِرِيْنَ وَاغْفِرْ لَنَا وَلَهٗ يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ

ऐ अल्लाह! इस को बख़्श दे और हिदायत याफ़्ता बन्दों में शामिल फ़रमा कर इस का दर्जा बुलन्द फ़रमा, और इस के पसमान्दगान में तू इस का जानशीन हो जा, और रब्बुल आ़लमीन हमें और इसे बख़्श दे और इस की क़ब्र को कुशादह और मुनव्वर फ़रमा।

(मिश्कात, मुस्लिम)

मय्यित को क़ब्र में रखने की दुआ़

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ

अल्लाह के नाम से और अल्लाह की मदद के साथ, और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के मज़हब पर (क़ब्र में) रखता हूँ।

क़ुर्बानी की दुआ़

क़ुर्बानी के जानवर को क़िब्ला रुख़ लिटा कर यह दुआ़ पढ़ें-

"اِنِّىْ وَجَّهْتُ وَجْهِىَ لِلَّذِىْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَا

اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ۔ اِنَّ صَلٰوتِىْ وَنُسُكِىْ وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِىْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ

ज़ब्ह़ करने के बाद यह दुआ़ पढ़े-

"اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّىْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ وَّخَلِيْلِكَ اِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ".

अगर दूसरे की क़ुर्बानी ज़ब्ह़ करना हो तो मिन्नी की जगह مِنْ فُلَانٍ यानी उस का नाम ले और अपनी क़ुर्बानी में दूसरे लोग शरीक हो तो "مِنِّىْ وَمِنْ فُلَانٍ" कहे।

अक़ीक़ा की दुआ़

जानवर ज़ब्ह़ करने से पहले **انى وجهت وجهى للذى** आख़िर तक क़ुर्बानी वाली दुआ़ पढ़ कर, और ज़ब्ह़ करने के बाद या दुआ़ पढ़े-

"اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ ابْنِىْ تَقَبَّلْهُ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ وَّخَلِيْلِكَ اِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ دَمُهَا بِدَمِهٖ لَحْمُهَا بِلَحْمِهٖ، شَعْرُهَا بِشَعْرِهٖ، عَظْمُهَا بِعَظْمِهٖ۔

नोट- अगर बच्चा हो तो बिदमिही अगर बच्ची हो तो बिदमिही की जगह बिदमिहा कहेंगे, और "इब्ने" की जगह "बिन्त" कहेंगे, अगर ज़ब्ह़ करने वाला बाप के अ़लावा कोई दूसरा हो तो लड़के या लड़की के बाप का भी नाम ले।

क़ुनूते नाज़िला

किसी आ़म मुसीबत मस्लन क़ह़त, वबा और दुश्मनों के ह़मले वग़ैरह का अन्देशा हो या आ़म ख़ौफ़ व हिरास का आ़लम हो तो ऐसे वक़्त में यह दुआ़ (क़ुनूते

नाज़िला) फ़ज्र की नमाज़ की आख़िरी रकअ़त में दूसरे रुकूअ़ के बाद पढ़ी जाएगी, अगर इमाम पढ़े तो मुक़्तदी इमाम के ठहरने के वक़्त आहिस्ता से आमीन कहे।

اَللّٰھُمَّ اھْدِنِیْ فِیْ مَنْ
ھَدَیْتَ وَعَافِنِیْ فِیْ مَنْ
عَافَیْتَ وَتَوَلَّنِیْ فِیْ مَنْ
تَوَلَّیْتَ وَبَارِکْ لِیْ فِیْ
مَا اَعْطَیْتَ وَقِنِیْ شَرَّ مَا
قَضَیْتَ فَاِنَّکَ تَقْضِیْ وَلَا
یُقْضٰی عَلَیْکَ اِنَّہٗ لَا یَذِلُّ
مَنْ وَّالَیْتَ وَلَا یَعِزُّ مَنْ
عَادَیْتَ تَبَارَکْتَ رَبَّنَا
وَتَعَالَیْتَ نَسْتَغْفِرُکَ
وَنَتُوْبُ اِلَیْکَ وَصَلَّی اللّٰہُ
عَلَی النَّبِیِّ اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لَنَا
وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ
وَاَلِّفْ بَیْنَ قُلُوْبِھِمْ وَاَصْلِحْ
ذَاتَ بَیْنِھِمْ وَانْصُرْھُمْ عَلٰی
عَدُوِّکَ وَعَدُوِّھِمْ۔ اَللّٰھُمَّ
الْعَنِ الْکَفَرَۃَ الَّذِیْنَ
یَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِکَ
وَیُکَذِّبُوْنَ رُسُلَکَ
وَیُقَاتِلُوْنَ اَوْلِیَائَکَ۔ اَللّٰھُمَّ
خَالِفْ بَیْنَ کَلِمَتِھِمْ وَزَلْزِلْ
اَقْدَامَھُمْ وَاَنْزِلْ بِھِمْ
بَاْسَکَ الَّذِیْ لَا تَرُدُّہٗ عَنِ

ऐ अल्लाह! तू हमें राह दिखा उन लोगों की जिन को तूने राह दिखाई, और हमें आ़फ़ियत दे उन लोगों की तरह जिन को तूने आ़फ़ियत बख़्शी, और दोस्त रख हम को उन लोगों में जिन को तूने दोस्त रखा, और हमें अ़ता कर वह अपनी नेअ़मत बरकत अ़ता फ़रमा, और इस शर से हमें बचा जिस का तूने फ़ैसला कर लिया है बेशक तू हुक्म देता है और तुझ को हुक्म नहीं दिया जाता है और बेशक तू जिस को दोस्त रखे वह रुस्वा नहीं होता और नहीं इ़ज़्ज़त पाता है जिस से तू दुश्मनी रखे, ऐ हमारे परवरदिगार! तू बरकत वाला है, तू बुलन्द मर्तबा है, हम तुझ से इस्तिगफ़ार करते हैं और तुझ से तौबः करते हैं , और अल्लाह की रह़मत हो अल्लाह तआ़ला के नबी करीम (सल्ल०) पर।

(तिर्मिज़ी व नसई)

ऐ अल्लाह! हम को और तमाम मोमिन मर्द, औ़रतों की मग्फ़िरत फ़रमा, और उन के दिलों में एक दूसरे की मुह़ब्बत दे और इस्लाह़ कर उन के दर्मियान और उन की मदद कर, उन के और अपने दुश्मन पर, लानत भेज काफ़िरों पर

الْقَوْمِ الْمُجْرِمِیْنَ وَاجْعَلْ
عَلَیْھِمْ رِجْزَکَ وَعَذَابَکَ
اِلٰہَ الْحَقِّ آمِیْنَ۔ اَللّٰھُمَّ
مُنْزِلَ الْکِتَابَ وَمُجْرِیَ
السَّحَابِ وَھَازِمَ الْاَحْزَابِ
اِھْزِمْھُمْ الْاَحْزَابِ اِھْزِمْھُمْ
وَانْصُرْنَا عَلَیْھِمْ اَللّٰھُمَّ اِنَّا
نَجْعَلُکَ فِیْ نُحُوْرِھِمْ
وَنَعُوْذُبِکَ مِنْ شُرُوْرِھِمْ۔

जो तेरे रास्ते से रोकते हैं, और तेरे नबियों को झुठलाते हैं और तेरे दोस्तों से लड़ते हैं, ऐ अल्लाह उन की बातों में इख़्तिलाफ़ पैदा कर दे, और उन की क़दमों को डगमगा दे, और उन की जमीअ़त को पारह-पारह कर दे, और उन के इलाक़े को नेस्तानाबूद कर दे और नाज़िल फ़रमा उन पर ऐसा अ़ज़ाब जो न पलटे नाफ़रमान क़ौम से और अल्लाह की रह़मत हो मख़्लूक़ में सब से बेहतर मुह़म्मद (सल्ल०) पर, और आप की आल पर, और तमाम सह़ाबा-ए-किराम पर।

दुआ़-ए- इस्तिख़ारा

अगर किसी बात में तरद्दुद हो, या ख़ैर की तलब हो तो दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ कर यह दुआ़ पढ़े, और **"ان ھذا الامر"** की जगह अपनी ज़रुरत का नाम ले।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُکَ
بِعِلْمِکَ وَاَسْتَقْدِرُکَ
بِقُدْرَتِکَ وَاَسْئَلُکَ مِنْ
فَضْلِکَ الْعَظِیْمِ۔ فَاِنَّکَ
تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا
اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ۔
اَللّٰھُمَّ اِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ
ھٰذَا الْاَمْرَ خَیْرٌ لِّیْ فِیْ
دِیْنِیْ وَمَعِیْشَتِیْ وَعَاقِبَۃِ

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से तेरे इ़ल्म के ज़रिये ख़ैर चाहता हूँ, और तेरी क़ुदरत के ज़रिए से क़ुदरत, और तुझ से सवाल करता हूँ तेरी बड़ी मेहरबानी से इसलिए कि तू क़ुदरत रखता है और मुझे क़ुदरत नहीं, और तू जानता है मैं नहीं जानता, ऐ अल्लाह अगर तू जानता है कि यह काम (काम का नाम लेकर) मेरे ह़क़ में मेरे

اَمْـرِیْ (اَوْ) عَـاجِـلِ اَمْرِیْ
وَآجِلِهٖ فَاَقْدِرْہُ لِیْ وَیَسِّـرْہُ
لِــیْ ثُمَّ بَارِکْ لِیْ فِیْہِ وَاِنْ
کُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَاالْاَمْرَ
شَرٌّ لِیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعِیْشَتِیْ
وَعَـاقِبَةِ اَمْرِیْ (اَوْ) عَاجِلِ
اَمْـرِیْ وَآجِلِــهٖ نَاصْرِفْـهُ
عَـنِّـیْ وَاصْـرِفْنِـیْ عَـنْـهُ
وَاقْـدِرْلِــیَ الْخَیْـرَ حَیْـثُ
کَانَ ثُمَّ اَرْضِنِیْ بِهٖ۔

दीन व दुनिया और मेरे अन्जाम (या) देर सवेर के लिहाज़ से बेहतर है तू उस को मेरे लिए मुक़द्दर फ़रमा दे और मेरे लिए आसान कर दे फिर मुबारक फ़रमा, और अगर तू जानता है कि यह काम मेरे लिए दीन व दुनिया का अन्जाम (या) देर सवेर के लिए अच्छा नहीं तो तू उस को मुझ से फेर दे और मुझे उस से बाज़ रख, मेरे लिए बेहतरी मुक़द्दर जहाँ हो, फिर मुझे उस पर राज़ी कर दे।

मु० सरवर फ़ारुक़ी नदवी
दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ
(२२ मुर्हरम १७१४ हि०)

Writer at a glance

Mufti Muhammad Sarwar Farooqui Nadwi (*Aacharya*)

Name	:	**Muhammad Sarwar**
Father's name	:	**Mohd Haneef**

Educational Background.

Basic	:	**Intermediate,** (Allahabad)
Higher Education	:	**M.A.** (Lucknow)
Arabic	:	**Almiat, Fazeelat & Iftah,** (Darul-Uloom- Nadwatul Ulama Lucknow (U.P.) India.
Islamic Tadreebi Course	:	**Jamia Islamiya** **Madina Munawarah** (Saudi Arabia)
Urdu	:	**Adeeb Kamil & Mua'llim**
Sanskrit	:	**Aacharya** (Banaras).
Computer skill	:	**P.G.D.C.A**
Major Research	:	**Qur'an and Fiqah,** Darul-Uloom Nadwatul-Ulama, Lucknow, U.P. (India)

Present Posts

President	:	***Jamiat Payam-e-Amn,*** (Educational Society) lucknow, U.P. (India)
Manager	:	**Maulana Ali Miyan Memorial Manav Sewa Samiti,** Lucknow, U.P. (India)
Director	:	***Markaz Ul-Tawheed Al-Islami*** lucknow, U.P. (India)
Managing Director	:	**Jamia Dar-e-Arqam** Fatehpur, Haswa, U.P. (India)
Manager	:	**Jamia Dar-e-Arqam** (Educational Society) Allahabad (India)
Chairman	:	**Arqum Model School** Lucknow, U.P. (India)
Director	:	***Quran, Amn Research Academy,*** Lucknow, U.P. (India)
General Secretary	:	***All India, Jamiat Darul-Aml,*** lucknow, U.P. (India)

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब द्वारा लिखित हिन्दी पुस्तकें

नाम	मूल्य
1. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	300 रू.
2. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	110 रू.
3. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	80 रू.
4. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)	160 रू.
5. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-1} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 1 से 5 तक)	400 रू.
6. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-2} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 5 से 10 तक)	400 रू.
7. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-3} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 10 से 18 तक)	400 रू
8. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-4} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 19 से 25 तक)	400 रू.
9. तफ़्सीर फ़ारूक़ी {भाग-5} (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० 26 से 30 तक)	400 रू.
तफ़्सीर फ़ारूक़ी (मुकम्मल सेट) (भाग 1 से 5 तक)	2000 रू
10. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले हक़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में	200 रू.
11. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम	120 रू.
12. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन	80 रू.
13. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Hard bound)	90 रू.
14. अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन (Paper back)	80 रू.
15. जन्नत के हालात और जन्नती (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	80 रू.
16. कुफ़्र और शिर्क की हक़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	80 रू.
17. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	80 रू.
18. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी	200 रू.
19. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार (क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)	80 रू.
20. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें	110 रू.
21. सहाबा का इस्लाम और उसके बाद	60 रू.
22. इस्लामी शासन और शासक ऐतिहासिक दृष्टि से	60 रू.
23. अज़ान क्या है?	30 रू.
24. आओ नमाज़ की ओर	48 रू.
25. रोज़ः का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.

नाम	मूल्य
26. हज और उमरा का आसान तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	30 रू.
27. ज़कात का हुक्म और उसके मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
28. आपके सवालों का आसान हल (भाग एक)	60 रू.
29. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
30. इस्लाम की बुनियादी मालूमात (सवाल व जवाब की रोशनी में)	60 रू.
31. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (सवाल व जवाब की रोशनी में)	40 रू.
32. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पाकीज़ह ज़िन्दगी	40 रू.
33. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
34. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन	160 रू.
35. सूर-ए- फ़ातिहा की तफ़्सीर	30 रू.
36. तौहीद की हक़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	40 रू.
37. पवित्र क़ुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम	30 रू.
38. इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से	60 रू.
39. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)	60 रू.
40. मीरास की तक़्सीम	30 रू.
41. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अअ़माले हस्ना की रौशनी में)	60 रू.
42. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही	40 रू.
43. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल (शरीअ़त की रोशनी में)	30 रू.
44. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में	20 रू.
45. सृष्टि का सृष्टा कौन?	30 रू.
46. प्राकृतिक नियम, ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास	40 रू.
47. इस्लामी विरासत एक नज़र में	20 रू.
48. इस्लाम?	10 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब द्वारा लिखित उर्दू पुस्तकें

49. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	140 रू.
50. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब	50 रू.
51. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी	40 रू.
52. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात	40 रू.

नाम	मूल्य
53. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा	40 रू.
54. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद	40 रू.
55. आ़माल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत	40 रू.
56. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम	40 रू.
57. उम्मते मुह़म्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार और बनी इस्राईल	40 रू.
58. कायनात के अ़जायबात और इन्सान का अल्लाह से तअ़ल्लुक़	40 रू.
59. ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाजुर में)	50 रू.
60. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर	50 रू.
61. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के ह़ुक़ूक़	50 रू.
62. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआरूफ़	90 रू.
63. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में।	40 रू.
64. बौद्ध धर्म और इस्लाम	40 रू.
65. कलिमा-ए-तय्यबः की ह़क़ीक़त और उस के तक़ाज़े	80 रू.
66. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में	80 रू.
67. अल्लाह तआ़ला का तआ़र्रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल	70 रू.
68. क़ियामत तक के फ़ित्ने (रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पेशीनगोई की रोशनी में)	70 रू.
69. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
70. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत	50 रू.
71. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल	70 रू.
72. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
73. रसलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (मुस्तनद क़ुतुबे सीरत की रोश्नी में)	40 रू.
74. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती (सवाल व जवाब की रोशनी में)	30 रू.
75. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	80 रू.
76. जन्नत के ह़ालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र	80 रू.
77. कुफ़्र व शिर्क की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	80 रू.
78. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सहा़बा से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा	80 रू.

नाम	मूल्य
79. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाने की मुमानिअ़त	60 रू.
80. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
81. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा	40 रू.
82. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल	40 रू.
83. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
84. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
85. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह़क़ीक़त	40 रू.
86. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)	50 रू.
87. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़	30 रू.
88. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआ़त और चन्द तफ़ासीर का तआ़र्रुफ़	30 रू.
89. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	120 रू.
90. इस्लामी मआ़शियात का तक़ाबुली जायज़ा	40 रू.
91. इस्लाम का ज़रई निज़ाम	40 रू.
92. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत	40 रू.
93. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद	80 रू.
94. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम	50 रू.
95. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)	60 रू.
96. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें	30 रू.
97. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात	30 रू.
98. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी	60 रू.
99. मुस्तनद मस्नून दुआ़एँ	20 रू.
100. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर	50 रू.
101. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा	30 रू.
102. अअ़माले ह़स्ना (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	100 रू.
103. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
104. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
105. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
106. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	90 रू.

नाम	मूल्य
107. ख़ातिमुन्नबीईन (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	90 रू.
108. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
109. नबियों की जीवनी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	100 रू.
110. ईमानियात, अक़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
111. इल्म से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
112. तहारत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
113. ह़िफ़ाज़ते क़ुर्आन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
114. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
115. ओ़ीदैन व जुमअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
116. तरावीह़ व एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
117. सफ़र और सद्क़-ए-फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
118. क़ुर्बानी से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
119. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
120. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
121. ह़िबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
122. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
123. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
124. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक मसायल(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
125. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
126. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
127. तर्बियत, रज़ाअ़त व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
128. ज़कात से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
129. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
130. इमामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
131. क़िरत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
132. सज्द-ए-तिलावत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
133. इस्लामी पर्दा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
134. मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब की अ़रबी पुस्तकें

135. ग़ज़्व-ए-हुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविल् क़ुर्आन	120 रू.
136. अल्हिन्दूसिया मुबादिओहा व अक़ाइदोहा, मुनज़्ज़िमातुहा व अहदाफ़ुहा	140 रू.
137. ज़िक्र मुह़म्मदिन (सल्ल०) फ़िल् वेद	80 रू.
138. सिफ़ातु रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम	80 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब की अंग्रेज़ी पुस्तकें

139. मुह़म्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण	40 रू.
140. मुह़म्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप	30 रू.
141. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम	80 रू.
142. दी स्वाड आफ़ इस्लाम	40 रू.
143. अज़ान, ए कालिंग फ़ार हियूमेनिटी	40 रू.
144. इस्लाम?	10 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब द्वारा अनुवाद की हुई पुस्तकें

145. मुन्तख़ब अहादीस (लेखक- ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह०)	60 रू.
146. क़ादियानियत नुबूवते मुह़म्मदी के ख़िलाफ़ बग़ावत (लेखक- इमामे ह़रम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल)	40 रू.
147. अक़ीदतुल् वास्तिया (लेखक- अह़मद बिन अ़ब्दुल ह़लीम इब्ने तैमिया रह़०)	60 रू.
148. सलासिले अरबअ़ (लेखक-ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली नदवी रह़०)	30 रू.
149. दारे अरक़म का एह़सान इन्सानी दुनिया पर (लेखक- ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी रह़०)	30 रू.
150. मानवता आज भी उसी चौखट की मुहताज़ है (लेखक- मौलाना मुह़म्मद ह़सनी रह़०)	30 रू.
151. रमज़ान का तोह़फ़ा (लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)	20 रू.

नाम	मूल्य
152. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार (लेखक- मौलाना मुहम्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)	20 रू.
153. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन? (विचारक- मुहम्मद मुस्तफ़ा क़ादरी) (तस्ह़ीह़ व तर्तीब- मु० मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी)	30 रू.
154. यतीमों की किफ़ालत (लेखक-मुहम्मद आमिर सिद्दीक़ी नदवी)	40 रू.
155. सूद से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
156. किरायेदारी से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
157. कारोबार में शिरकत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
158. सुन्नत व नवाफ़िल से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
159. रोज़ः रुयते ह़िलाल से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
160. इल्म व उ़ल्मा से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
161. तक़्लीद व इज्तिहाद की शरई ह़ैसियत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
162. सज्द-ए-सह्व के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
163. बिद्अ़त की नहूसत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
164. ह़ैज़ व निफ़ास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
165. ग़ैर मुस्लिमों से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
166. दो सौ समाजी मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
167. इस्लाम के अ़दालती फ़ैसले (तारीख़ व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
168. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द शशुम)	500 रू.
169. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द हफ़्तुम)	500 रू.
170. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द ह़श्तुम)	500 रू.
171. तारीख़ुल् इस्लाम	500 रू.
172. क़ससुल् अम्बिया	500 रू.
173. मजमुअ़ा अह़ादीस (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	200 रू.
174. दुअ़ा के आदाब (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	20 रू.
175. इस्लाम के अ़दालती फ़ैसले (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
176. सीरत सह़ाबा	200 रू.
177. क़ुर्बानी से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	500 रू.
178. तहारत से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
179. इल्म से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
180. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल	50 रू.
181. ईदैन व जुमअ़ः से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
182. मदारिस से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	30 रू.

183. हिबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	30 रू.
184. सूद से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	30 रू.
185. सफ़र और सद्क़ः फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	30 रू.
186. तलाक़ व इ़द्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
187. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
188. निकाह़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
189. ज़कात से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
190. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
191. इमामत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
192. क़िराअत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
193. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक़ मसायल	50 रू.
194. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
195. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
196. तर्बियत, रज़ाअत व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल	40 रू.
197. अ़लामात क़ियामत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
198. सज्दः से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
199. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
200. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
201. इ़ल्म व उ़ल्मा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
202. तक़्लीद व इज्तिहादी की शरई ह़ैसियत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
203. सज्दः सहू से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
204. बिद्अ़त की नहूसत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
205. किरायेदारी से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
206. कारोबार में शिर्कत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
207. मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
208. सुन्नत व नवाफ़िल से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
209. इस्लाह़ मुआ़शरह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
210. औ़रतों के मख़्सूस मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
211. इन्सानी अअ़ज़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
212. मय्यत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
213. रमज़ान,रोज़ः और तरावीह़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल	60 रू.
214. एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	30 रू.
215. ज़मीन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
216. रवय्यतुल हिलाल से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	30 रू.